मुख़बिर

उपन्यास

राजनारायणबोहरे

शक़

मैंने इस बार शायद गलत जगह पांव रख दिया था। पांव तले से थोड़ी सी मिट्टी नीचे को रिसकी थी, जिससे हल्की सी आवाज हुई। मुझे लगा, मेरी गलती से

शोर पैदा हो रहा है। अभी हाल गालियां सुनने को मिलेंगी.....हो सकता है कि एकाध धप्पा

भी खा जाऊं । सो मैं डर गया । मेरी झिझकती निगाह रघुवंशी पर गई । वह शांत दिख

रहा था। मैं निश्चिंत हुआ, यानी कि हम सब सुरक्षित थे ।

पहाड़ पर चढ़ने का कोई अभ्यास नहीं था हम सबको , लेकिन चारों ओर मड़राते खतरे की वजह से हम सब लोग इस वक्त ऐसी सतर्कता के साथ पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, मानो अभ्यस्त पर्वतारोही हों । वैसे इसे पर्वतारोहण नहीं कहा जा सकता था, बस, पहाड़ी के ऊपर जाने वाले कच्चे रास्ते पर झाड़ियों की ओट लेकर किसी तरह धींमे-धीमे रूकते-ठिठकते से आगे वढ़ रहे थे हम सब । हमारे बीच चुप्पी व्याप्त थी । हम आपस में जो भी संदेश देते हाथों या आंखों से इशारा भर करके काम चलातेे । झाड़ियों में उलझने से बड़ेे जतनपूर्वक खुद को बचाते हम लोग घिसटते से आगे वढ़ रहे थे । ऊपर से थोड़ा बहुत वजन भी था सब पर । हालांकि हम दोनों के पास तो फिर भी अपने थैले के सिवाय कोई सामान न था, लेकिन पुलिस सिपाहियों के पास तो पीठ पर बंधे पिट्ठू और हाथ में लटकी रायफल को मिलाकर तीस-पैंतीस किलो से ज्यादा वजन रहा होगा । इतने वज़न की वजह से सचमुच एक-एक कदम चलना बड़ा कठिन था उन सबको । उसके भी ऊपर खतरा ये कि पता नहीं कब बागियों की नजर पड़ जाये और ऊपर से गाोलियां अर्रा उठें यकायक । हम दोनों का तो मुंह सूख रहा था बार-बार । कहां आ फंसे इस मौत के जंजाल में !

आखिरकार जैसे-तैसे करके पूरी तरह सुरक्षित रहते हुए पहाड़ी के ऊपर पहुंच ही गये सब लोग । एक बार फिर हम लोगों का कलेजा मुंह को आ गया यह सोचकर कि अगर वे लोग वहां मौजूद हुए तो क्या प्रतिक्रिया होगी उनकी ! निश्चित है कि गोलियां चलेंगी । मैं कल्पना करता हूँ कि गोली चलाने की शुरूआत कौन करेगा.... ! और इस गोलीबारी में हम दोनों का क्या हाल होगा.......... ?

लेकिन सारी आशंकायें निराधार रहीं मेरी । ऊपर कोई नहीं था । सूनी पड़ी थी पूरी की पूरी नंगी और वृक्षहीन पहाड़ी ।

एक छोटे से छत जितना चौड़ा खाली मैदान था हमारे सम्मुख ।

दूर से ही सामने पड़े एक पुराने से थैले में कोई सामान ठूंस-ठूंस कर भरा दिख रहा था, हमको लग रहा था कि कोई हड़बड़ी में वह झोला वहां छोड़ कर भाग निकला होगा।

रघुवंशी यकायक चीखा-'' धŸोरे की ! मार लिया मैदान ! खबर सच्ची थी , कल रात वे बदमाश बागी इसी जगह रूके थे। वो देखो कित्ते सारे निशान हैं-ये अधजली लकड़ियें, ये बीड़ी के ठूंठ और वे आम के अथाने की कलियें ! जरूर कल की रात इस जगह खाना पकाया -खाया है उन हरामियों ने ! डरपोक भाग गये यहां से !....तो भी अभी ज्यादा दूर नहीं भाग पाये होंगे साले । कम ऑन ! चलो सही दिशा में बढ़ रहे हैं हम !''

''ये देखो ,कोई चटनी-अटनी पीसी थी उनने, इस पत्थर पर हरी-हरी कोई वनस्पति सी चिपकी है ,मिस्टर सिन्हा लुक हियर।'' छोटे दरोगा शर्मा ने अपने बॉस के प्रति चापलूसी दर्षाते हुए उत्साह से अपनी खोज प्रदर्शित की ।

-'' या ेेेे ! हेतम जरा तुम देखो उस झोले को।'' एसएएफ के डिप्टी कमांण्डेंट सिन्हा ने दोनों दरोगाओं के अनुमान का समर्थन करते हुए हैड कानिस्टबल हेतमसिंह को थैले की पड़ताल करने का संकेत किया ।

-'' तनिक संभाल के देखिये लला, बागिन्न ने कोउ बम-फम न धद्दओ होय।'' यकायक बुजुर्ग सिपाही इमरतलाल ने थैले की तरफ बढ़ते हेतम को पीछे से टोका ।

हेतम चिहुंक कर पीछे हटा-'' मैं न देख रहो दरोगा जी ! इन सारों ते दिखाओ।''

-'' चल रे मोटा लाला, तू देख ! देख तो कहा रख गये हैं तुम्हारे बागी दोस्त !'' रघुवंशी ने मुझे हुकुम झाड़ा ।

'' निस्फिकर रहो दरोगा जी , इसमें बम-फम कछु नहीं है । उनपे बम कहां ते आये ?'' कहते हुए मैंने आगे बढ़ कर पुराने कपड़े के बने उस घिसे-से झोले की तनी को दांये हाथ से इत्मीनान से पकड़ कर झोला उठाया, बांये हाथ से नीचे से पकड़ा और उसे उल्टा करके अपने चेहरे के सामने ऊंचा टांग लिया।

.............और, सचमुच उस झोले में से बम-पिस्तौलें नहीं बल्कि ढेर-सारे फटे-पुराने कपड़े टपकने लगे । आखिरी में धप्प से एक जोड़ी जूते नीचे आ गिरे थे उसमें से । पुलिस दल के सारे लोग आंखें फैलाये उस सामान को ताक रहे थे, इस भाव से कि यह साला लाला कित्ती जानकारियां रखता है बागियों के बारे में!

-''धत्तेरे की ! इतनी परेड के बाद, ये फालतू सामान मिलना था, हिष्ट साले।'' कहता रघुवंशी झुंझला रहा था जबकि मैं और लल्ला उसकी बेबशी का मजा लेते आंखों ही आंखों में मुस्करा रहे थे ।

झोले में से निकला सामान पुलिस डॉग्स को सुंघाया गया, तो दोनों कुत्ते जंजीर खींचते हुए नीचे जाने को उतावले हो उठे ।

कुछ देर बाद दोनों पुलिस डॉग पहाड़ी से नीचे उतर रहे थे, और पीछे भाग रही थी हमारी पूरी टीम । खाकी वरदियों के बीच हम दोनों अन्यमनस्क से दौड़ रहे थे ।

दोपहर के दो बजने को थे लेकिन ऐसा नहीं लग रहा था कि पुलिस वाले जल्दी ही भोजन पानी का कोई इंतजाम करेंगे । मैं लल्ला के कान में फुसफुसाया-'' लल्ला पंडित, जे लोग सांचउ जालिम दीस रये हैं, दौ बजि गये और अब तक न खायवो , न पियबो , हम जों ई बेगार से इनके पीछे भूखे-प्यासे भाजते फिर रहे हैं।''

-'' हां गिरराज ! इनते तो वे बागिउ ठीक हते , खुदऊ खाइ लेत हते और हमाये काजे भी भुनसारे से ख्वाय देत हते । जे तो उनतेउ कर्रे दीसत हैं ।''

सहसा मेरे कांधे पर पुलिसिया बंेत का दबाब महसूस हुआ '' ये क्या खुसर-पुसर कर रहे हो तुम लोग ! वे जगह क्यों नही बता रहे, जहां डाकू छिपे रहते हैं ।'' रघुवंशी मुझे हड़का रहा था ।

-''वे ही जगह तो ढूढ़ रहे हैं दरोगाजी'' कहते हुए लल्ला पंडित ने दांत चियार दिये थे ।

-'' कहां ढूढ़ रहे हो ? बस हमारे पीछे-पीछे फिरते रहते हो !आगे बढ़के कभी नहीं बताते कि साहब इस रास्ते पर बागी मिल सकते है। कभी अपने दिल पर हाथ रख कर सोचना कि जिस काम के लिए तुम आये हो,जिनका नमक खा रहे हो, उनके लिए आज तक तुमने कितना काम किया ! '' हमे उलाहना देकर आगे बढ़ते रघुवंशी के चेहरे पर उलाहने के भाव थेेेे ।

पल-पल में मिजाज बदल लेने वाले इस दरोगा का स्वभाव मै आज तक नहीं जान पाया था । हर पल अकड़ता ही रहता था यह । इसकी ठसक देख कर सहसा मुझे चम्बल घाटी के सच्चे व्याख्याकार सीताकिषोर खरे के कुछ दोहे याद आ गये, और मैंने लल्ला के कान में मुंह लगा कर एक दोहा सुना दिया- ठसक कसक दो में बची, रची असीम अपार । कै बागी की प्रेमिका, कै फिर थानेदार ।

यकायक दरोगा फिर पलटा और उसने हमारी ओर अंगारों की तरह एक वाक्य उछाला- '' सच्ची बात यह है कि तुम लोग आज तक अपने आपको इस टीम का मैम्बर नहीं मान सके , हमेशा बेगानों की तरह दूर-दूर बने रहते हो ।''

मैं चौंका ! अचरज की बात है उस दिन श्यामबाबू बोला था -'' तुम साले सब के सब दूर-दूर काहे बने रहते हो । जब हम अपने बराबर को मानि के तुम्हे अपयें संग खवाय रहे , पिवाय रहे और पारि भी संगे रहे ; तोउ जे बेगानों से बने रहते हो !''

मेरा मन हुआ था कि कह डालूं -' बेगाने न रहेगे तो का तुमिमें मिलि जायेंगे । तुम कहि भले लो , पर हमे मिला न सकते अपने में । तुम खुद हमे बेगानों की तरह रखते हो, बेगाने ही नहीं जंजीर मंे बंधे जानवर की नांई ! ......बात-बात पर हमे घुड़क देते हो , हूदा मार देते हो और किसी-किसी की तो बात बेबात पिटाई का नियम सा बना लिया है तुम सबने । ......हम सबके उपनाम रख लिए हैं तुमने-अपमानित करते से बेहूदगी भरे उपनाम !..... हममें से कोई मोटा है, तो कोई भिखमंगा , कोई मुच्छड़ है तो कोई टिड्डी , कोई हंगा है तो कोई मुत्ती।' लेकिन उनसे ऐसा कह पाना इतना आसान थोड़ी था, पता नहीं इसी बात पर मुझे गोली मार देता ष्यामबाबू ! वैसे कहना तो इनसे भी उतना ही कठिन जान पड़ता है मुझे।

हालांकि उपनामों का क्या है, ये ही तो आदमी की निजी पहचान बन जाती है । हम दोनों को उन्ही उपनामों से ये पुलिस वाले बुलाते है। हम तब भी चुप रहते थे, अब भी चुप रहते है। ये लोग जो चाहते हैं हमे मजबूरी में वही करना पड़ता हे,इन्हे जो अच्छा लगता है वही कहते हैं हम । अपनी मरजी से न कुछ कह पाते न कर पाते ।

लल्ला तो रघुुवंशी साहब से कहना चाहता था ' काहे को ये बेकार की कवायद कर रहे हो रघुवंशी साहब ! वारदात करने के बाद अब बागी कहां धरे होंगे इधर ! वे इस डांग से बहुत दूर किसी कस्बे में पहुंचके किसी

शुभचिंतक की कोठी पर जा छुपे होंगे........... या घोसियों के किसी गांव में पहुंच के अपने किसी नेता बाब की कोठी पर गुलछर्रे उड़ा रहे होंगे । ‘ लेकिन उसकी बात सुनता कौन ? सो हमेशा की तरह चुप बने चलते रहे, हम दोनों ।

आज का दिन सुबह से ही बुरा रहा ।

हम लोग पिछली रात करसोंदा-कलां गांव में रूके थे । पौ फटते-फटते वहीं आ गया था रोता-बिलखता सुरेश रावत । सुरेश रावत के बड़े भाई गणेश रावत को रात ग्यारह बजे श्यामबाबू घोसी ने घर से बुलाके गांव के बाहर ले जाकर बड़ी बेदर्दी से मार डाला था । सारा गांव देखता-सुनता रहा ,लेकिन अपनी जान बचाने के लिए चुप बना रहा हर आदमी । सुबह लोग घर से बाहर निकले भी तो बस दुख जता के रह गये ,सुरेश के साथ थाने जाने के लिए एक भी आदमी तैयार नहीं हुआ - बैठे-ठाले डाकुओं से कौन बैर बांध ले , डाकू सिंगराम रावत की वजह से वैसे ही कृपाराम नाराज चल रहा है रावत विरादरी से । सुरेश को पता लगा कि बागियों की खोज में जंगलों में घूम रही एक टुकड़ी करसोंदा-कलां में रूकी हैं तो वह नंगे पैरों हमारे दल के पास भागा चला आया था ।

मैं कांप गया-इस तरह ऐलानिया किसी आदमी को मार देने के पीछे क्या मंशा होगी इस बागी की ?

हेतम ने बताया मुझे , किसी आदमी की दुर्दशा करने के पीछे बागियों की मंशा सिर्फ इतनी सी होती है कि उस घटना से पूरे इलाके में आतंक फैल जावे और उनकी दरिंदगी का ढिंढोरा पिट जाये । आयंदा कोई भला आदमी उनके ख़िलाफ पुलिस में किसी तरह की खबर देनेे की हिम्मत न कर सके ।

रघुवंशी ने सबसे पहले वायरलेस से इलाके के थाने को इस हत्या की खबर की फिर पुलिस कप्तान को इस वारदात की प्राथमिक सूचना दी । हुकुम मिला कि जब तक इलाके की पुलिस न आ जाये तुम उस गांव में जाकर लॉ-एन-ऑर्डर संभालो ! रघुवंशी ने अपने दल को कूंच करने का इशारा किया , और सुरेश की रहनुमाई में हमारी टीम उसके गांव के लिये चल पड़ी थी ।

पुलिस की मौजूदगी से गांव वालों को कितना सुकून मिलता है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमे सुरेश रावत के गांव करसोंदा-खुर्द पहुंचने पर पता चला ।

रघुवंशी ने अपने आदमीयों को निर्देश दिया था कि वे गांव की गलियों में गश्त लगाना शुरू कर दें , तो थोड़ी ही देर में एस ए एफ के सशस्त्र जवानों और पुलिस के सिपाहीयों के बूटों की धमक से गलियां गूंज उठी थीं । इस धमक का ही असर था कि अधुखुले दरवाजे खुलने लगे और बूढ़े-बच्चे-जवान बाहर निकलने लगे । गांव का जीवन सामान्य होने लगा । घर-घर से बाल्टी-मटका लिये औरतंे निकलीं और कुंओं हैण्ड-पम्पों की तरफ उनके ठट्ठ-ठट्ठ बढ़ चले ।

गांव के दक्षिण तरफ तनिक सा बाहर निकलते ही स्कूल के मैदान के बीचोंबीच नीम का वह पेड़ था , जिसके तने सेे बांध के गणेश को गोली मार दी गयीं थी । हम लोग वहां पहुंचे तो लगभग पैंतालीस साल के गणेष की विकृत लाष और उस से बहकर चारों ओर जम गये गाढ़े खून को देख कर लल्ला पंडित के मुंह से सिसकारी निकल गयी । सच तो यह है कि रस्सी से बंधी और एक तरफ को गरदन लटकाये खून में सनी वह लाश देखकर दिल दहल उठा मेरा भी ।

गांव के कुछ लोग हमारे पास आते दिखे । सहसा रघुवंशी ने हम सब से कहा-‘‘आप लोग चुप रहना, बीच में मत बोलना ।‘‘ फिर वह उन गांव वालों की ओर देखकर मुस्करा कर बोला ‘‘नमस्कार ! आइये , आइये ।‘‘

‘‘ जै राम जी की साब ! हम लोग इसी गांव के ब्राह्मण विरादरी के भाई-बन्धु है । ‘‘ माथे पर तिलक धारे, चोटी वाले एक प्रौढ़ सज्जन ने आगे वढ़ कर रघुवंशी को प्रणाम किया । उनके साथ वाले चार-पांच लोगों ने भी दरोगा जी को झुककर नमस्कार किया ।

रघुवंशी बहुत होशियार आदमी है, वह फुसफुसाते हुऐ बोला-‘‘ बैठो ! हमउ ब्राह्मण है दाऊ, सनाढ्य ब्राह्मण! देवेन्द्र शर्मा नाम है, तेनगुरिया सनाढ्य हैं हम । आप बेहिचक सच सच बताओ हमे, कि रात को कैसे क्या हुआ ? बात बाहर नहीं जायेगी । हम थाने के स्टाफ में से नहीं है, हम डाकुओं की तलाश में निकले हैं ।‘‘

जब उन लोगों को पता लगा कि पुलिस दल का बड़ा दरोगा शर्मा है और वह थाने के स्टाफ में से नहीं है, तो वे खुल कर बात करने लगे । उन सबने अपने अपने नाम और गोत्र बता कर बड़े दरोगा को अपना परिचय दिया ।

बड़े तिलकधारी प्रौढ़ व्यक्ति यानी कि पुजारी राधेश्याम ने बताया....... कि पूरे गांव को विश्वास है - गणेश पुलिस का मुख़बिर था । गांव में जब भी पुलिस आती , दरोगाजी उसके घर जरूर आते। जितनी देर पुलिस गांव में रहती ,गणेश को हमेशा संग लगाये रहती ।......... इस दोस्ती का खूब रौब गालिब करता था गणेश । पिछले चुनाव में तो वह सरपंच चुन लिया गया था इसी रौबदाब में ।.........डाकू सिंगराम रावत का इलाका होने से वैसे इस इलाके में कृपाराम घोसी का गिरोह कभी नहीं आता , लेकिन पिछले दिनों पुलिस घेराव का मारा कृपाराम इधर ही आ मरा ,तो राशन-पानी के लिये उसने अपने जाति भाइयों से संपर्क किया । उन लोगों ने बताया कि वे चोरी-छुपे ही गिरोह की मदद कर पायेंगे, क्योंकि इस गांव का एक आदमी गणेश रावत पुलिस का मुखबिर है, जो तुरंत ही थाने में जायेगा और हम सबको अंदर करवा देगा । इस संदेश के बाद कृपाराम बिना बात के ही गणेश रावत के खिलाफ हो गया । लगता है गणेष ने पुलिस से कुछ नही कहा था, क्योंकि इस बीच इलाके का थानेदार दो-तीन बार गांव में आया, लेकिन उसने घोसी-गड़रियों से कोई तहकीकात नहीं की, फिर भी किसी के षक को क्या कहे। हालांकि, तबसे गणेश रावत बड़ा सतर्क रहने लगा था । वह अपनी बारह बोर की बंदूक सदा साथ रखता था । बागियों का नियम है कि वे उस आदमी के किनारे को भी नहीं छूते जिसके पास बंदूक होती है, सो वे अब तक गणेश रावत से दूर-दूर बने रहे । कल की रात गणेश के घर बंदूक नहीं थी । गणेश का भाई सुरेश किसी रिश्तेदारी में गया तो अपने कंधे पर बंदूक लटका ले गया था । गिरोह को इसकी पक्की सूचना रही होगी । सो यह खबर पाकर श्यामबाबू और दो डकैत गांव में घुस आये ।

तब रात के ग्यारह बजे होंगे कि उन लोगों ने गणेश रावत की पौर के किवाड़ खटकाये । किवाड़ की दरार से गणेश ने बाहर झांका तो किसी परिचित को देख कर दरवाजा खोल दिया होगा और श्यामबाबू के कब्जे में आसानी से आ गया होगा ।

सहसा रघुवंशी ने पुजारी को टोका-‘‘ इसका मतलब ये हुआ कि गांव का कोई ऐसा आदमी बागियों के साथ था, जो गणेश का भी कोई विश्वासी आदमी रहा होगा ! पुजारी जी, बता सकते हैं कि कौन होगा श्यामबाबू के साथ ? ‘‘

इस एक प्रश्न ने पुजारी को मौन कर दिया । रघुवंशी ने लाख सवाल किये , लेकिन पुजारी जी एक शब्द न बोले थे उसके बाद । फिर हम लोग यहां-वहां की बातें करते रहे । अंत में राधेष्याम सिर्फ एक बात बोले- ‘‘

दरोगाजी,.......कहा कहें आप से । अब तो जा पूरे इलाके में नान्ह विरादारी के बागियन्न को बोलबालो है, और सवर्ण लोगन्नं के बड़े बुरे हाल है -खास तौर पर ब्राह्मणों की तो मट्टी पलीत हो रही है।‘‘

इसके बाद वे सब उदास से ही उठ कर चले गये ।

इलाके का दरोगा आया तो यह खबर सच साबित हुई कि गणेश पुलिस मुखबिर था । दोनों दरोगाओं की आपसी सलाह हुई और दोनों ने उपलब्ध पुलिस बल के साथ तुरत-फुरत गांव के घोसी-गड़रिया जाति के घरों पर दबिस डाल दी । उन परिवारों के सारे मर्द घरों से बाहर थे , पूछने पर औरतों ने बताया कि मवेषी चराने हार में गये हैं । रघुवंशी का माथा ठनका ।

इलाके का दरोगा एक अन्य मुखबिर से मिलके सही बात जानने की गरज से वहां से चला तो रघुवंशी ने गणेश की लाश का पंचनामा बनाने की कार्यवाही शुरू की ।

आधा घंटे बाद दरोगा लौटा था तो एक नई सूचना उसके पास थी- बागी लोग ज्यादा दूर नही है, बस तीन किलोमीटर दूर की एक पहाड़ी पर डेरे जमाये पड़े हैं । रात की वारदात उनने ही करी है । अगर चाहें तो हम घण्टे भर में ही उन्हे घेर सकते हैं ।

मैंने अनुभव किया था कि यह खबर सुनकर दरोगाओं को छोड़कर सारे छोटे कर्मचारियों के चेहरे उतर गये। हेतम तो बाकायदा बहस पर उतर आया-अपुन इतने से आदिमी हैं, बताओ भला कहा लेंगे बागियों का ! उनिने कहूं गोली चलाय दई तो अपुन का लेंगे उनको ? कप्तान को खबर करके कुमुक बुलबाइ लो दरोगा जी !

लेकिन रघुवंषी नही रूका था, उसने हमको कूच का हुकम दे दिया ।

इस पहाड़ी को लक्ष्य मान कर हम लोग दोपहर बारह बजे वहां से चले थे और इतनी मेहनत के बाद पहाड़ी के ऊपर पहुंच कर पुराने कपड़ों से ठुंसा वह थैला मात्र बरामद कर सके थे ।

पहाड़ी की तलहटी में पहुंच कर पुलिस डॉग सदा की तरह भ्रम में फंस गये थे और अपनी थूथनी उठाये चारों ओर कुछ सूंघने का उपक्रम कर रहे थे । रघुवंशी अब हताश-सा खड़ा था । कुछ देर पहले औचक ही बंध गयी आशा अब निराशा मंे तब्दील हो गयी थी ।

छोटा दरोगा जाने किसको गालियां देने लगा था-‘‘ हरामी साले, कुत्ते की औलाद़, चोट्टे हैंे पूरे ! ‘‘

श्यामबाबू भी प्रायः ऐसे ही बिना कारण और बिना लक्ष्य के गालियां बका करता था।

गालियां ही नहीं , बाकी का सारा व्यवहार भी एक जैसा अनुभव किया है हमने - इनका और उनका ।

इस टीम में शामिल होकर हम टीम के इंचार्ज इसपेक्टर रघुवंशी के सामने आये थे, तो इसने छूटते ही अक्खड़ अंदाज में मुझसे पूछा था -‘‘क्या नाम है रे तेरा ? ‘‘

‘‘ साब मेयो नाम गिरराज है !‘‘

‘‘ अबे गिरराज के आगे-पीछे भी तो कुछ लगाता होगा ।‘‘

‘‘ गिरराज किशोर !‘‘

“ अबे भोषड़ी वाले ,सीधे काहे नहीं बता रहा कि कौन बिरादरी है तू ?”

मैं खाई में गिरा था जैसे, फिर संभल कर बोला था-“मैं कायस्थ हूं दरोगाजी !”

“ और ये दूसरा हुड़कचुल्लू कौन जात है ?”

“ ये पंडित है-पंडित लल्ला !”

“ हुं ! “ लम्बा हुंकारा गुंजाते हुए रघुवंशी ने सिर हिलाया था , और मैं इस उलटबांसी को बूझने लगा था कि इन खाकी वरदी वालों को बिरादरी से क्या मतलब ? वरदी का मतलब ही ये मानता हूॅ मै कि इसे पहनकर हर आदमी अपनी पहचान भूल जाये, सब एक से दिखें ।

कृपाराम ने भी ऐसे ही जाति का आधार लेकर पूछताछ शुरू की थी -“ अब जल्दी करो सिग लोग । अपयीं-अपयीं बिरादरी बताओ सबते पहले ।”

तब बस की भयभीत सवारियां अपना नाम न बताके जातियां बताने लगीं थीं । बस में आदमी नहीं थे -सिर्फ जातियां थीं !

मैंनेे अनुभव किया था कि जहां कुछ देर पहले बागियों के भय से थर-थर कांपते हुए हम लोग परस्पर निकट रिश्तेदार और एक परिवार के सदस्यों की तरह लग रहे थे, वहीं बागी ने जाति पूछी तो क्षण भर में कितने बंटे हुए और अलग अलग से लगने लगे थे सब के सब। जाति का कितना गहरा रंग जमा है हम सब पर,यह प्रत्यक्ष देखा मैंने उस दिन ।

अचंभे की बात ये थी कि ज्यों ही बागी की .विरादरी का पता लगा था त्यों ही हम सबका जाति बताने का अंदाज बिलकुल बदल गया था ।

उस वक्त बस का माहौल देख कर एकाएक मुझे लगा था कि जमाना सचमुच बदल गया है ,जहां बरसों पहले, ब्राह्मन-ठाकुर जैसी विरादरी बताते वक्त हर आदमी अपनी छाती तान लेता था, वहीं अब उल्टा है, अब दीगर जातियों के लोग छाती तानते हैं अपनी । बस में जितने भी बड़ी जाति के लोग थे सबसे पहले वे ही भयभीत हो उठे थे यकायक । हरेक को लग रहा था कि इधर उसने जाति बताई,उधर बागी दन्न से उसके सीने में गोली उतार देगा ।

तब क्षण के एक छोटे से हिस्से में ही मुझको अपने बच्चे, जवान-जहान पत्नी और बूढ़े बाप-महतारी के चेहरे याद आ गये थेे । विचार आया.... अगर अचानक मैं यहां खेत रहा तो उन सबका क्या होगा ? इस प्रश्न का उत्तर मुझे ढूढ़ंे-ढूढ़े नहीं मिल रहा था ।

पुलिस-जवान थक के चूर हो चुके थे, सो साफ-सुथरी जमीन देखकर वे एक-एक करके नीचे बैठने लगे। मैं और लल्ला तो बैठते-बैठते धरती पर पसर ही गये । तीन बजने को थे, हम दोनों अपनी आंतों में उठती एक अजीब सी ऐंठन से परेशान हो चले थे-भूख बर्दाश्त से बाहर होनेे लगी थी । इस ऊंची-नीची बीहड़ जमीन में लगातार कई दिन से चलते रहने के कारण बदन में खून की जगह थकान दौड़ती महसूस हो रही थी हमे । लग रहा था कि सुविधा मिली और हम कहीं सो गये तो महीना भर तक नहीं जग पायेंगे ।

लल्ला ने चिरौरी की -“साब, भूखि लग रई है ।”

''चिंता मत करो, आधा घंटा धीरज धरो । बस ये सामने की पहाड़ी पार करना है , उधर घाटी के गांव में अपन को खाना मिलेगा'' नक्शा फैला के बैठा बड़ा दरोगा रघुवंशी कुछ झुंझला उठा था-'' अब जंगल में इतना तो धीरज रखा करो यार! तुम तो भोषड़ी के बस, लुगाइयों की नाई मिमियाते हो ।''

'आधा घण्टा ! यानी कि तीस मिनट !! और फिर घड़ी देखके कौन चलेगा, आधा घंटे का पौन घण्टा भी हो सकता है । लगता है आज तो कंडा डल जायेंगे ।' मेरे कान में फुसफुसाते लल्ला को फिर से रोना आ गया था ।

हमको उदास होते देख रघुवंशी मुस्कराया । नक्शा समेटते हुए होंठ टेड़े कर उसने हम पर व्यंग्य का कोड़ा फटकारा-''तुम दोनों तो ऐसे नखरे करते हो यार, ,जैसे किसी की बारात में आये होओ, ़ ़ ़ ़ पहले नब्बै दिन बागियों की पकड़ में रहे थे तब भी तो ऐसे ही भटके होगे न ! उन हरामियों को टैम-टेबिल से कहां से खाना मिल पाता होगा!़हां ये तो बताओ कि कौन-कौन आदमी खाना पहुंचाता था उन्हे ? '' बोलते-बोलते उसके चेहरे पर मनुष्य की जगह किसी दरिंदे का क्रूर चेहरा उगता दिख रहा था।

''तब तो आदित परि गयी हती साब ,देर-सबेर खायबे मिलही जातु हतो'' लल्ला बोला । खाना पहुंचाने वालों के नाम वह जानबूझ कर गोल कर गया ।

''साब, बागियों के डरि से भूखि-प्यासि तो जाने कितैे बिलाय गयी थी तब।'' मेरी हिम्मत बढ़ी तो मैंने भी स्पष्टीकरण सा दिया ।

दस मिनिट तक बिश्राम रहा, फिर एकाएक बड़ा दरोगा रघुवंशी उठ खड़ा हुआ । उसके पीछे-पीछे उनकी पूरी टीम बबूल से लदी उस पहाड़ी पर चढ़ने लगी, जिसके पीछे मुझे और लल्ला को अपने पेट में दौड़ रहे चूहों से निपटने का जुगाढ़ दिख रहा था ।

हर साल की गर्मियों में मैं मामा के घर अटेर जाता था तो बचपन से देखता आया हूं कि हर साल चम्बल में दिनोंदिन फैल रहे बीहड़ के उन्मूलन के लिए तहसील मुख्यालय अटेर में दिल्ली से एक छोटा हवाई जहाज आ जाता था, जो रात-बिरात नीची उड़ान भरके दक्खिनी बबूल कहे जाने वाले जेलियोहिलेरा बंबूलों के बीज बीहड़ों में छिड़क देता था। पिछले कुछ बरसों में इस हवाई बीजारोपण का असर दिखने भी लगा है । ये बबूल भारी संख्या में उग आये हैं अटेर और भिण्ड की ऊंची नीची भरको वाली बेहड़ जमीन पर । लेकिन इधर ये झाड़ियां नही दिखतीं ,इधर देषी बबूल की झाड़ियां भरी पड़ी हैं, संभवतः इस इलाके मे जेलिया हिलेरा के बीज नही झिड़के गये है ।

पहाड़ी की गोद में बसा था सहरिया आदिवासियों का गांव जनपुरा । स्वभाव से गौ और शरीर से हृष्ट-पुष्ट इस गांव के सहरिया पुलिस के दोस्त थे । हैड कानिस्टबल हेतम ने एक बार बताया था कि बीहड़ में दोस्त और दुश्मन भी जाति-विरादरी देख के बनाये जाते हैं । पुलिस का दोस्त वही हो सकता है -जिसकी जाति का कोई डाकू बीहड़ में न घूम रहा हो । फिलहाल सहरिया जाति का कोई बागी घाटी में नहीं था, इस कारण पुलिस वालों को इस गांव से कोई खतरा न था ।

पुलिस टीम जब जनपुरा पहुंची , पूरा गांॅव मिलजुल कर खाना बनाने में जुटा था। हम लोग एक तरफ बैठ गये । कुछ देर बाद पटेल ने आकर बताया कि खाना तैयार है । मैंने कनखियों से देखा कि अरहर की पतली पनियल दाल और चार नम्बर की रोटी (चार रोटी बराबर एक रोटी)लगभग तैयार हो चुकी थी ।

गांव के सरकारी स्कूल के दो कमरों को साफ कर पुलिस टीम ने अपने डेरे जमाये । कुछ देर बाद स्कूल की टाटपट्टियां बिछीं और आधी टीम भोजन को बैठ गयी। अब परसाई की प्रतीक्षा थी । उधर छोटा दरोगा, जनपुरा के रसोइयों को रोटी-दाल का एक-एक ग्रास खिला रहा था, यह इस जांच का एक हिस्सा था ,कि भोजन में कुछ गलत चीज तो नहीं मिलाई गई है।

मुझे याद आया-ऐसी ही जांच तो बागी किया करते थे ! वे भी भोजन बनाने वाले को ही सबसे पहले खिलाते थे । इन बीहड़ों में खाने की शुद्धता जांचने का शायद सबका एक ही तरीका है ।

बागी कहते थे कि इन बीहड़ों का कोई भरोसा नहीं है, जाने कौन आदमी दगा कर जाये , किसको ईनाम का लालच आ जाये..........। कोई ताज्जुब नहीं कि कहो तो सगा मामा, सगा जीजा या सगा फूफा ही जहर खिला दे ।

भोजन के बाद रघुवंशी ने वायरलैस वाले सिपाही से हैडफोन लेकर कंण्ट्रोल रूम से सम्पर्क किया -‘‘ हैलो कंट्रोल रूम , हेयर ए डी टीम नम्बर सोलह ! आयम इंचार्ज रघुवंशी !’‘

‘‘ मैं रामचंदर सिपाही नम्बर चार सौ सत्ताईस । नमस्कार श्रीमान !क्या खबर है, बोलिये ! ‘‘ वायरलैस यंत्र से ऑपरेटर की आवाज आयी तो रघुवंशी अब तक की अपनी सर्च की रपट बताने लगा ।

कंट्रोल रूम का निर्देश था कि आज रात जनपुरा के इर्द-गिर्द डाकुओं का मूवमेंट होने का अंदेसा है । सो पूरी रात सतर्क रहो । रघुवंशी बुदबुदाया -‘मतलब आज की रात, जनपुरा में ही हाल्ट होगा ।‘

हाल्ट की खबर सुनकर पुलिस सिपाहियों ने अपना बेल्ट ढीला किया । कंधे पर टंगे पिट्ठू उतारे जाने लगे, सबकी बन्दूकें कोत-मास्टर के पास जमा होने लगीं । रात भर पहरेदारी करने के लिए संतरी के रूप में खड़े होने योग्य सिपाहियों के नाम पर बिचार होने लगा ।

सरदियों में तो, शाम के पांच बजे से ही रात उतरने लगती है । अंधेरा हुआ तो लोगों ने अपने बिस्तरे लगाना शुरू किया । कुछ लोग अपने सामान में से अगरबत्ती निकालकर संझा-आरती करने लगे थे- ओम जय जगदीश हरे !

कमबख्त यादें हम लोगों का पीछा नहीं छोड़तीं । याद आया कि डाकू लोग भी इसी तरह हर सांझ बिना नागा देवी मैया की आरती जरूर करते थे-

जय अम्बे गौरी,़ ़ ़ ़ मैया जय अम्बे गौरी !

तुमको निसदिन ध्यावें ,हरि ब्रहमा शिवरी !!

आरती के बाद हमने अपने थैले टटोले और दो कम्बल निकाल लिये । सोने के लिए हमने कमरे का दूसरा कोना चुना, और दोनों चुपके से उधर ही खिसकने लगे । यकायक बड़े दरोगा रघुवंशी ने हमे टोका-‘‘ तुम दोनों को अलग-थलग नहीं लेटना यार ! आप लोग बीच में आओ! तुम दोनों का तो खास ख्याल करना है हमे, इन्हे जगह दो यार !‘‘

बीच में लेटे सिपाही एक तरफ को सरक गये , तो हम दोनों ने बीच में अपना बिस्तरा लगाया ।

....

गुस्सा और भूख

पुलिस मंे अनेक सिपाही तो लेटते ही सो गये पर में जाग रहा था।

रात का सन्नाटा गहरा रहा था, लेकिन मैं रोज की तरह मन ही मन एक हजार आठ बार राम का नाम गिन रहा था । दादा कहते हैं कि यह एक टोटका है, जिसे अपनाने से नींद जल्दी भी आती है और नींद गहरी भी होती है।

दिन में समूह के बीच सुरक्षित चलते वक्त तक जरा-जरा सी आवाज पर हमारे बदन में फुरफुरी आ जाती थी, फिर तो इस वक्त रात के अंधेरे में असुरक्षित लेटे हमस ब थे। मुझे ऐसे कई हादसे याद आ रहे थे जिनमें बागियों या नक्सलियों ने इस तरह किसी इमारत में मकाम किये लेटी पुलिस टीम को डायनामाइट लगा के उड़ा दिया था। इसलिए जहां भी जरा सा खटका होता मैं ही नहीं जाग रहा हर सिपाही एक पल को चौंक उठता।

मुझे याद आ रहा था छह महीने पहले का वह दिन जिस दिन मैं अपनी गर्भवती पत्नी विषाखा का चैकअप कराने शहर ले गया था।

दादा आगबबूला हो उठे थे, जब उन्हे पता लगा कि बेटा आज बहू को साथ लेकर यह चैक कराके आ रहा है कि पेट में पल रहा बच्चा लड़का है या लड़की! दरअसल सोनाग्राफी सैण्टर पर गांव का परसदिया मिल गया था, वह अपनी पत्नी के गर्भ में मौजूद बच्चे के लिंग के परीक्षण के लिए आया था और उसने हमको भी लगेहाथ यह सलाह दे डाली थी कि हम भी चैक करालें ।

मैं लौटा तब दादा घर के बाहर चबूतरे पर बैठे थे, चेहरे पर रोष की परत साफ पढ़ी जा सकती थी। मैंने उन पर एक निगाह डाली तो मेरी हवा निकल गई । नीचा सिर किए मै देहरी उलांघता भीतर घुसा । पगे के बीच से होता जब आंगन मे ंपहुंचा तो अम्मां चुपचाप बैठी हमारी ही बाट जोह रही थी।

मैंने डरते डरते पूछा, ''का बात है गई अम्मा? दादा रिसाये से काहे बैठे!''

अम्मां भी नाराज थी, जलती सी आंखों से मुझे घूरती हुई, अनख से उठ खड़ी हुई ओर पैर ठनकाती हुई मढ़ा में चली गई । मैं बेबसी से पत्नी को देखता रहा गया था।

वो रात अबोले की रात थी । पत्नी डरी हुई थी ओर मैं सहमा हुआ ।

अम्मां का धीरज सुबह जवाब दे गया । मुझे चाय का कप पकड़ाती वे बोली थी, '' बहू को पेट पराये मर्द के सामने उघरवाते तुम्हे लाज नही आई रे निपूते!''

''अम्मो, डॉक्टर तो माई-बाप है, उससे क्या छिपाना ।?''

''पूरे गांव में तो ऐसी हवा है कि तुम पेट की औलाद की जांच करावे गये हते।''

'' काहे वामें का गलती है? पहली बेटी जनम से लंगड़ी पैदा भई है, तासे दूसरी संतान की हालत पहले से दिखवा लेवे में कछु गलती नाने अम्मां। ...का तुम और दादा जे चाहतु कै आंगन में दो-दो लंगड़ी मोड़ियें घिसटती फिरें!'' अपने मन का संपूर्ण दर्द मैने अम्मां से कह डाला तो मुझे चैन मिला, लगा कि उनकी कल की व्यर्थ की नाराजी का मैंने सही जवाब दे दिया है।

अम्मां मेरे जवाब से सन्नाटे में थीं, और एक पल रूक कर बाहर चबूतरे पर कुल्ला दातुन कर रहे दादा को शायद कल की घटना को इस नजरिये से बताने के लिए चली गई थीं।

आंगन में घिसट रही कृष्णा को देखकर मुझे अम्मां और दादा पर बेहद गुस्सा आया। इस यनिरीह बच्ची के दोनों पांव टखनों से अंदर से मुड़े हुऐ थे, इस वजह से वह न खड़ी हो पाती थी न चल पाती थी, यहां तक कि उसकी टट्टी-पेषाब भी विषाखा को कराना पड़ती थी।

कुछ देर बाद अम्मां लौटी तो दादा का पैगाम उनके साथ था, मेरी पेषी दादा के इजलास में लग चुकी थी।

मैं आत्मविष्वास में भरा हुआ बाहर पहुंचा तो दादा का बदला स्वरूप् मेरे सामने था, अब उनकी नजरों में मेरे प्रति स्नेह था, ''का बताओ डॉक्टर ने ? जो मोड़ा-मोड़ी स्वस्थ है, कै जो भी.....''

'' नई, लड़का है, और खूब स्वस्थ है।'' नीचा सिर किये मैंने जवाब दिया था, जिसको सुनकर उनकी बांछें खिल गईं थी।

'वे परहेज ओर दवाइयन को ध्यान राखियो जो डॉक्टरा ने लिख भेजी हैं' प्यार भरी हिदायत के साथ दादा उठ गए थे औरे घर से बांये तरफ जा रही गली में बढ़ लिए थे अब वे अपने जादू-टोने से जुड़े दोस्त जालम को सारी बातें बताकर बच्चे की सलामती के लिए गंण्डा-ताबीज बनबा कर लौटेंगे।

दादा का गुस्सा ऐसा ही है। बड़े भैया षिवराज ने जब इनकी बात न मानी और पटवार्यान की टेनिंग नहीं ली तो उन्हेंे नजर से ही उतार दिया, लेकिन मैंने ेइनका पूरा कहतना ा माना और आज इन्ही की बदौलत पटवारी हूं, खूब मजे से नौककरी कर रहा हूं, अपने गांव में रहता हूं और खेती पाती देख लेता हूं।

दादा रिटायर्ड हो गये हैं लेकिन आसपास के इलाके में आज भी रिटायर्ड पटवारी नाथूूराम खरे का नाम एक जीते जागते कानून के रूप् में लिया जाता है, दादा को लेंैण्उ रेवेन्यू कोड ही नहीं सीपीसी और और सीआरपीसी की भी कअनगिन धाराऐं कंठस्थ हैं, अच्छे खासे वकरील कोि को वे परास्त कर डालतजे हैं। इलाके में वारदात होते ही लोग दादा के पास उसकी खुददा-बखेंेरी के लिए आन खड़े होते है। दादा कभी फेल भी नहीं हुए मामलों के समझने में । रात दिन की चलाफिरी का परिणाम हे कि पैंसठ के होने को आये लेकिन बदन में जरा सी थकान नही है, अभी कहो तो चटट से ग्वालियर को चलती धर दें।

मैं तब तक नहा धोकर निपटा ही था कि दादा ने घर में खंासते हुऐ प्रवेष किया।

हम सबका ध्यान उनकी ओर गया। वे चिंतित दीख रहे थे । मुझे पास बुलाया।

'रात-बिरात निकरिवों बंद कर देउ अब, पतो लगो है कै कृपाराम घोसी को गैंग आजकल इते ही फिर रहो है।'

'वो तो उधन ग्वालियर वा पार को रहवे वारो है, उतई वाके मददगार है, हिन का मरिवे के काजे आओ है?'

' जो बात कही बात सोलह आने सही है, सो गंाठ बांध लो ' कहके दादा अम्मां को ताबीज और काले रंग का धागा विषाखा को बांधने का तरीका समझाने लगे।

मैं परेषान था, चुनाव होने वाले थे, मुझे रिटर्निंग कार्यालय से बस में मतदान दल लेकर अपने इलाके में जाना था,...अब दादा से कैसे कहूं कै आप लाख कहें लेकिन मुझे चाह कर भी रात बिरात निकलने की जोखिम से बचना संभव नही है।

ख्ैौर अभी तो महीना भर रखा था ।

गांव भर महीना भर तक पूरी तरह सतर्क रहा।

चुनाव का खर्रा आया तो दादा चिंतित हुए, ‘ मैं तहसीलदार से मिल आउं । कह देंगों कै दुनहन उम्मीद से है और पूरे दिन चल रहे है, पता नही कौन घड़ी गिरिराज की जरूरत पर जावे, तासे चुनाव-फुनाव से मुकति देओ साहब!’

लेकिन मैं जानता था कि कुछ नही होना है, फिर भी दादा तो गये ही और निराष लौट भी आए, सबसने टका सा जवाब दे दिया था।

मेरी रवानगी का दिन तय था, उसके पहले घर मे ंएक बिनकहे शोक का आलम व्याप्त था।

अम्मां ओर विषाखा ने मिलकर तीन-चाार दिन के लिए खानले के वास्ते नमकीन खस्ता और मीठे खुरमा बना डाले थे और वो भी दूध में आटा उसन के विषुद्ध घी मे ंतल कर ।

अलबत्ता मैं निष्चिंत सा था क्यों कि चुनाव कार्य में पुकलिस की इतनी अवाजाही के बीच किसी बागी की हिम्मत नहीं दीखती थी कि वह जहां छुछपा बेठा होगा वहां से सींग भी हिलाएगा।

....

करवट बदली तो मेरा ध्यान बगल में गुड़मुड़ी होकर लेटे लल्ला पंडित की तरफ गया, ‘जे भिखमंगा बेचारा बेकार में मर गया।’

ये तो बागियो ंकी हलचल जानते बूझते घर से निकला है, लेकिनक करता भी क्या, कहावत है न कि भूखे से ज्यादा निडर कौन होगा?

लल्ला महाराज मेरे बाल सखा इन दिनों भारी परेषान थे, उनकी जिजमानी ग्वालियर के वा पार के हरसी डेम और आसपास के इलाके में थी । हर साल वे उधर जिजमानी मांगवे जाते थे और दस-पांच कुंटल सस्सों ले पड़ते थे, लेकिन इस बार उस इलाके में डाकुआके भारी मूवमेंट के कारण उनकी हिम्मत नहीं पड़ रही कि उधर जाकर जिजमानों से अपनी सालाना दक्षिणा मांग लाएं।

उधर उनकी पत्नी उन्हे दम नही लेने ेदे रही, ‘ अरे तुम जैसे कंगला को बागी कनहीं खाय जा रहे । भिखमंगा बामन होके बड़ी बड़ी बातें सोचत हो। जाउ औरक अपना साल भर को इंतजाम करि लाओ हिम्मत करके, नाहीं तो मोड़ी-मोड़ा भूखन मरेंगे ।’

लल्ला ने मुझे आ कर सुनाया तो मैंने उसे चुनाव के एक दो दिन पहले जाने का कसुझाव दिया ताकि उन दिनों पुलिस के भारी मूवमेंट के कारण छोटी’मोटी गेंग ओर गिरोह छिप के बैठक जायें।

लल्ला पर मुझे बेहद तरस आता है, पिता के इकलौते लड़के , पिता एक कजाने माने कथा वाचक थे, संगीत में डुबाकर जब वे माकिर्म कथाऐं सुनाते तो सुनने वाले का दिल फटने फिरता, यही जादू सीखना चाह रहे ोि लल्ला पंडित, सो उन्होने न तो पढ़ाई मे ध्यान दिया न ही खेती बारी में ।... और दोनों ही उजर गये । खेती पर गांव के अड़ियल गूजर ने अपनी भैंसों का तबेला बना लिया और रोज रोज कथा सुनने जाने के कारण स्कूल जाना बंद हो गया, ओर धीरे धीरे तीस साल के हो बैठे लल्ला महाराज ।

डोकर की चलती थी इलाके में, सो अपने चेले-जिजमानों से कह सुन के एक कम उमर की लड़की से बेटा तो ब्याह लिया , लेकिन कथा वाचन की कला घोट के पिर्ला न जा सकती थी, और उसके लिए थोड़ा बहुत पढ़ा-लिखा होना जरूरी था, लेकिनक लल्ला तो पढ़ पथ्थर ,लिख लोढ़ा रह गये थे। सो किसी तरह सत्यनारायण कथा की पूजा और कथा पढ़ना सिखा के वे चलते बने।

कुछ दिन तो चला फिर लोग सत्यनारायण की कथा भूलने लगे महीनों बीत जाते कोइ्र जिजमान कथा का बुलौआ लेकर न आता। लल्ला महाराज चेते, अब नया क्या सीखें । पता लगा कि जो लोग हर मंगल हनुमान चालीसा के पाठ के साथ किसी जिजमान काक चोला चढ़ाते हैं , उन्हे तुरंत इक्कीस रूप्ये दक्षिणा मिलते हें। काम तो ईक है, लेकिन बजरंगवली बड़े कर्रे देवता है, गाव के गनपत कक्का नेे हनुमान चालीस के पाठ मे ंगगलती कर दी थ्की सो जिंदगी भर से पागल बने घूम रहे हैंेे...न न न ऐसो खतरनाक काम नही करने !...तो क्या करें...? एक दिन रास्ता चलते एक साधु टकरा गये तो उनके पांव छूके उन्हे बीड़ी पेष करी फिर उनकी बुद्धिमत्ता, त्याग, तपस्या की झूठी-मूठी तारीफें करते रहे, फिर उनसे पेट पालने का उपाय ीाी धीरे से पूछ लिया , तो साधुने झअ से बता डाला, ‘ सुंदरकांड का पाइ हनुमानजी को सुनााओ जल्इी प्रसन्न् होते है। समय कम हो तो किष्ैिंिकधाकांड का कर लो, हनुमानजी तुम पर ीाी प्रसन्न ओर जिजमान भी झालांझल।’

नुस्खा हाथ लगा तो लल्ला महाराज ने अपने यार इोस्तों से ेही आरंभ किया, सबसे पहले मेेरे घर उन्होने किष्किंधाकांड सुंदरकांड का पारायण किया, आवाज सुनी तो आस पास के मोहलले के साममा लोग इकटठा हुऐ ।

गांव के गम्मतया अपने हारमोििनियम-ढोलकी-मंजीरा लेकरक आ गये थे, सो समा अच्छा बंध गया, लोगों को गम्मत से ज्यादा मजा आया। मेरे दादा ने खुष होकरक इक्कीस रूप्ये चढ़ाये, मैंने ेीाी इक्कीस ही पोथी पर रखे, और दस-ग्यारह रूप्ये आरती में आ गये तो, लल्ला महाराज का पचास का हिल्ला हो गया ।

फिर क्या था, लल्ला महाराज के सुंदरकांड गाहे’बगाहे गांव मे ंगूंजने लगे, जिससे उनके परिवार का उदर पोषण होने लगा, लेकिन पूर नहीं पड़ती थी। पूर तो उसी अनाज से पड़ती थी जो वे पिता के साथ से ही ग्वालियर के वा पार जाकर मांगके लाते थे ।

तय हो गया कि लल्ला पंडित और मैं साथ साथ चलेंगे।

....

सर्च

पुलिस दल की पूरी रात और अगला दिन सतर्क रह कर गांव की गष्त करते बीता, लेकिन पुलिस दल के कैम्प केपास भला डाकू फटक भी सकता है कभी! कौन समझाऐ इन दल इंचार्ज रघुवंषी और कंटोल रूम में बैठे रणनीतिकारों को जो वहां अपने टेबिल पर लंगल का एक गलत-सलत मॉडल बनाये बैठे हैं और डाकूओं की उपस्थिति की कल्पना करते हुए अपने हाथ मे ंपकड़ी में लकड़ी की पुतलियो ंको पुलिस की टुकड़ियांे के घेरने के अंदाज यहां से वहां रखते जा रहे हैं ।

दिन बीत चला था, पुलिस दल बोर हो चुका था ।

अपने दल की मनथिति जानकर छोटे दरोगा ने गांव के पटेल से पूछा कि आसपास के किसी गांव मे ंकोई नाचने-गाने वाली बाई या बेड़नी नहीं रहती क्या, आज रात उनके नाच का जष्न मनाया जायेगा ।

रात नौ बजे बेड़नी का नाच आरंभ हुआ तो बीहड़ में दूर-दूर तक नगरिया की धमक गूंज गई ।

मषालों की रोषनी में बेड़नी रात भरा थिरकती रही, जिसके साथ साथ कई नौजवान सिपाही भी कमर मटकाकर नाचते रहे और सुबह के तारे चमकने तक माहौल में मस्ती और उन्माद भरा रहा । नैन मटकाती वेड़नियों को गांव के पटेल ने बाकायदा विदाई थी और वे पुलिस जवानो ंका अपने गांव का पता देती हुई पांव पैदल ही अपने साजिदों के साािे रवाना हो गई थीं ं

रात भर की जाग ने सबको थका दियाथा, नहा धोकर भोजन करके सब सोने के लिए लेटे तो सदा के आलसी पुकलि वाले जल्द ही घुर्राने लगे थे।

मैं तो जब भी इस तरह विराम पाता मेरा मन लौट लौट के अपने साथ घटे हादसों में उलझ जाता था, एक एक घटनपा दुबारा साकार होने लगती थी मेरे सामने। तनिक सी आंख मूंदी तो फिर से वे ही चुनाव के दिन थे और भारी मन से विदा हाता मैं........

पकड़

उस दिन वोट गिरने में एक दिन बाकी था। पटवारी होने के नाते मेरे माथे पर अनगिनत जिम्मेदारियां लदी थीं । अपने हल्का (कार्य क्षेत्र के गांवों) में आये चुनाव कर्मचारियों की पूरी व्यवस्था मुझे संभालनी थी, उन्हे खाना पहुंचाना, बिस्तरे मंगवाना और वोटिंग के लिये फर्नीचर लाना ,पोलिंग वूथ वगैरह बनबाना हम पटवारियों के ही तो जिम्मे रहता है न ! और इसके लिए हमे पटेल और सरपंचों सें निहोरे करना पड़ते हैं । क्यों कि कहीं तो हमे टे्रक्टर मंगाना है कहीं बैल गाड़ी , यानी कि चुनाव क्या आते हैं हमारी तो आफत आ जाती है । सो उस दिन मैंने बड़े भोर अपने गांव से पैदल चल के बस पकड़ी थी, और तहसील के लिए रवाना हो गया था ।‘‘

उस दिन मेरे साथ मेरा बाल सखा लल्ला पंडित भी उसी बस में सवार था । हम दोनों मित्र बैठे-बैठे देश में इस तरह हर साल छह महीने में होने वाले चुनावों से उत्पन्न गांव के तनाव , आपसी वैमनस्यता और राजनीति में गुण्डों के प्रवेश पर अपनी चिन्ता जता रहे थे ।

ठसाठस भरी बस ने मुड़कट्टा की खतरनाक ढलान से उतरना शुरू किया था कि यकायक झटके के साथ रूकी । ऐसा लगा मानो ड्रायवर ने तेजी से ब्रेक लगा दिये हों । बस की सवारियां चौंकी । अगली कतार में बैठे लोग सामने के शीशे के पार झांकने लगे । कंडेक्टर चेहरें पर परेशानी प्रकट करता उंकडू सा बोनट पर जा बैठा और माजरा समझने का प्रयास करने लगा था ।

बीच रोड पर ऐन-सामने किसी ने बड़े-बड़े पत्थर इस तरह जमा कर रख दिये थे कि उन्हे बचा कर बस का निकलना मुश्किल था । झुंझलाता कंडेक्टर फुर्ती से नीचे उतरा । पत्थर हटाने के लिए अपनी मदद के वास्ते उसने चार-पांच सवारियां भी नीचे बुला लीं ।

पत्थर जमाने वाले को गालियां बकते वे लोग चट्टानों के पास पहुंचे ही थे कि यकायक सड़क किनारे की झाड़ीयों को फलांगते, दाड़ी-मूंछ धारी दो बंदूक धारी जाने कहां से प्रकट हो गये। उन्हे देखकर कंडेक्टर समेत नीचे खड़े सब लोगों को मानों सांप ही सूंघ गया ।

मैंने खिड़की से बाहर देखा कि गंदी-चीकट खाकी रंग की वरदी पहने हुए वे लोग इस तरह धूल-धूसरित दिख रहे थे , मानों किसी ने उन्हे धूल से नहला दिया हो । बड़े बाल लहराते उन दाड़ी मूंछधारियों के के मुंह से अजस्त्र गालियां बह रही थीं ,उन्ही में से कोई चीखा -'' रूक जा मादर ़़ ़ ़पथरा मत हटइये ।''

डरता हुआ लल्ला फुसफुसाया-'' शाइद बागी आ गये !''

भयभीत होते मैंने हामी में सिर हिलाया था । यकायक हम दोनों की धड़कनें बढ़ गयीं । भीतर-ही-भीतर डर का एक बारीक सर्प हम सबकी रीड़ में चहलकदमी करने लगा था । लग रहा था कि बस कुछ घड़ी की जिन्दगी शेष है । क्योंकि बागीयों की मर्जी का क्या विश्वास-एक तो गैर पढ़े-लिखे, ऊपर से हर समय नाक पर बैठा गुस्सा , और फिर हाथ मंे बंदूक।

सहसा नीचे खड़े डाकू ने कंडेक्टर की गिरेबान पकड़ी और दांये हाथ का एक जन्नाटेदार रहपट उसके गाल में मार दिया , फिर उसकी कमर में एक लात जमा कर बोला था-'' भैन्चो हरामी , चुप रहिये ! नहीं तो गां़ ़ ़ ़ ़में से धुंआ निकाद्दंगो ।''

इतनी पिटाई से कंडेक्टर टूट चुका था , वह रूआंसा हो कर बोला

-'' ठीक है ठाकुस्साब ! जैसी आप कहो ।''

'' भोषई के ठाकुर होयगो तेयो बाप !'' क्रूर और बदतमीजी के लहजे में उस अधेड़ उम्र के डाकू ने कंडेक्टर को लताड़ा-'' सुन मादरचो.......हम ठाकुर नाने ! हमाओ नाम सुनके अच्छे-अच्छेन्न को मूत छूट जातु हैं -हम हैं किरपाराम घोसी ! समझे कछू ! अब जल्दी कर । डिलाइवर से कह ,कै मोटर गोला से उतार के हार में ले चले ।''

मैंने अनुभव किया कि कृपाराम का नाम सुनकर सब लोग सचमुच कांप उठे थे । हमसे अगली सीट पर बैठे बस के एक यात्री सज्जन अपने पड़ौसी यात्री को धीमे से बता रहे थे-'' बिना वजह मारपीट करने वाला और कभी सनक उठ आये तो बेहिचक गोली मार देने वाला यह बागी कृपाराम पिछले कुछ दिनों से चम्बल में आतंक और बर्बरता की निषानी सा बन गया है । तुमने भी तो पढ़ा होगा, अरे भैया अभी कुछ दिन पहले अखबार में छपा था ना ,कि आज यह चम्बल का बिना मुकुट का राजा है । इसके पास अपने छुपने के ऐसे ऐसे गोपनीय ठांव है कि , हजारों पुलिस वाले महीनों तक ढूढ़ंे तो भी इसे कभी न पा सकें । पुलिस को छकाने में तो यह बड़ा माहिर है और पकड़ के धंधे का तो यह सचमुच उस्ताद आदमी है । ''

'' लेकिन इसके खिलाफ पुलिस और उसके मुखबिर...........'' दूसरा सह यात्री विष्वास नहीं कर पा रहा था षायद, इसलिये उसने प्रष्न किया, लेकिन बताने वाला इतनी जल्दी में था कि उसकी बात काट के बोला-'' काहे की पुलिस , और काहे के मुखबिर ? इसके अपने निजी ऐसे-ऐसेमुखबिर है कि यह बीहड़ में बैंेठे ही पुलिस के सारे कैम्पेन के बारे में छोटी-छोटी सी माहती जान लेता है ।''

मुझे लगा कि बस अब हुआ खेल खतम ! अपनी जिन्दगानी शायद यहीं तक लिखी थी ऊपर वाले ने ।

उधर कंडेक्टर और सवारियों ने पत्थर हटाये फिर डाकू के संकेत पर सब लोग फुर्ती से बस में चढ़ आये । ड्राइवर ने बस स्टार्ट की और बागी के इशारे पर एकदम मोड़के सड़क से नीचे उतारी, फिर उस रोड बराबर चौड़ी कच्ची सी पगडंडी पर आगे वढ़ा दी ,जो सड़क से नीचे बीड़हों में जाती दिख रही थी । इधर बस में बैठी सवारियों के बीच अब तक चुपचाप बैठा एक आदमी अचानक ही उठ खड़ा हुआ था , उसके हाथ में भी एक

दुनाली-बंदूक दिख रही थी । अपनी लाल बल्बों सी जलती बड़ी बड़ी आंखों से एक-एक सवारी को घूरता हुआ वह बस की पिछली ओर खिसकने लगा । उसे देखकर सवारियों की तो जैसे घिग्घी बंध गयी । पसीना टपकाता लल्ला बुदबुदाया-“ बड़ा गहरा जाल फैलाया है बदमाशों ने ।“

ओंधी-नीची होती बस दो किलोमीटर के करीब बीहड़ में धंस गयी, तो बागी ने रूकने का इशारा किया । इधर बस रूकी उधर तेज स्वर में किरपाराम चिल्लाया-“ अब सबि लोग नीचे उतरो ।“

बस में बैठी सवारियां इतनी ज्यादा डर चुकीं थीं कि हरेक को नीचे उतरने में भी हिचक हो रही थी ,मुझे तो फूलनदेवी का बेहमई-हत्याकांड याद आ गया था , डर लग रहा था कि यहां भी बस से नीचे उतार के आज ये डाकू हम सबको एक लाइन में खड़ा करके गोली मार देंगे ।

हिम्मत बांध के सबसे आगे कंडेक्टर बस के नीचे उतरा , पीछे साहस करके दूसरे लोेग भी डरते-हिचकते उतरने लगे। बाहर एक भयावह सन्नाटा था । चारों ओर मौत नजर आ रही थी । उधर किरपाराम अपने एक साथी को निर्देश दे रहा था-“ जल्दी करो तिम लोग ! तलाशी लेऊ सबकी ! जो आनाकानी करे ताको बेहिचक गोली मार देउ ।“

किरपाराम के एक साथी ने अपने गले में लपेटा हुआ चादर फटकार के बस के दरवाजे के पास जमीन पर बिछा दिया और खुद भी तलाशी लेने के वास्ते बस में चढ़ गया । बस में मौजूद तीसरे बागी के साथ उसने सवारियों की बेहिचक तलाशी लेना शुरू कर दी । एक महिला तलाशी नहीं दे रही थी , बागी ने उसके गले में पड़ी जंजीर अपनी उंगली में उलझा कर खींची ,तो महिला ने उसका हाथ झटकार दिया । कुपित बागी ने दांत मिसमिसाये और उस औरत को एक थप्पड़ मार दिया । फिर क्या था , वो महिला बुक्का फाड़ के रो उठी ।

आवाज सुनी तो बाहर खड़ा किरपाराम अपने साथी पर चिल्लाया-“काहे रे कालीचरण, तैं समझेेगो नाहीं । हमने तिमसे कहा कही हती , कै बहू-बिटिया ते हाथ मति लगइये । दूर ते ही मांग लेइये । “

उधर बस की पुरूष सवारियां एक-एक कर नीचे उतरने लगीं थीं । बस के दरवाजे की बगल में बिछी चादर पर वे लोग अपने पास का रूपया-पैसा ,जेवर वगैरह रखते जा रहे थे। मैं मन ही मन उन डाकुओं की लानत-मलामत कर रहा था-‘सारे जे डाकू हैं, कि भिखमंगे ! मदारी और भिखारिन की नाईं चादर बिछा के मांग रहे हैं ।‘

यह वृत्तांत सुन रहे पुलिस इंसपेक्टर रघुवंशी के मुंह पर इस वक्त एक विद्रूप मुस्कराहट आ गयी थी । वह हिकारत से बोला -“ अब ये घोसी-गड़रिया डाकू बनेंगे तो क्या कुछ नियम कायदे मानेंगे ! इनकी काहे की इज़्ज़त और क्या ठसक होगी ! अब पेशा कोई भी हो , जात-विरादरी का असर तो आ ही जाता है न गिरराज ! “

मैंने तुरंत ही ‘हां जू‘ कहा ,अब जमाना ही इसका है न ! मैंने तब भी हां जू कहा था जब बागी किरपाराम घोसी बोला था-“ अब वे जमाने नहीं रहे गिरराज ,जब ठाकुर-वामनऊ वेहड़ में कूदि जात हते ़़ ़़ ़ ़ ़ ़तब की कहा कहें तब तो लुगाई तलक बागी बनि जात हतीं ! अबि तो वो आदमी ही बागी बन सकतु है ,जो दिन दिन भर भूखो रहि जावे़ , मीलन दौर सके । अब तो मजूर आदमीउ बागी बनके जिंदा बच सकतु है , अब बनिया-बामन ना बन सकतु बागी। है न गिरराज !“

मेरी हां जू सुनकर कृपाराम फूल जाता था ।

बातूनी तो वह अब्बल दरजे का था, कहता-‘‘ तुम्हे का बतावें गिरराज , इन ऊंची जात वारों ने सदा से खूब सताओ हमे ़ ़़ ़ ़ ़गांव में सरपंच हिकमतसिंह और भगोना पंडत तो हमे देखिके दूर से ही चिल्लावत हते कि दूरि रहो किरपाराम, तुमि में से गाड़रन की बास आवतु है । हम सदा से दूर-दूर रहे उनते, जैसे आदमी न होवें जिनावर होवें । वो तो हमाये दिन फिरे और हमपे कारसदेव की किरपा भई सो हमने अपने खानदान को नांव उछार दयो, तो अब वे ही भगोना पंडित भेन के ़़ ़ ़ हमसे कहतु हैं कि तुम हमारे सबसे प्यारे जिजमान हो किरपाराम । पुरखन को पुन्न परताप है कि हमने अपने कुल गोत को नाम ऊचो करो , नई तो हम पुरखन की नाई ,गांव में ही दबि-कुचि के मर जाते कबहुंके । बूढ़ंे पुराने कहि गये है जा घरि के लरिका जै बोलिके भरका में कूद जातु ,ताकी सात पीढ़ी को जस पूरी घाटी में फैल जातु है।

मैं मन ही मन किरपाराम की बातों में खो गया तो रघुवंशी बोला

-‘‘ अब आगे का किस्सा सुनाओ यार !‘‘

मैंने वहीं से डोर पकड़ ली , जहां से छोड़ी थी ।

बस के दरवाजे पर चादर बिछाके डाकुओं ने दस मिनिट में ही सवारियों से सारा माल-मत्ता झड़ा लिया। उधर डाकू लूट के माल की पोटली बनाने में भिढ़ गये और इधर कृपाराम ने सवारियो के पास पहुंच कर उनसे पूछताछ शुरू की

-‘‘ अब जल्दी करो सिग लोग। अपयीं-अपयीं विरादरी बताओ सबते पहले ।‘‘

लोग अपनी जाति-बिरादरी और गांव का नाम बताने लगे। घोसी, गड़रिया, कोरी ,कड़ेरा, नरवरिया और रैकवार सुनकर तो कृपाराम चुप रह जाता था । लेकिन वामन-ठाकुर और ऐसी ही कोई दूसरी जाति का आदमी होता,तो वह एक ही वाक्य बोलता था   -‘‘तू उतै बैठि मादर ़ ़ !‘‘

मुझसे भी ऐसी ही बीती । उसने बड़े क्ररूर स्वर में पूछा-‘‘तैं कौन विरादरी है रे !‘‘

‘‘मुखिया, मैं कायस्थ विरादरी को हों‘‘ मैंने अपना अधूरा परिचय दिया।

आंखों में नफरत छलकाते कृपाराम ने निर्मम स्वर में कहा-‘‘ हूं, सारे लाला है तैं ! लाला माने पटवारी़ है न ! तभई इतनों मोटो परि रहो है़़़़ ़ ़ ़तैंने हमाये भाई-बंधुन से खूब रूपया चीथो होयगो मादर ़ ़ ़ ़ चल उतै बैठि !‘‘

कुल मिला के छै आदमी छांटे गये, जिनमें मेरे अलावा मेरे बालसखा लल्ला पंडित भी फंस गये थे ।

यकायक कुछ याद आया तो कृपाराम ने अपने साथियों को नया निर्देश दिया-‘‘ अरे भैया, सवारिन के पास खायवे-पियवे को भी तो कछू सामान धरो हुइये ,ले लेउ सबते । अपने लिंगा कोंेन लुगाइयें बैठी हैं । कछु दिन इनकोई अन्न खावेंगे ।‘‘

फिर एक बार और बस की तलाशी हुयी । इस बार पैसा नहीं, रोटियां लूटीं बागियों ने। जिसके पास जो भी मिला-घी ,शकर, पूड़ी-परांठे-रोटी, पकवान-मिठाई-सब छीन लिया और एक नयी पोटली बांध ली इस पूड़ी पकवान की।

कृपाराम एक सतर्क लीडर था, उसने अपने साथियों पर एक नया हुकुम ठोंक दिया था-'' इन छै आदमिन्न के माथे पे सिग सामान धर दो और सामान पहंुचाय वे के लाने वहां तक ले चलो।'' फिर वह हमारी तरफ मुंह करकेे बोला-'' तुम सब तनिक दूर तक हमारो जो सामान ले चलो, फिर लौटि अइयो।''

यकायक वह चौंका-'' अरे तुम तो पांच आदमी हो , छठवां कहां गया?''

हम सबने भी इधर-उधर ताका , दुबला-पतला काला सा आदमी अचानक गायब था हमारे बीच से । कृपाराम के इशारे पर एकदम हरकत में बाकी बागियों ने सतर्कता से दूर-दूर नजरें फंेकना शुरू किया और सचमुच ही एक बागी को झाड़ियों के बीच वह आदमी भागता दिखाई दे गया ।

जिस बागी ने भागते आदमी को खोजा था उसने अपनी बंदूक लोड की और निशाना लगा कर 'धांय ' से एक फायर कर दिया । हम सब कंप गये -वो आदमी गया जान से !

लेकिन उसकी किस्मत अच्छी थी, गोली उसके पास से निकल गई थी ,वह हाथ ऊंचे करके अपनी जगह खड़ा हो गया था । गोली चलाने वाला बागी उधर ही दौड़ गया । हम सब की निगाहें उधर ही थीं- बागी उस आदमी को बेतहासा मार रहा था और वो आदमी जोर-जोर से रो उठा था ।

कुछ देर बाद घिसटता सा , ख्ूान में नहाया वह आदमी बागी के संग लौटा तो कृपाराम की आंखें अंगार हो गई थी-'' काहे रे ! बड़ी हिम्मत है तिहाई ! कां भगि रहो हतो ?''

'' मुखिया, बनिया आदमी हों ,आपके डरि से टट्टी लगि आई हती ।''

कृपाराम का गुस्सा उपहास में बदल गया-'' सारे , अबहीं ते पोंक छूट गई , आगे कैसे झेलेगो ?''

अब हम सब एक दूसरे से सटा कर खड़े कर दिये गये थे ।

इधर हम सबके माथे पर पोटलियां रखी जा रहीं थी और उधर कृपाराम का एक साथी बंदूक दिखाकर ड्राइवर और दूसरे स्टाफ को धमका रहा था-''हमाये निकरिवे के एक घंटा बाद तक ऐसे ही ठाड़े रहियो सारे! नहीं तो इन छैई आदमिन्न की लासि मिलेगी ।''

'' हओ मुखिया जी'' कातर स्वर में ड्राइवर बोला था, और इसके बाद कृपाराम के उस साथी ने ड्राइवर को जोरसे एक लात मार दी थी ।

ड्राइवर रिरिया उठा था और निरपेक्ष सा वह डाकू मुड़ गया था ।

मुझे जरा सा भी वजन लेकर चलने की आदत न थी , लेकिन मेरे मोटेे बदन को देख कर बागियों ने पच्चीस-तीस किलो की एक बड़ी गठरी मेरे माथे पर रख दी थी, और इतने वजन से एक पल को तो मैं गिरते गिरते बचा , लेकिन पिटने से बचने के लिए खुद को साधा मैंने और सिर्फ हिल के रह गया था । मैं ही जानता हं क्ि किस तरह स्वयं का संतुलन बनाके खड़ा रह पाया उस वक्त मैं। मुझे समझ में नही आ रहा था कि इतना वजन लेके मैं

कैसे चल पांऊगा ! मैंने कनखियों से बाकी सवारियों की ओर ताका तो अनुभव हुआ कि सबकी हालत एक जैसी है । क्षमता से ज्यादा वजन लाद देने से वे दबे से जा रहे थे सब के सब। मुझे अपना मस्तिष्क ठप्प सा होता महसूस हुआ । आसपास का सारा परिदृश्य झिलमिलाता और हिलता डुलता सा लग रहा था मुझे । हम छहों को एक लाइन में खड़ा होने को कहा गया तो एक दूसरे सेे सटकर हम ऐसे खड़े हो गये कि एक दूसरे से सांसे टकरा रहीं थी हम सबकी । कृपाराम के एक तगड़े से साथी ने हमे धमकाना शुरू किया-'' सुन लेउ तुम सब, हमारी निगाह से बचिके कभंऊ भगिवे की मति सोचियो, हम बिना हिचक गोली मार्द्देंगे भगिवे वारे में । सो तुमि लोग जिंदा रहिवो चाहो तो हम जहां तक ले चलें हमाये कहे में चलियो।''

फिर सब लोग वहां से चल पड़े थे । मुझे लग रहा था कि बस दो-चार कदम चलके ही गिर जाउगा मैं, पर ऐसा नहीं हुआ मैं पीड़ा सहता हुआ चलता रहा ।

आगे-आगे कृपाराम था और पीछे-पीछे बस की छहों सवारियां । सबके माथे पर एक-एक पोटली लदी थी । हमारे पीछे कृपाराम के साथी बागी भी पंक्ति बद्ध हो कर लम्बे लम्बे कदम रखने लगे थे ।

बागी इस ऊबड़-खाबड़ रास्ते से भली प्रकार परिचित दिख रहे थे ,सो तेज कदमों और बंदूक के वजन के बाद भी वे ठीक तरह से चल रहे थे, लेकिन सामान लादे चल रहे हम छहांे लोग कदम-कदम पर फिसल रहे थे । हर फिसलन पर पीछे चल रहे डाकुओं में से कोई न कोई हमे एक हूदा मार देता था ,और टसकता हुआ हमारा साथी फुर्ती से आगे वढ़ जाता था । पहाड़ी के ऊपर पहुंचने पर पता चला कि उनका एक बागी साथी वहां कुछ पोटलियां रखे खड़ा है । वे पोटलियां बड़ी फुर्ती से शेष बागियों ने अपने माथे पर रखीं और देखा कि एक पोटली ज्यादा है , सोे मेरे माथे पर लाद दी ।

पोटली रखते वक्त वो बागी दस सेकंड के लिए मेरे बिलकुल नजदीक आ गया था , उन कुछ सेकंड में मैंने अनुभव किया कि उस बागी के बदन से एक अजीब और असह्य सी बदबू आ रही है-दही की सड़ांध जैसी, ऐसी बदबू कि जी उमछने लगा और पेट का सारा खाया-पिया बाहर आने को उछलने लगा। मुझे ताज्जुब हुआ कि किसी जीते-जागते मनुज में से ऐसी बदबू कैसे आ सकती है भला । जाने कब से नहायाा-धोया नहीं था वह आदमी । छिः छिः मन ही मन घिन हो आयी मुझे उससे ।

ठीक उसी वक्त मेरे बगल में सामान लादे खड़े बड़ी मूंछों वाले एक अधेड़ व्यक्ति ने धीरे से निवेदन किया-''हम लौटि जायें मुखिया जी !''

उसका इतना कहना था कि उसके ठीक सामने खड़ा कृपाराम का एक तगड़ा सा बागी साथी कटखने कुत्ते सा उस पर टूट पड़ा । बंदूक के वट को सीधे उसके सीने में भाले की तरह भोंकते हुये , उसी बट से उसने उस अधेड़ आदमी के कंधों, टांगों, बांहो और सीने पर ठोकरों की ऐसी बरसात सी करी कि वह बेचारा सीधा खड़ा भी नहीं रह पाया । पीड़ा का तीखा अहसास उसके चेहरे पर दिख रहा था । और ज्यादा पीड़ा सहन नहीं कर पाया तो वह जमीन पर गिर पड़ा और बागी की तरफ हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाने लगा-''माफी दे देउ दाउ, गलती है गई ।''

बागी ने अब भी उसे नहीं छोड़ा , और दे-पर-दे लातों से उसे लतियाये जा रहा था । जमीन पर गिरा आदमी अब तो भेंाकार मारके रो उठा था ।

यह देख के बाकी लोगों का तो खून ही सूख गया । हम सब के सब नीची आंखे किये मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे कि हम बचे रहें । मारपीट का यह अंधड़ इस अधेड़ के बाद सिलसिलेवार होकर हम तक न आ पहुंचे !

लेकिन हम सबकी प्रार्थनायें व्यर्थ गयीं । उन सबने आपस में जाने क्या संकेत किया कि फिर तो मशीनगन सी चली, चारों बागी दरिन्दों की तरह हम पर टूट पड़े । उनने लातों ,घूसों और बंदूक के वटों से हम पांचों सवारियों की धुनाई शुरू कर दी । मेरे सामने खड़े डाकू ने मुझे निषाना बनाया और अपने भारी हाथ का एक बेलिहाज चपाटा मेरे गाल पर ठोक दिया । गाल पर ऐसा महसूस किया मैंने , मानों किसी ने चूल्हे में से निकाल कर अंगारे सी एक गर्म चपाती दन्न से चिपका दी हो , गाल सहलाने हाथ उठाया ही था कि मेरे सीने पर एक भारी भरकम लोहे का गोला सा टकराता महसूस हुआ , लगा कि सारी पसलियां टूट गयी होंगी, देखा कि उस बागी ने मिसमिसा कर एक मुक्का मेरे सीने में मारा था। दर्द पीने की कोषिष करता मै घुटनों के बल आगे को झुका ही था कि उस बागी ने मोटे जूते से मढ़ी अपनी लहीम-षहीम लात मेरे पेट में मार दी । फिर तो जाने कितने और कहां - कहां धौेल पड़े मुझे याद नही । सिर्फ इतना याद है कि कृपाराम लगातार चीखता जा रहा है-‘‘ सारे तुमने ऐसी हरकत करी कै अब न छूट पावोगे । तुम हमाये गुलाम बनि के रहोगे ! नाहीं तो भुस भर देंगे ।‘‘

मेरे साथियों के मुंह से कराहें निकलने लगीं । वे जितना चिल्लाते, बागी उतनी ही बेदर्दी से उनकी पिटाई करते ।

देर बाद कृपाराम का इशारा मिला तो पिटाई बंद हुयी । हम सबके चेहरे पर आतंक का ठहरा हुआ सा भाव तारी हो गया था । बदन में जगह-जगह जलन और कटने-फटने का अहसास हो रहा था ।

इधर पोटलियां लादते हुये हम लोग भयभीत हो चले थे । हमे एक भयावह आशंका परेशान करने लगी थी कि जब आरंभ में ये हाल है तो आगे क्या होगा ! इन लोगों के बारे में तो वैसे भी यह धारणा है कि ये लोग बात कम करते हैं मारते ज्यादा है । मुझे तो अखबारों में और भी जाने क्या-क्या पढ़ने को मिला है इन डाकुओं के बारे में - जैसे महीनों तक घर-परिवार से दूर रहने के मारण वासना के मारे ये डाकू न जब उत्तेजित हो जायें तो न औरत देखते हैं, न आदमी ,न बच्चा यहां तक कि जानवरों को भी ये लोग अपनी हवस का षिकार बना लेते हैं । ऐसे वहषी लोगों के साथ पता नहीं कितने दिन और कैसे गुजारना पड़ेंगे !

मेरे सिर पर फिर से टाट के बोरे की गठरी के ऊपर खाद के बोरे में बंधी पोटली रख दी गई थी, मुझे न वजन लग रहा था न भारीपन , मैं तो मन ही मन समय गुजरने की प्रतीक्षा कर रहा था ।

संवाद

हम दोनों दो घंटे के इंतजार के बाद एसपी साहब से मिल पाये ।

मन ही मन क्षोभ था कि आज हमारा स्वार्थ नहीं है , एसपी साहब से हमारा कोई काम नहीं अटका है , बल्कि खुद एसपी ने हमे बुलाया है, तब इतना इंतजार करना पड़ रहा है, अगर हमारा कोई काम होता तो इंतजार में ही शायद दो-चार दिन बैठना पड़ता ।

अचंभा तो ये था कि हमारे सामने ही एक देहाती आदमी आया ,उसने पर्दा हटा कर भीतर झांका और बिना पूछे ताछे सीधे एसपी के कमरा में घुस गया । उस आदमी का रूतबा देख कर हमने दांतो तले अंगुली दबा ली थी- एक देहाती भुच्च आदमी की इतनी हिम्मत ! जरूर ये कोई नेता-वेता होंगे । लेकिन मन ने विश्वास नही किया था-ऐसे फटीचर आदमी भला कहां से नेतागिरी कर पायेंगे ! जिनके पास खुद खाने नहीं दिख रहा, वो दूसरों को कहां से टुकड़ा डालेंगे ! तो ़ ़ ़ ! तो फिर ये गांव के कोटवार हो सकते हैं, और दूसरे कोई अहलकार हो सकते हैं , ़ ़ ़ ़लेकिन ऐसा कौन सा अहलकार होता है गांव में ! शायद कोई नहीं ।

सहसा मुझे याद आया-ये तो भेदिया ही हो सकता है- भेदिया मायने मुखबर , मुखबिर, खबरिया ।

हां , पक्के तौर पर ये मुखबिर होगा-एसपी का सीधा मुखबिर । पिताजी बताते हैं कि पुलिस में सिपाही से लेकर आई जी तक हर स्तर का कर्मचारी अपने मुखबिर रखता है । तबादला होने पर बाकायदा मुखबिर भी चार्ज में दिये जाते हैं ।

उस मुख़बिर से मुझे मन ही मन ईर्ष्या सी हुई । कितना ऊंचा रूतबा है इस मुखबिर का, देखो तो ! न परची भेजी, न इजाजत मांगी, सीधा भीतर चला गया । इस तरह की रेंठ-पेंठ है तो यह भी हो सकता है कि यह आदमी एसपी से अपने किसी भाई-भतीजे के लिए कोई नौकरी भी पा गया हो , बन्दूक तो पक्के तौर पर मिल गयी होगी इसे । किसी मारे गये डाकू की संपत्ति मे से भी यह बहुत कुछ पीला पा गया होगा । गांव मे बड़ा रौब रहता होगा इसका ।

मैं मुखबिर की जनम पत्तरी बांच रहा था कि एसपी के संतरी ने हमें टोका-'' जाओ, तुम्हे कप्तान ने बुलाया है ।''

हड़वड़ाये से हम उठे और भीतर जा पहुंचे ।

हमने सोचा था कि जैसा कि छब्बीस जनवरी की परेड में देखाथा यहां भी कलफदारकड़क वरदी लगाये कोई झउआ मूंछो वाला अधेड़ अफसर अकड़ता बैठा होगा, लेकिन हमारा अनुमान गलत साबित हुआ । भीतर बिना वरदी का फिल्मी हीरो सा दिखता एक नौजवान आदमी खूब बड़ी सी टेबिल के पार बैठा उत्सुकता से हमको ताक रहा था । मैंने अनुमान लगाया-यही एसपी होगा । लेकिन...........ऐसा जवान-अल्हड़ दिखता अनुभवहीन सा आदमी भला कहां से हमारा जिला संभाल सकता है ? शंका हुई............! तो मन ही मन शंका का निवारण भी हुआ- ़एसपी में क्या सींग लगे होते हैं, जरूर यही एसपी होगा । वरदी न पहनने से क्या होता है । ये कौन मिलिटरी के अफसर हैं कि हर पल वरदी में सजे रहें ।

हमने झुक कर उनका अभिवादन किया ।

एसपी ने हम पर अहसान सा जताते हुऐ हमारा अभिवादन स्वीकारा। मैं आगे बढ़ा ।

-'' सरकार , हमको बुलाया !''

-'' कौन हो तुम लोग ? दिखने में तो इसी ऐरिया के लगते हो , चम्बल के ही किसी गांव के हो ना!''

-'' जी सरकार ! कैसे पहचाना ?'' लल्ला पंडित हैरान थे ।

एसपी मुस्कराया -''चम्बल में ही तो सरकार लफ़्ज़ की ऐसी-तैसी हो रही है । यहां तो जो देखो वो सरकार बना फिर रहा है । जितने मन्दिर हैं वे सब सरकार हैं, जितने बाबा हैं वे सब सरकार ,जितने डाकू हैं वे सब सरकार हैं और सारे नेता वगैरह तो जाने कबसे सरकार कहे जाते हैं । खैर, छोड़िये ये सब, ़ ़ ़़़़क्या नाम है आप दोनों का ?''

-'' हुजूर मैं गिरराज और ये है लल्ला !''

-'' अच्छा ! तो तुम वो लोग हो जो पहले कभी कृपाराम घोसी की पकड़ में रहे थे । हां , तुम्हे एक खास काम से याद किया है हमने !''

-'' हुकुम करें हुजूर ! ''

-'' मुझे बताया गया है कि वो पूरा एरिया तुम्हारा ठीकठाक देखा हुआ है ,जहां घोसी गैंग अक्सर मूवमेंट में रहती है, तुम लोग तो उसे अच्छी तरह से पहचानते भी होगें न !''

-'' अब हुजूर ,पहचानने का ही तो झंझट है , कि आज हम उसकी हिट-लिस्ट में पहले नम्बर पर हैं ! वो हमे पहचानता है और हम उसे पहचानते हैं। क्या बतायें हुजूर ! पहले पुलिस के हुकम से न हम अदालत में जाके उसे पहचानते, न वो ससुरा हमे ठीक से पहचानता । हमे तो उसकी शकल से डर लगने लगा है आजकल ।''

-'' अरे, उस चूहे से मत डरो तुम लोग ! चिन्ता मत करो , पुलिस-फोर्स तुम्हारे साथ है । तुम्हारी सुरक्षा का जिम्मा अब हमारा है । बोलो क्या चाहते हो तुम लोग ?..........़किसी की नौकरी लगा दें ! या........ तुम दोनों को बंदूक के लायसेंस देदें ,बोलो ! ''

-'' हमे कुछ नहीं चहिये हुजूर । बस जान बच जाये हमारी । वो चूहा नहीं है , बड़ा दिलेर है साब ! जो ठान लेता है , करके ही दम लेता है । हमाये तो प्राण सूख रहे हैं । हमारा गांव चारों ओर से वेहड़ से घिरा है । वो जब चाहे हम लोगों की गरदन नाप लेगा । ''

-'' अब वो बेचारा खुद अपनी घड़ी गिन रहा है ,उससे क्या डरना ! हमारे एक हजार जवान उसकी तलाश में उसी बीहड़ में कूदने वाले हैं और हमारे तमाम आला अफसर भी हर रात उसी एरिया में कैंप करेंगे । हम एक खास कॅम्पेन अरेंज कर रहे हैं , इसमें सरकार को तुम्हारी मदद चाहिये !''

-'' हुजूर आदेश करें ।''

-‘‘ आप लोग पुलिस टीम को वे सारी जगह दिखायेंगे , जहां चाहे जब पहुंच कर डाकू लोग छिप जाते हैं ।.........और हां ,तुम्हारी सुरक्षा के लिए हमने ये निर्णय लिया है कि तुम लोग भी पुलिस की ड्रैस में रहोगे ,जिससे अगर कहीं आमने सामने मिल जायें तो वे डाकू तुमको पहचान न पायें । रहा सवाल तुम्हारे परिवार का , तो उधर गांव में तुम्हारी परिवार की सुरक्षा का जिम्मा भी हमारा है ,आपके घर पर हम दो सषस्त्र जवानो का पहरा बिठा देते हैं।‘‘

-‘‘ जैसी आपकी मरजी साहब ! वैसे तो उधर के बीहड़ का नाम सुनते ही हम लोगों को ज्वर सा चढ़ बैठता है । किरपाराम घोसी ऐसा सयाना है कि पुलिस की गंध उसे मीलों दूर से पता लग जाती है । जहां तक हमारी बात है, हमे पता है कि वो ढूढ़ना चाहे तो हमे सात पताल से ढूढ़ लेगा ।‘‘ अनमने से मन से मैंने पुलिस कप्तान को जंगल में जाने की सहमति दे दी ,तो लल्ला मुझे घूरता रह गया था ।

-‘‘ ये लल्ला चुप-चुप क्यों है ? कम बोलता है क्या ।‘‘ लल्ला के

चेहरे के भाव पढ़कर एसपी ने सवाल किया था ।

-‘‘ हओ साहब, हम थोड़े डरपते हैं ,खास तौर पर तबसे ,जबसे हमारी शिनाख़्ती की वजह से उन सबको सजा हुयी थी ।‘‘

-‘‘ गुड ! तुम लोग तो पहले से ही पुलिस की मदद करते रहे हो । जानते ही हो कि पुलिस की इमदाद करना हर भले नागरिक का फर्ज़ है । तुम जैेसे लोग आगे नहीं आयेंगे तो ये बदमाश लोग कैसे पकड़े जा सकते है। ‘‘

-‘ इसी फर्ज़ की वजह से तो हमारी मौत का हुक्मनामा जारी हुआ है साहब ‘ मैं कहना चाहता था किन्तु मैं चुप ही रहा,लल्ला पंडित ने जरूर सहमति में सिर हिलाया ।

-‘‘ तुम दोनों डरो मत ,हम सब तुम्हारे साथ है, जहां जरूरत पड़े तुम

दोनों सीधे मुझे फोन लगाना ।‘‘

हम कहना तो और भी बहुत कुछ चाहते थे , लेकिन इतने बड़े अफसर से कुछ कहना उचित न था सो हम सिर झुका कर उन्हे नमन किया और बाहर चले आये ।

बस में बैठते वक्त हम दोनों के मन में कितनी ष्षंकायें और कितने डर नागफनी की तरह सिर उठा रहे थे., लेकिन हम विवष से हो कर घर के लिए रवाना हो रहे थे, कि वहां जाकर सबसे ठीक से मिललें ,पता नहीं फिर किसी से मिलना हो या नहीं !

‘ये क्या अषुभ और असगुन की बातें सोच रहा हंू मैं ‘‘ सहसा मेरे मन ने स्वयं की विचार-श्रृंखला को तोड़ा, ‘अरे जब बागी जल्लादों के पास से वापस लौट आये तो ये तो हम सबके रक्षक लोग है, इनके साथ भला काहे का डर ? इन सबके भरोसे ही तो हम सब अपने घरों में निष्चिंत हो पांव फैला कर सोते हैं ।‘

घर पहुंचने तक हम इसी तर्क-वितर्क में फंसे रहे ।

यार

कृपाराम का इशारा मिला तो हम लोग झटपट चल पड़े ।

पोजीशन वही थी-आगे कृपाराम और बीच में डरे-सहमे ,मन ही मन जान की ख्ैार मनाते हम सब । इसके बाद भी हालत वही कि जिसका ऊंचा-नीचा पांव पड़ा या किसी गलती से कोई आवाज हुई कि पीछे से किसी न किसी बागी की निर्मम ठोकर खाना पड़ता हमे । हमारा वो दुबला-पतला साथी शायद भारी वज़न की वज़ह से अपना संतुलन नहीं संभाल पाया और जमीन पर गिरा ही था कि सारे बागी उसके सिर पर सवार हो उठे थे-बेचारे को ऐसी मार पड़ी थी कि वह पांव पड़ता हा-हा खाता बिलख उठा था ।

इस विपदा से कोैन बचायेगा हमे ? कहीं दूर तक इस सवाल का जवाब नही मिल रहा था । बदन पर जगह-जगह खरोंच और नग-नग में पड़ी चोटों की पीड़ा लगातार कंपा रही थी हमे । बागियों के इशारे मात्र से चल-फिर रहे थे हम ।

जरा कहीं खड़का होता, वे लोग दबे स्वर में हमे हुकुम देते-‘‘ लेट जाओ सब !‘‘

और हम पोटलियों को लद्द-पद्द गिराते जमीन पर पसर जाते ।

बागियों में से ही कोई उठकर टोह लेता और हमे इशारा करता तो हम चल पड़ते । ऐसा कई बार हुआ ।

रास्ते में एक बरगद के पेड़ के नीचे हमे खड़ा करके कृपाराम कुछ देर के लिए कहीं चला गया था और लौट कर आया तो बड़ा खुश दिख रहा था। अपने साथियों से बोला था-‘‘ अब तक ससुरी पुलिस तो बसि तकि न पहुंच पाई ,हमे कहा पकड़ेगी ?‘‘

प्रसन्न होते बागियों ने दुबारा सरपट चाल पकड़ ली थी , और उनके पीछे चलते, ऊंची-नीची पगडंडी, कंटीली-झाड़ियां छोटी-मोटी सूखी नदियां, लांघते हमारे पांव भी अनवरत उठते-गिरते रहे । कितने ताज़्जुब की बात थी, कि हमे यह पूरा रास्ता सूना और सन्नाटे से भरा मिला था । न कोई आदमज़ात दिखा, न कोई जिनावर । चलते-चलते हम सब थक गये थे ।

लल्ला पंडित कुछ ज्यादा ही पस्त हो चला था, उसने हिम्मत बांधी और धीमे स्वर में रिरयाता सा कृपाराम से बोला -‘‘ मुखिया तनिक रूक के सांस ले लेवें का ? चलो नहीं जाय रहो अब ।‘‘

उसका इतना कहना मानों ततैयों के छत्ते में हाथ डाल देना था । कृपाराम बिजली की तरह पलटा और उल्टे हाथ का एक जोरदार थप्पड़ उसने लल्ला के गाल पर रसीद कर दिया था-‘‘ मादरचो ़ ़ ़ ़ ़ ़ ़ तू बड़ो लफटेंट को जनो बन रहो हेंै । सारे भिखमंगा बामन, भीख मांगवे के काजे पचास कोस चलो जायेगो, इते नखरे बता रहो है। ‘‘

उधर लल्ला डकरा उठा था और इधर बाकी डाकुओं ने दूसरे लोगों से पूछना शुरू किया-“ को को हार गयो ? तुम ़! ़ ़ तुम्म ़ ़ ़का तुम्म हारे !“

जिससे पूछा जाता वह डर के मारे पीछे खिसक जाता और इन्कार में सिर हिला देता, पांच मिनट के इस भयानक एपीसोड के बाद हमे फिर से कूच करने का हुकुम मिला ।

पूरे दस घंटे का सफर रहा हमारा । इस बीच हम लोगों को पहले पांवों में छाले पड़े फिर अपने आप फूटे ,और उनमें असह्य पीड़ा हुयी । पिड़लियां दुखीं ,जांघें भर आयीं ।

रास्ता चलते ही कृपाराम ने रोटी वाली पोटली खोली और उसमें से चार-चार पूड़ी निकाल कर सबको पकड़ा दीं थी। भय और थकान के कारण, हम सबके मुंह का थूक तक सूख गया था और उस वक्त सूखे मुंह में आसानी से पूड़ी का कौर भी निगला नहीं जा रहा था, पर शायद भय के ही कारण चलते-चलते हम सबने किसी तरह रूखी पूड़ीयां निगली और रास्तें में मिली एक नदी में बागियों के ही तरीके से ढोर की तरह मुंह लगा के पानी पिया था , फिर नाक की सीध में चलती धर दी थी । दर्द के मारे सबका बड़ा बुरा हाल था । लेकिन हम छहों लोग भीतर ही भीतर इतने भयभीत थे कि दर्द की सिसकारी दूर रही , डकार, खांसी और अपान वायु तक नहीं छोड़ रहे थे । बस लल्ला पंडित की धीमी सी सीताराम-सीताराम की ध्वनि गूंज रही थी ।

आसमान में सांझ का भुकभुका सा उतर आया था । पांव के नीचे की मिटटी खरखराने लगी थी और इसी से मैंने गुनताड़ा लगाया कि हम इस वक्त राजस्थान की सीमा में घुस आये होंगे । शायद, उधर पुलिस मध्यप्रदेश में ही हमे खोज रही होगी ।

दूर पेड़ों का एक झुरमट दीख रहा था ,उसी झुरमुट की तरफ चलने का इशारा पाकर हम अपहृतों ने अपने डग लम्बे कर दिये । मन में आशा बंधी कि शायद अब बैठने की मुहलत मिल जाये ।

वह झुरमुट तब पचासेक कदम दूर रह गया था , कि कृपाराम का इशारा पाकर हम सब रूक गये । कृपाराम के संकेत पर उसका एक साथी मोर की सी आवाज में कोंक उठा- “ मेयो मेयो मेयो ।“

प्रतिउŸ।र में उस झुरमुट में से भी मोर कोंक उठी थी ।

थोड़ा आगे वढ़े तो पता लगा कि झुरमुट की तरह दीख रहा पेड़ों का वह झुंड एक खिरक में छाये छतनार वृक्षों का समूह है । मुझे पता था कि राजस्थान में इन्हे खिरकारी कहते हैं-इधर ऐसी जगहों का प्रचलन है । ये खिरकारी बस्ती से दूर बनायी जाती है और इनमें रहके मारवाड़ी चरवाहे अपने जानवर चराते और उनकी देखभाल करते हैं ।

खिड़क में से दो छायायें प्रकट हुयी जिनमें से एक के हाथ में लालटेन थी । शायद उनने कृपाराम गिरोह को पहचान लिया था सो आवाज गूंजी-“ जै कारसदेव !“

-“ जै कारसदेव !“

कृपाराम का जवाब पाके निश्चिंत हुए खिरकवासी की आवाज दुबारा गूंजी-“ चले आओ मुखिया ! सब ठीक है ।“

कृपाराम के इशारे पर उसका एक साथी आगे वढ़ा और खिरक में पहुंच कर वह भीतर की टोह लेने खिरकारी में चला गया । पल भर बाद जब उस बागी ने कृपाराम को चले आने का इशारा किया तो सब लोग आगे वढ़ गये ।

चार फुट ऊची कंटीली झाड़ियों की बागड़ से घिरे उस अहाते में आगे की तरफ दो झोंपड़िया बनी थीं। पीछे के लगभग सौ फुट चौड़े और दोसौ फुट लम्बे अहाते में असंख्य भेढ़ें बैठी हुई दिखीं हमे ।

वहां मौजूद दोनों लोग दिखने में मारवाड़ी चरवाहे दीख रहे थे । उन दोनों में से एक पचपन-साठ साल का अधेड़ उम्र का व्यक्ति था, जबकि दूसरा आदमी पच्चीस-तीस बरस का जवान पट्ठा था । लगता था कि वे लोग मुखिया के गिरोह के ख़ास आदमी थे, क्योंकि जब कृपाराम भीतर पहुंचा , वे लोग कृपाराम से गले लग के मिले । अधेड़ मारवाड़ी बोला -'' बड़े दिन में हमारी सुध लयी मुखिया ! कछू वारदात कर आये का ?''

''हम तो चुपि बैठे बरसात काढ़ रहे थे ,पै मोड़ी चो पुलस वालों को थोड़ी चैन मिलतु है । हरामियों ने उंगरिया कर राखी थी । हमे हाजिर कराइवे के काजें सिगरे रिश्तेदारों को डरा धमका रहे थे, सो हमने एलानिया एक बस लूटि लई और छै आदमी पकरि लाये । अब मारवाड़ी ने पहली बार पकड़ के लोगों को गहरी नज़र से देखा । मैंने भी अपने साथियों पर नजर डाली । सभी साथियों के बदन पर इस वक्त धूल में सने चीथड़े से लटक रहे थे -खुद मेरे बदन पर भी यही हाल था ।

कृपाराम ने हम सबको डांटते हुए आदेश सा दिया -'' क्या अब तक चोंपे से ठाड़े हो? धूर से लदे-लदे घिनाय नहीं रहे ! धूर झारि के बैैठि जाओ सिग ।''

आज्ञाकारी बच्चों की तरह हम सब ने अपने बदन की धूल झाड़ी और एक-एक कर जमीन में बैठने लगे ।

'' कछू रोटी-पानी को इंतजाम है ?''कृपाराम ने यकायक बूढ़े मारवाड़ी से पूछा तो उसने दांत काड़ दिये -'' नहींं मुखिया , अबई हाल पुरी बनावेंगे ।''

-'' तुम सारे रहे 'नौ खावे तेरह की भूख ।' निकारो श्याम बाबू खाना बनावे के बर्तन भाड़े।'' कृपाराम ने अपने एक साथी का नाम लिया ।

अपने हष्ट-पुष्ट बदन के कारण देखने में ही हिंसक लगता एक बागी जमीन पर बैठा और पोटलियां खोलने लगा ।

-'' तुममें से खाना कौन बना लेतु है ?'' कृपाराम ने पकड़ के लोगों की तरफ मुंह कर जरा जोर से पूछा तो सबकी घिग्घी बंध गयी ।

मैंने हिम्मत बांधी-''मुखिया मैं बना लेतु हों ।''

फिर तो लल्ला पंडित भी बोल उठा-'' हम भी मदद कर सकतु हैं मुखिया !''

-'' तो ठीक हैं ! एक भगोनी में पूरी बनाय लो, दूसरी में आलू-फालू छांेकिलो ।''

मैं पोटली से निकाले गये आलू और मसाले वगैरह संभाल कर खाना बनाने की मिसल लगाने लगा था । लल्ला पंडित आगे बढ़ा और मेरा हाथ बंटाने लगा ।

युवक मारवाड़ी उठा और भीतर से घी का कनस्तर ले आया था । श्यामबाबू ने कनस्तर में हाथ डालकर अंगुली में घी लिया और हाथ पर घिसने के बाद सूंघकर घी की परख करने लगा । शायद घी उम्दा और अच्छी क्वालिटी का था क्योंकि उसने अपने हाथ की अंजलि में घी का एक बड़ा सा लांेदा ले लिया था, और जीभ निकाल कर थोड़ा-थोड़ा चाटने लगा था ।

-''श्यामबाबू और अजै ,तुम दोऊ आजि की कमाई गिन लेऊ । तनिक पतो तो लगै कि आजि वा बस से का मिल पायो ?'' कृपाराम ने अपने दो साथियों को हुकुम दिया और स्वयं नंगी जमीन में ही पांव फैला के चित्त लेट गया । पोटलियां खोल के श्यामबाबू और अजय ने सारा सामान फैला लिया । नोट एकतरफ कर लिये और दूसरी तरफ जेवर का ढेर लगा लिया ।

मैं खाना बनाने के बीच उधर भी नज़र मार लेता था ,मैंने अनुभव किया कि श्याम बाबू और अजय ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं है , वे बीस से ज्यादा गिनती नहीं जानते थे । हर चीज एक बिसी-दो बिसी करके गिनते थे । इस कारण ठीक से गिनती नहीं कर पा रहे थे । उनने कई बार प्रयत्न कर देखा ,लेकिन रूपये नहीं गिन पाये , तो उनने सारे रूपये ज्यों के त्यों पटक दिये और दूसरा सामान देखने लगे ।

''मुखिया , रूपया तो पकड़ में से कोऊ गिनि लेवेगो , जे देख लेउ-पांच कम एक बिसी सोने की अंगूठी और दस चैनंे है , और जे आठि हाथघड़ी है ।''

सहसा कृपाराम को जाने क्या सूझा , वह दूर उकडू बैठे पकड़ के दूसरे चार लोगों की ओर मुखातिब हो पूछ बैठा-'' तुम में से ठाकुर कौन है ?''

''हम हैंे मुखिया '' बड़ी-बड़ी मूंछों वाले दो लोग डरते-डरते हाथ जोड़कर उठ खड़े हुये ।

'' चलो तुमि दोउ बनाओ सारे पूड़ी साग ! और जे दोई मिलिके रूपिया गिनेंगे ं'' कृपाराम ने फतवा जारी कर दिया ।

सौ, पचास ,दस और पांच-पांच के नांेटों की अलग-अलग गड्डी बनाके मैंने और लल्ला ने रूपये गिनना शुरू कर दिया । जब तक सब्जी बनी , तब तक नोेेट गिने जा चुके थे । मैं बोला-'' मुखिया , जे नोट तो पन्द्रह हजार चार सौ अस्सी है , माने साड़े पन्द्रह हजार रूपया ।''

''मुखिया पुरी काहे में काड़ेंगे ?'' रसोई बनाने का काम संभाल रहे लम्बे से ठाकुर ने सहसा उपस्थित होकर विनम्र और मीठी सी आवाज में पूछा तो जाने क्यो कृपाराम तिलिमिला उठा ।

''मादरचो ़ ़ ,हिना का कडा़ई दीख रही है तो खों । जा अपनी मइयो की ़़़ ़ ़ में काढ़ ले ! जा भगोनी नाय दीख रही तोखें ?''

कृपाराम आज की लूट की राशि से संतुष्ट नजर आयाा , जबकि श्यामबाबू नाराज दिख रहा था । वह बोला-'' दादा तिहारी मुखिया गिरी में सबसे बड़ो झंझट एकही है कि तुम लुगाइयों को उनकी मरजी पे छोड़ देतु

हों ! आज हम खुद लुगाइयन से जेवर उतरवा लेते तो बीस तोला सोना मिल जातो कम से कम । लुगाइयें चांदी तो बिलकुल छिपाय गयीं , वे इतनी चांदी पहने हतीं कि कम से कम पांच सेर चांदी मिल जाती !‘‘

कृपाराम हंसा -‘‘ तैं बड़ों लालची है श्याम बाबू ! अरे पगला जे पकड़ तो देख ! जे है असली माल । बीस लाख से ऊपर की गांरटी है ।‘‘

कृपाराम की यह बात पूरी होते ही सारे के सारे बागी हमे देखकर खौफनाक ढंग से हंस पड़े थे । जबकि हम छहों अपहृत व्यक्ति भीतर ही भीतर कांप उठे थे-बागियों की नजर में हममें से हरेक की कीमत साड़े तीऩ लाख है !‘‘

सबसे पहले उन दोनों ठाकुरों को हर चीज मिला कर एक एक कौर दिया गया, जो खाना बना रहे थे , फिर मुझे और लल्ला पंडित को दिया गया । हम चारों ने ही तो मिल के खाना बनाया था न , सो हमको चखा के खाने की जांच जरूरी थी । आखिर में डकैतो ने भकोसना शुुरू किया तो जिजमानी में पन्द्रह पूड़ी खाकर वीर बनने वाले लल्ला पंडित ने दांतो तले अंगुली दबा ली । बागी तो दानवों की तरह चबर-चबर करके पूड़ी पर पूड़ी निगलते जा रहेे थे । हमने अंदाज लगाया - एक-एक बागी ने पच्चीस-पच्चीस पूड़ी तो जरूर सटकाई होंगी ।

जब हम सब खाना खा रहे थे , कृपाराम हम सबको लज्जित करता सुना रहा था-‘‘ रोज- रोज ऐसी पंगत नही होने वाली हरामियो ! हो सकता है कई दिन तो सिर्फ पानी के सहारे काटना पड़ें । बागियों की जिन्दगी में ऐसे दिन हमेशा नहीं आने वाले , यहां तुम सबका बाप नहीं बैठा हम सबको रोज खाना देने वाला ।

हम सबको बड़ा बुरा लगा और इसके बाद हमे हर कौर में से कृपाराम के शरीर में से आने वाली असहय बदबू आती महसूस हुई । मन मार के हम ने आधा-अधूरा खाना खाया, वैसे भी खाना केवल इतना-सा ही बचा था कि हम आधा पेट ही खा सकते थे ।

मैं सोच रहा था कि क्या सचमुच ऐसे दिन भी आयेंगे कि हमको दिन-दिन भर खाना न मिले ! .... अब तक जैसी बीती है, उससे तो यही अंदाज लग रहा था कि कृपाराम सही बोल रहा है । यहां आते वक्त.का दृष्य याद आया मुझे........सारे बागी रास्ते में हर आहट पर घबरा जाते और जमीन में लेट जाते थे और फिर चारों ओर देखते डरते-कांपते चल पड़ते थे । ऊपर से जालिम दीखते ये लोग भीतर से कितने डरपोक हैं, यह जान कर मुझे अजीब लगा था तब।

मैंने रघुवंशी को अपना कौतूहल बताया तो उसने मेरा समर्थन ही किया-‘‘ वे साले हर वक्त अपनी मौत को लेकर डरते रहते हैं , हर आदमी पर अविश्वास करते हैं , और इसी डर से बैचेन होकर हर पल और हमेशा वे पागल कुत्ते की तरह बदहवास होकर भागते रहते है-यहां से वहां । ऐसी खुशियाली भरी नहीं है उनकी जिन्दगी ! वे तो खुद अपनी उस मौत से बचते भागते रहते हैं , जो पता नहीं कितने रूपों में उनके पीछे-पीछे दौड़ती रहती है ।‘‘

खाने के बर्तन हम सबने ही मंाज कर धोये ।

उसी खुले मैंदान में हम सबके सोने की तैयारी हुयी । अगल-बगल के कोने में दो बागी सोये, फिर बीच में खिरक वाले मारवाड़ी और एक ही जंजीर से बंधे हम सब अपहृत व्यक्ति लेटे ।

बागी तो कुछ ही देर में चरखा की तरह घरर-घरर के स्वर में अपनी नाक बजाने लगे, लेकिन हम अपहृ्त लोगों की आंखों में भला नीद कहां से आती ! हरेक की आंखों के आगें अपने घर में व्याप्त शोक का आलम दीख रहा था ।

मुझे सूझ नहीं रहा था कि मेरे घर वालों को मेरी पकड़ का कैसे पता लगा होगा ? सोचता हूं़ ़़ ़ ़ ़ शायद पुलिस ने खबर भेजी होगी , या फिर ़ ़़़़़़़ ़़यह भी हो सकता है कि कहीं सुन कर गांव वाले किसी आदमी ने आकर मेरे घर बताया हो ।

यह भी हो सकता है कि अब तक खबर ही न मिली हो । आज बस में सवार यात्रियों में से ऐसा कोई भी तो नहीं दिख रहा था, जो मुझसे से परिचित होता और मेरे घर खबर भेजता । मेरे पिता साठ साल के हैं, बचपन से ही संघर्ष किया है उनने, और वे जमाना देख चुके है। इसलिए विपत्ति की इस घड़ी में इस वक्त घर में शायद वे ही मेरी मां, युवा बहन मुन्नी और पत्नी विशाखा को धैर्य बंधा रहे होंगे । बड़े भाई शिवराज तो अपनी नौकरी वाली जगह जिला मुकाम पर होंगे, और जब खबर मिलेगी, तब घर आयेंगे ।

मेरी बड़ी बेटी बारह साल की है, और बेटा आठ साल का । मेरा बेटा सारा समय अपने बब्बा के साथ गुजारता है और उनके मुंह लग गया है । सो दोनों बच्चों को शायद पिता की याद नहीं आ रही होगी , पर पत्नी विशाखा को जरूर गहरा सदमा लगा होगा । आज तो घर में चूल्हा भी नहीं जला होगा । पढ़ौस में से किसी ने ही शायद बच्चों को कुछ खिला-पिला दिया होगा । घर के बाकी सब लोग दिन भर से भूखे होंगे । पुलिस पता नहीं कैसे कैसे सवाल पूछ रही होगी , उन सबसे !

कितनी सारी आशंकायें हो रही होंगी हरेक के मन में। और वे आषंकायें गलत कहां है ? हमको भी तो लगता है कि पता नहीं कल क्या होगा ?परसों क्या ? और आगे क्या होगा ! बागियों का कोई भरोसा थोड़ी है, पता नहीं किससे रिसा जायें औैर क्या दण्ड दे बैठें ।

चूल्हा तो शायद लल्ला पंडित,के यहां भी न जला होगा । उनके घर तो मां-बाप भी नहीं है, उनके भाई दूर राजस्थान मंे पडिताई करते हंैं । घर पर अकेली पत्नी होगी, और वो बिचारी इस आपदा से स्तब्ध हो कर आपा खो बैठी होगी, क्योंकि हद दरजे की सीधी है वह, निरक्षर तो है ही बेचारी ।

उस दिन की याद में डूबे चुप लेटे देख कर रघुवंशी को मेरी कथा का आज का अध्याय पूरा होता अनुभव हो गया था शायद, इसलिये वह बोला-‘‘अब सो जाओ भैया, कल सुनाना आगे का किस्सा !‘‘

यह सुन मुझको राहत सी महसूस हुई , मुझे लगता था कि बड़े दरोगा को किस्से-कहानी सुनाना मेरी डयूटी है, किसी दिन यदि मैने इन्कार कर दिया तो जरूर ही दूसरों की तरह गालियां सुनने मिलेंगी मुझे भी। इच्छा हुई कि एक दिन इनसे कहूं-आप भी तो कोई किस्सा सुना दो साहब ! फिर देखो क्या-क्या सुनाते है। हालांकि उनके पास भी ढेर सारे किस्से होंगे सुनाने को । अब इतने दिन की नौकरी है तो जाने कितनी तरह के मामले आये होंगे , कैसे-कैसेे प्रकरण निपटाना पड़ा होगा इन्हे । कितनी तरह के लोग मिले होंगे इन्हे । हरेक का अपना एक अलग किस्सा होगा । वैसे किस्सा सुनाना हरेक को आता भी कहां है ?

मैंने एक नजर अपने आस-पास के पुलिस सिपाहियों पर डाली तो अनुभव किया कि वे सब अपनी नजरों में बड़ा तंज लिये मुझे घूर रहे है।

मैं समझ नहीं पाता था कि पुलिस-महकमे का जितना छोटा कर्मचारी होता हैे ,उतना बदतमीज क्यों होता है ?

बदतमीज तो होता है, सिविलियन के लिए, अपराधियों के लिये उतना ही डरपोक भी होता है पुलिस का छोटा कर्मचारी । मुझे पता है, आज भी हर थाने में हजारों ऐसे वारंट रखे है जिनमें बांछित अपराधी खुले आम थाने की नाक के नीचे घूमते रहते हैं और सिपाही उन्हे फरार बताते रहते है। मजे की बात तो ये भी है कि तमाम ऐसे जनप्रतिनिधियों के नाम वारंट जारी हैं, जो पहले गुण्डागर्दी करते थे और आज अपना मवालीपन छोड़कर नेता बन गये है, लेकिन वे सब भी पुलिस रिकॉर्ड में फरार कह दिये गये है।

कौन नहीं जानता कि हर पुलिस वाला आज थाने के बजाय विजिलेंस और आरटीओ विभाग में प्रतिनियुक्ति पर जाना चाहता है । विजिलेंस में सारे विभागों पर रूतबा तो रहता ही है, जब भी आफॅत का मारा कोई फंसता है, कर्मचारी ही होता है, जो न ऐठता है, न अकड़ता है । राजनीति और अखबारबाजी तो बेचारे कर्मचारी करेंगे कहां से । वहां तो जो फंस जाये अपनी मुक्ति चाहता है, इस मुक्ति के बदले में कौन क्या ले ले , इसका कोई अंदाज नहीं । .....और फिर कोई दे नहीं तो संपत्ति खोजने के नाम पर आप जो चाहें उसके साथ बर्ताव कर डालें , बाल उखाड़ लें, घंुटने तोड़ दें, पसलियां चटका दें और आखिर में हिरासत में से भागने के नाम पर सीधा मर ही काहे न डालंे ।........कौन नही जानता कि भोेपाल के एक प्रकरण में किन्ही जैन साहब को ऐसे ही तो यातनायें दे कर मार डाला विजिलेंस वालों ने ।

रहा सवाल आर टी ओ वालों का सो उनके यहां तो पौ बारह है सबकी।

कैसा ही वाहन काहे न हो, आपको एक बार तो आरटीओ के चक्कर में में फंसना ही पड़ेगा, और जो एक बार वहां फंस गया उसका राम ही रखवाला है । वहां समय, पैसा और सम्मान के लिए कोई कजगह नहीं है। सुना है कि आरंभ में पुलिस वाले ही जाया करते थे वहां, और आज भी पुलिस का ही एक हिस्सा है आर टी ओ । अंजान जगह बने नाकों और बीच रास्ते पर खड़ी उड़नदस्ता की जीपों के पास पिटते-बिलखते दूर जगह के ड्रायवर बिना कहे बहुत कुछ कह देते हैं पुलिस वालों के बारे में ।

एक कर्मचारी होने के कारण मुझे पता है कि सरकार के सारे विभागों के नियम बदल गये लेकिन पुलिस विभाग के नियम अंग्रेजों के जमाने के है जो तब से आज भी वे के वे चले आ रहे है ।

मुख़बिर

पुलिस बल के लोग सुबह पांच बजे जागे और दैनिक क्रिया से निवृŸिा के बाद स्कूल के मैदान में पंक्तिबद्ध खड़े होकर कसरत करने लगे ।

कुछ दिन तक मुझे और लल्ला पंडित को कसरत करते जवान अजीब से लगते थे , लेकिन एक दिन हमको मुंह दबा कर हँसते देखा तो बाद रघुवंशी ने हम को सुबह-सुबह की जाने वाली कसरत के फायदे बताये तो हमने भी कसरत करना शुरू कर दी । अब तोे हमको भी आदत पड़ गयी है, सोे रोज सुबह हम भी इन लोगों के साथ कसरत करने लगे हैं ।

सुबह नौ बजे हम लोगों ने चार-चार पूड़ी और सूखे आलू खा कर आगे के लिये प्रस्थान किया ।

वो दिन बड़ा खराब बीता ।

दिन भर में न तो कहीं खाना मिला, न ही कहीं घड़ी भर को बैठने की फुरसत मिली । हम लोग दिन भर चलते रहे । रघुवंशी जी जब भी वायरलैस उठाते, हर बार डांट पड़ती । उस दिन जाने क्यों पुलिस कप्तान बहुत खफा दिख रहे थे और अपनी सारी टुकड़ीयों को सख्ती से आदेश दे रहे थे कि वे लोग आज रूकें नहीं, लगातार चलते रहे ।

रास्ते में एक जगह ढोर चराते दो चरवाहे दिखे । हेतमसिंह दीवान ने लपक कर उन्हे घेर लिया । डरपते से उन दोनों ने झुककर दीवानजी को नमस्कार किया । हेतमसिंह का स्वर हेकड़ी से भरा था-'' काहे रे, कलि रात बागी निकरे हते हिना ते, तुमने देखे का ?''

'' कतई नई सरकार ! हमने कबऊं न देखो उन्हे !''

............और इस मनाही के कारण कुपित हो उठे हेतमसिंह ने गजब की फुर्ती दिखाई, उसने अजीब सी उछलकूद करते हुए इस तरह उन दोनों चरवाहो को चार-चार हाथ रसीद करे कि मैं दांतों तले अंगुली दबा गया था ।

उस दिन कृपाराम के गिरोह के साथ घूमते वक्त ऐसे ही चार चरवाहे मिले थे तो लपककर श्यामबाबू ने उन्हे घेर कर नाम-पता और जाति वगैरह बताने का हुकम दे दिया था । वे लोग बताने लगे - हम सब चरवाहे है दाऊ ! शेरसिंह के पुरा में रहतु हैं। कृपाराम बुदबुदाया- शेरसिंह के पुरा में तो कोई आदिवासी नहीं है। यह सुना तो संषयग्रस्त श्यामबाबू ने उन चारों की तलाशी ले डाली थी ।

हालांकि उन चरवाहों के पास ऐसा कोई सामान नहीं मिला कि उन्हे पुलिस का आदमी कहा जाता फिर भी उस दिन बागियों को जाने क्यों उन पर सन्देह हो गया था तो उनने भी बेचारे चरवाहों की बड़ी बेदर्दी से पिटाई की थी । बेचारे चरवाहे ! मुझे ऐसे मज़लूमों पर खूब तरस आया ।

शाम के पांच बजे होंगे जबकि कि हम सब हमीरपुर पहंुचे । वहीं एक मुखबिर खड़ा था, पुलिस वालों ने आपस में इशारा किया-'खबरिया खडा है यहां । अब इस हरामी ने रात खराब करी अपनी। वैसे ही हम दिन भर से ऐसी-तैसी करा रहे हैं ।'

वह मुखबिर, बड़े दरोगा को एक तरफ ले गया । वे दोनों बड़ी देर तक घुसर-पुसर करते रहे ,फिर एस ए एफ के सिन्हा को भी उधर बुला लिया गया । उन तीनों ने कुछ मंत्रणा की और एकमत से जो भी तय

हुआ, बड़े दरोगा ने हुकुम सुना दिया-'चलो इस पहाड़ी के उस पार चलना है , खबर है कि वहां के एक खंडहर में कुछ बदमाश छिपे हैं ।'

दल के हर व्यक्ति में जोश जाग गया था । उन सबने अपने-अपने पिट्ठू ढीले करके एक बार फिर से कसे और थकान को नकारते हुये आगे वढ़ चले ।

दो दल बनाये गये । सामने दिख रही जंगली झाड़ों से लदी पहाड़ी को दोनों ओर से घेरते हुये हम लोग आगे वढ़े । वही चीते जैसी बेआवाज और सधे कदमों की सतर्क चाल ।

ठीक दो घंटे बाद सब लोग एक दूसरे के सामने थे , खण्डहर में आदमी तो थे लेकिन वे बागी नही थे-संपेरे थे । हां उनके डेरे में एक आदमी जरूर बंधा पड़ा था । उसे देखकर रघुवंशी को शक हुआ और संपेरों की पिटाई कर जब पूछताछ शुरू की तो पता लगा कि बंधा हुआ आदमी कोई बदमाश था जो रात को दारू पीकर उनके डेरे पर आ गया था और संपेरों की औरतों को छेड़ने लगा था ,मजबूरन संपेरों ने उस आदमी को धुन डाला और बांध दिया था । सपेरों की तलाशी में पुलिस को वहां ऐसी कोई चीज नही मिली थी , जिससे पता चलता कि आज की बात क्या, दो चार दिन पहले भी वहां कोई बागी रूका होगा , या बागीयों से उनके कोई ताल्लुक होंगे। अब उन सब पुलिस वालों की हालत देखने लायक थी । बड़े दरोगा रघुवंशी से लेकर वायरलेस ढोने वाले सिपाही तक, सबकी आंखों में मुखबिर के प्रति भीषण गुस्सा था । रघुवंशी का धैर्य जवाब दे गया ,वह दांत पीसते हुये मुखबिर पर चढ़ बैठा -'' तू सारे मादरचो... हमेशा ऐसे ही परेशान करता है , बता किधर है तेरे बाप बागी ? ''

कुछ कहने का यत्न करता मुखबिर सहम सा गया था, उसे चुप देख कर बड़े दरोगा का गुस्सा आग हो गया , उसने मुखबिर की उम्र देखी न उसकी दुबली पतली देह, बस गिरेबान पकड़ी और इस बुरी तरह से मारना शुरू किया कि मैं और लल्ला तो कंप ही उठे ।

याद आया कि बागी भी ऐसे ही करते थे, गलत खबर देने पर मुखबिरों पर सीधे हमला कर देते थे-एक साथ । मुख़बिरों की तो दोनों के सामने एक सी दशा है । बेचारे दोनों जगह से मार खाते हैं और दोनों का ही खास आदमी बन कर रहना पड़ता है उन्हे-यह तो तलवार की धार पर चलना जैसा लगता है मुझे ।

कृपाराम बताता था कि जो आदमी एकबार पुलिस के साथ चलता-फिरता या बतियाता दिख जाये ,बागी तो हमेशा उस आदमी से दूर रहते हैं । पहले मेरी समझ में नहीं आता था, कि लोग मुखबिर बनते क्यों हैं ? क्योंकि मुख़बिर बनने से जान का ख़तरा बढ़ जाता है । सूचना सही साबित न होने पर अपनी ही पार्टी से अपमान का ख़तरा तो सदा ही रहता है और समाज में प्रायः चुगलखोर कहा जाता है । लेकिन जबसे हम ज़बरन ही मुख़बिर बने पुलिस वालों के साथ घूम रहे है, तब से हमे अहसास होगया है कि जैसे बागी बनना अपने हाथ में नहीं , वैसे ही मुख़बिर बनना भी किसी की इच्छा पर निर्भर नहीं है। सबकी अपनी अपनी मजबूरियां होती हैं ।

श्यामबाबू ने तो उस मुखबिर को इतना मारा था कि बेचारा खून की उल्टी करता मर गया था और वे लोग उसकी लाश जंगल में छोड़के बेगानों की तरह यूं ही चल दिये थे । बस उस मुख़बिर का इतना सा कसूर था कि उसने किसी पकड़ लायक आसामी की हैसियत कुछ बढ़ा चढ़ा कर बता दी थी । जबकि दूसरे मुखबिर ने सही हालत स्पष्ट कर दी थी, कहा था-जिससे आप लोग पांच लाख मांग रहे हो उसकी हैसियत तो मुश्किल से पचास हजार रूपये की है ।

फिर क्या था , कृपाराम के दांये हाथ यानि कि गिरोह के कोतवाल श्याम बाबू ने पांव का जूता उतारा और साठ साल के उस बूढ़े आदमी को ऐसा मारा कि उसकी पतली देह चार-छह जूतों के बाद जमीन में बिछ गयी और वह बुरी तरह डकराने लगा , पर उन दंरिदों को दया कहां थी !

दया तो इन दरिंदों को भी नहीं है । हालांकि ये सही है कि दिन भर के थके हुये पुलिस दल के सब लोग इस खबर को सुनकर झुंझला उठे थे और गुस्सा तो मुझे और लल्ला को भी आ गया था

उसदिन रात दस बजे हम लोग अपने टारगेट वाले गांव में पहुंच सके । मजे की बात यह थी कि तो भी रघुवंशी को वायरलेस पर डांट पड़ गयी । मुखबिर के चक्कर में रास्ता छोड़कर अलग चल देने के वक्त चुप्पी के लिए हमारे दल ने वायरलेस बंद कर रखा था और इस तरह संपर्क कट जाने के कारण कंट्रोल रूम बेहद परेशान था । बाकी सारे पुलिसदलों को इस बीच खबर कर दी गयी थी कि रघुवंशी की टीम या तो कहीं रास्ता भटक गयी है , या फिर किसी चक्कर में फंस गई है।

गांव पहुंच कर गांव वालों को जगा कर भोजन बनबाया गया ।

बिस्तर पर पहुंचा तो रघुवंशी का मूड बिगड़ा हुआ था , पर वह कथा सुनना नहीं भूला, बोला '' सुनाओ गिरराज, तुम्हारी और क्या क्या ऐसी-तैसी हुयी !''

डरते-डरते मैंने बात आगे वढ़ाई ।

सुबह बड़े भोर बागी जाग गये और लतिया कर हमे जगाने लगे । दिशा मैदान से फरागत होने के लिए उनने हम दो-दो आदमियों के पांव आपस में बांध कर साथ-साथ छोड़ा । पहले तो टट्टी के लिए बैठने में एक दूसरे से हम लोगों को खूब शरम लगी , फिर पेट का दबाब और शारीरिक जरूरत से मजबूर हो कर एक दूसरे से पीठ सटाकर हम लोग किसी तरह निवृत्त हुये ।

मेरे साथ एक ठाकुर का पांव बंाध कर भेजा था बागियो ने , लौटते में मैंने उसका परिचय पूछा तो उसने बताया कि वह एक खाता-पीता किसान है। उधर के एक गांव में उसकी बहन ब्याही है । वो तोे बिचारा अपनी रिश्तेदारी में आया था कि लौटते में उस अभागी बस में सवार हो गया और बागियों के हत्थे चढ़ गया । अब बागी जो भी फिरौती मांगेगे वह देने तैयार है ।

हम सब निवृत्त हुए तो बागियों ने मारवाड़ियों से गले लगके विदा ली और तुरंत ही चलती धर दी । कल जैसी ही चाल थी हमारी , न समय का ख्याल था न दूरी का ।

दोपहर हो गई । अपहृतों के चेहरे पर भूख और थकान के चिन्ह दिखने लगे थे , लेकिन बागियों के चेहरे पर कोई शिकन न थी।

लल्ला ने हिचकते-डरते श्यामबाबू से पूछा-''दाऊ , नहायवे की नईं हो रई ?''

'' बेटी चो , तैं बड़ो पंडित है । जा इलाके में पीयवे के लाने तो पानी तलक नाय मिल रहो , नहायवे कहां ते मिलेगो ? चुप्पचाप चलो चल ,नईं तो धुंआ निकाद्दंगों पीछे ते !''

लल्ला पंडित इस जवाब से अपनी बेइज़्ज़ती महसूस करके रो पड़ा था । कृपाराम ने भी चलते-चलते बंदूक का बट जरा धीमे हाथ से लल्ला की पीठ में कोंच दिया और डांटा-''सारे लुगाइयन जैसो कहा रोय रहो है ? ज्यादा नखरे मत दिखा , अब सीधो चलो चलि !''

लेकिन खाने का समय तो बीत ही चला था न , सो घण्टे भर बाद बागी अजय ने भी भूख का इज़हार किया और चौथे बागी ने भी उसका समर्थन किया था

'' मुखिया ,अब कहूंू छाव देखिके कछू खायवे की हो जाय !''

मेरी निगाह मुखिया पर थी, मैं देखना चाहता था कि खाने के नाम पर वह अपने साथियों को किस अंदाज से डांटता है । लेकिन मुझे ताज्जुब हुआ कि बागियों की बात सुन कर कृपाराम मुसकराते हुये रूक गया था। पास में एक खंडहर दिख रहा था , उसने उधर इशारा किया , तो सब उसी तरफ बढ़ लिये ।

मैंने श्याम बाबू का संकेत पाया तो हमारे साथ चलती पोटलियों में से एक पोटली खोली । किसम-किसम के रंग,डिजाइन और भिन्न साइज की ढेर सारी पूरीयां उस पोटली में भींच के रखी हुयी थीं । कृपाराम ने दस-बारह पूरी उठाई और श्यामबाबू को दे दीं । फिर एक-एक कर उसने सबको इसी तरह पूरीयां बांटी । अन्त में खुद भी ले लीं । बांये हाथ पर एक पूड़ी रखके दांये हाथ से आधी पूड़ी तोड़ के उसने अपने मुंह में कौर डाला, तो हम सब खाने लगे ।

खंडहर के पास एक छोटे मुंह का कुंआ था । खाना हो चुका तो श्यामबाबू ने एक थैले में से लोटा-डोर निकाली । मैंने आगे वढ़ कर डोर-लोटा अपने हाथ में ले लिया और लम्बे-लम्बे हाथ पन्हार (फैला) कर पानी

खींचने लगा । इस तरह आगे वढ़ कर काम करने की मेरी आदत से कृपाराम बड़ा खुश हुआ, बोला -'' तेयो नाम का बतायो रे लाला तैंने ?''

'' मुखिया मैं गिरराज हों !''

'' गिरराज तैं कल से ऊपरी काम करेगा और सेवा-टहल को काम सारे जे ठाकुर करेंगे । जो सारो बमना रोटी बनायेगो ।''

'' जैसी तिहाई इच्छा होय मुखिया '' बोलते हुये मैं पुलकित था ।

'' तुम सब सुनो , हम हुकम मानवे वारे को ठीक रखतु हैं ,और सयाने की मइया चो ़़ ़ देते हैं। हमारे मन बड़े कर्रे हैं । हम चारऊ बागीउ कैसे बने ! पतो हैंं तुम सबको ?''

'' नहीं मुखिया हम नहीं जान्तु हैं, हमे सुनाओ ।''

'' सबते पहले हमाये नाम जानि लो-मेयो नाम किरपाराम है,जो मंझलो श्यामबाबू , संझलो अजेराम और जो चौथे को नाम कालीचरण है । हम चारऊ सगे भैया हैं । भयो ऐसा कै हमाये एक चाचा बिन ब्याहे बुढ़ाय गये हते सो काउ की सलाह मानिके दूसरिन्ह की नाईं, खुदउ धौलपुर से एक औरत खरीद लाये थे । औरत पहले ते बिगड़ी थी सो हमाये बूढ़े चाचा से मिलतई उनकी सकल देखके वा को मन हमाये चाचा से फिर गयो । हमाये एक दूसरे चाचा रडुआ और जवान हत हते औरत देखके उनको मन न मानों सो मौका देखके उनने वा औरत से पहले दिन ते ही गलत संबंध बना लिये और दूसरे दोस्त-यारों से भी संबंध कराय दये फिर मौका देख के गांव के एक पराये आदमी के संगे वा औरतउ भजा दयी । ''

'' जल्दी पतो लग गओ सो वा औरत पकड़ी गयी और सबिको सच्ची बात पता लगी ,कै भगायवे में छोटे चाचा को हाथि है । बड़ेन ने तो कछू न कहीे पै हमने पूछी तो वे बतायवे की जगह हमसे फिरंट हो गये । हमने बहुत समझायो अकेले वे न माने और मोेकूं मइयो की गाली दे डारी । हमतो वैसे ही हिकमतसिंह की गुंडागरदी से परेशान हत हते ऊपर से चाचा ने दे डारी मताई की गाली । हमको गाली सहन न भयी और हम चारई भैया उन छोटे चाचा को मारिके फरार हैे गये । सुनावे को मतलब ये कै हम बड़े कसाई है , हम में दया ममता बिलकुल नाने । जब चाचा को मारि सकत तो दूसरो आदमी हमाये लाने भेढ़-बकरिया लगतु है ।''

श्यामबाबू ने कृपाराम की बात को आगे बढ़ाया -'' कसाई का, हम तो राक्षस हैं -राक्षस। जे बड़े-बड़े बाल, महिनन नो बिना नहाय-धोय के रहिबो ,रात-दिन देवी भवानी की पूजा और जा बंदूक भवानी को सदा को संग ।''

'' एक बात को ख्याल करियो, कै अपनी चाची की हरकत के बाद से हम औरतनि से बहुत दूर रहतु है । तुम भी जाने कितने दिन तक अब हम से बंध गये हो । हमाओ कहबो को मतलब बस इतनो सो है, कै तुम सब भूलके भी कबहुं लुगाई-बाजी में मत पड़ियो, हम बहुत नफरत करतु है लुगाई-बाज आदमी से !''

लंबू ठाकुर ने देखा कि बागी आज खुल के बात कर रहे हैं ,तो हाथ जोड़ के बोला-''मुखिया, हमाये घर खबरि भेजि दो न ,कै कित्ते रूपये भिजवाने हैं ?''

''सबर करि प्यारे , हमे पतो है कै तू सबिसे ज्यादा पैसे वारो है । पहले तो हम पुलस से बचके कछू दिन काउ गांव में काढ़ि लें फिर तुम्हाये घर से पैसा मंगायेंगे।'' कृपाराम डरावनी हंसी हंसके बोला था ।

हम लोग खा पी कर वहीं लेट गये । लेकिन सांझ का भुकभुका फैलने लगा तो वे सब बड़ी फुर्ती से उठे और हम सबको लेकर वहां से चल पड़े । दो घंटा तेज-तेज चलने के बाद हम लोग एक पहाड़ी के शिखर पर थे ।

पोटली में रखा तह किया हुआ रखा कल वाला पुराना तिरपाल निकाल कर बिछाया गया। श्यामबाबू ने सब अपहृतों को एक सांकल से आपस में बांधा फिर एक-एक बागी दोनों तरफ लिटा के पकड़ के लोगों को बीच में सुलाया । एक बागी पहरे पर रहा ।

आधी रात तक अपहृतों को नींद नहीं आयी । जबकि बागी तो कल की तरह लेटते ही तुरंत खर्राटे भरने लगे थे ।

सुबह दातुन-कुल्ला करके अजयराम ने गेंहू के कच्चे आटे में शक्कर और घी मिला के ढेर सारे लड्डू बनाये । लल्ला ने पूछा तो श्यामबाबू ने बताया कि ये कचोंदा हैं ।

ये थे कचोंदा के लड्डू । हम लोगों ने पहली बार देखे थे यह लड्डू । बागियों ने पांच-पांच, सात-सात लड्डू फटकारे, फिर पकड़ के लोगों को खाने का हुकुम दिया । मुझे और लल्ला को भला कच्चा आटा कहां से सुहाता ? सो हमने हाथ जोड़कर कचोंदा खाने से मना किया, हमे देखकर ठाकुर भी नटने लगे ।

उनकी देखा-देखी बाकी दोनों ने इन्कार किया तो श्यामबाबू और अजयराम बिगड़ पड़े । गालीयां देकर उन दोनों ने हम छहों लोगों को चार-चार लड्डू खाने को विवश किया । लेकिन कचोंदा इसके बाद भी बचा था सो बाकी बचे कचोंदा को बागियों ने ही सटकाया औैर हाथ झाड़ कर बैठ गये । अपहृतों नेे पोटलियां बांधी ,और खुद ही अपने सिर पर लाद कर खड़े हो गये ।

'' निराट कच्चे आटे के लड्डू पचत कैसे हुइयें !'' बूढ़े सिपाही इमरतलाल की आंखें बिस्मय से फैल रही ं थी ।

'' अरे दाऊ , खूब पचत भी हते और दिन भर तरावट भी रहत हती । पक्की गिजा रहतु है कचोंदा में !'' मैं कचोंदा की बात करते वक्त महसूस कर रहा था मानो कुछ देर बाद हमारी कचोंदा के लड्डू की ही पंगत होने वाली है । बाद के दिनों में तो यही कचोंदा मुझे सबसे प्रिय व्यंजन लगने लगा था जो मैं घर लौटकर भी कई दिनों तक रोज सुबह खाता रहा ।

कचोंदा का लालच छोड़ कर मैने कहानी आगे वढ़ाई ।

हम लोग पहाड़ी से नीचे उतरे । सामने की पंगडंडी से दूधवालों की चार-पांच साइकिलें आती दिख रही थीं । बागी उन्हे देखकर रूके, तो दूधियों की तो हालत ही खराब हो गयी । डरते कांपते वे दूर ही रूक गये थे । श्यामबाबू ने आवाज देकर उन्हे आश्वस्त किया -'' डरो मत सारे हो, हमाये ढिंग आओ और बस दूध पिला दो ।''

मैंने देखा कि दूध का केन खुलते ही चारांे बागी दूण्ध पीने के लिए भूखे बंगाली से टूट पड़े । कल से हम देख रहे थे कि दूध-घी के लिये बागी लोग सदा ही भूखे रहते हैं ।

सबसे पहले बागियों ने जी भर के दूध चसका । फिर दरियादिली दिखाते हुये हम अपहृतांें को भी दूध पीने की अनुमति दे दी ।

हम सबने भी अघा के दूध पिया । अब दूधिये मुक्त थे-इस निर्देश के साथ कि उनकी बोटी-बोटी काहे न कट जाये , पुलिस को वे कभी न बतायेंगे कि कृपाराम घोसी कभी उनसे मिला भी था ।

कृपाराम ने आसमान में चमकते सूरज को देखकर दिशा का अनुमान लगाया और दक्षिण दिशा की ओर बढ़ लिये ।

चलते-चलते मुझे लगा कि लल्ला कुछ अनमना सा है । मैंने सबको सुनाते हुये उससेे जरा ऊंची आवाज में पूछा-‘‘ काये पंडतजी , तबियत बिगरि रही है का ?‘‘

रूआंसा सा होते हुये लल्ला बोला-‘‘ गिरराज भैया , मरे जा रहे हैं । बुखार चढ़ि आयो ।‘‘

‘‘ मक्कर मति बनाय सारे । ऐसो बुखाार उतारेगें कि झंझटई मिटि जायेगो ।‘‘ श्यामबाबू बीच में कूद कर लल्ला को डांटते हुये बोला , तो लल्ला रो ही पड़ा । लेकिन वहां कौन बैठा था जो उसे पुचकारता या रोने सेे रोकता ! मैंें भी गूंगा बना चलता रहा । बाकी अपहृत भी चुप रहे ।

मैंने थोड़ी देर बाद हिम्मत करके कृपाराम से चिरौरी की -‘‘ मुखिया तिहाई इजाजत मिले तो आसपास के काउ गाम में से दवाई ले आवें हम !‘‘

‘‘ दवाई !‘‘

‘‘ अब हारी-बीमारी तो लगी ही रहतु है ! आज लल्ला पंडित बीमार है ,कल हम है सकत , परसों कोऊ औऱ ़ ़ मतलब जो कै कछू दवाई अपन को संग में रखिवो चाहिये।‘‘

‘‘ तै जानत है दवाई के नाम ?‘‘

‘‘हां काम चलाइवे के लाइक तो खूब जान्तु हैं !‘‘

‘‘तो ठीक है ,कल दूधियन ते मंगाइ लेंगे ।‘‘

‘‘कलि नौ तो जे लल्ला पंडित मरि जायेंगे ।‘‘

‘‘अरे ऐसे ना मरि रहे !‘‘ निरपेक्ष भाव से मुझे समझाते हुये कृपाराम हंसा और उसने लल्ला की पीठ पर एक जोरदार धौल जमा दी । लल्ला कराह के रह गया । कृपाराम ने उसका बदन छुआ तो उसे सचमुच लल्ला के बदन मंे बुखार महसूस हुआ । उसने पूरी टीम को रूकने का इशारा किया ।

मैंने देखा कि कृपाराम को जड़ी-बूटियों का भी पर्यांप्त ज्ञान है ,वह एक मिनट तक खड़ा-खड़ा कुछ विचार करता रहा फिर उसने आसपास की वनस्पति को देखना आरंभ किया और यहां से वहां तक ढूढ़ता चला गया । यकायक एक झाड़ी में से कुछ पत्ते तोड़े ,उन्हे मसला फिर मुंह में रख लिया , और चुभलाने लगा ।

अगले ही पल उसने वे पत्ता थूक दिये और लम्बू ठाकुर की ओर देख कर उन्हे हुकुम किया -'' जल्दी से जा बेल के कछू पत्ता तोरि ले रे ठाकुर ,और आग जलाइ के तनिक सो काढ़ो बनाइ ले, सारे ।''

काढ़ा पीते वक्त लल्ला कभी आंख मूंदता और कभी नाक सिकोड़ कर बुरा सा मुंह बना रहा था । फिर वह करवट लेकर आंख मूंद कर लेट गया था । मैं उसके पास जा बैठा और उसके सिर पर हाथ फेरने लगा था ।

दस मिनट में ही दवा का असर दिखने लगा । लल्ला को गहरा पसीना छलछला आया । पहले तो वह परेशान सा रहा फिर जब बुखार भी उतरता सा दिखा तो वो निश्चिंत होने लगा ।

कृपाराम भी खुश दिखा।

लल्ला के माथे पर हाथ फेरते हुये वह बोला-''पंडत, हम पाप तो करि रहे हैं, तेये जैसे भले आदिमी को अपने संगे घसीटि के । पै हमायी मजबूरी है । छमा करिये रे लला !''

लल्ला की आखें भीग उठीं , दिल हलकान हो गया और वह कृपाराम का हाथ अपने दोनों हाथों में पकड़ के सुबकियां भर कर रो उठा । वातावरण भारी हो चला था ।

श्यामबाबू बड़ा निर्मम है । उसने इस भावुकता को तोड़ा-'' चलो, अब सबि लोग तनिक जल्दी डग धरि लो । दो दिन हम सुरपुरा में आराम करेंगे ।''

मन मारके लल्ला भी उठा और सबके पीछे-पीछे धीमे कदमों से चल पड़ा अलबत्ता लल्ला के सिर पर रखी वजनदार पोटली अब कालीचरण के सिर पर थी ।

लल्ला पंडित सचमुच बड़े नाजुक हैं । अभी पुलिस पारटी के साथ हम लोगों ने बीहड़ की ऊंची नीची पहाड़ियों और भरकों में भटकना शुरू किया था तो थकान के मारे पहले ही दिन लल्ला को बुखार आ गया था । रस्ता चलते मैंने इसकी सूचना रघुवंशी को दी तो वह खीझ उठा था-'' यह आदमी सचमुच बड़ा हरामी है साला । जरा सी मेहनत पड़ी कि फैल जाता है, कभी बुखार चढ़ा लेगा तो कभी रोटी के लिये रोयेगा ।''

टीम के क्वार्टर मास्टर ने लल्ला पंडित को दो-गोली पानी से निगलने को दीं थ्ािी तब , और पांचेक मिनट विश्राम भी किया था सबने । तब भी गोलियों की वजह से लल्ला पंडित का बुखार उतर गया था और दरोगा ने तुरंत ही सबको मार्च करने का हुकम दे दिया था ।

सुरपुरा गांव में कृपाराम के गिरोह के आने की पहले से ही सूचना थी शायद, क्योंकि जब हम पहुंचे सबके लिये खाना बन रहा था । गांव के स्कूल के अहाते में बैठे कई लोग हमारा इंतजार कर रहे थे । कृपाराम के पहंचने पर वे लोग बड़े खुश हुये और उनने पूरे गिरोह से भुजा भरके भेंट-क्वारें की। कृपाराम उनसे बच्चों, भाई-बंधुओं ,रिश्तेदारों और समधियों तक की कुशल क्षेम पूछता रहा ।

गांव वाले कृपाराम की मुख्य पंसंद जानते थे शायद । एक पढ़ा-लिखा सा आदमी अपने हाथ में ग्वालियर से छपने वाले भास्कर, जागरण, नवभारत, आचरण और ऐसे तमाम दूसरे दैनिक साप्ताहिक अखबारों का पुलिन्दा लिये खड़ा था ,जब सबसे बातचीत निपट गई तो वह कृपाराम से बोला-'' मुखिया, जि हैं तिहाई वारदात के बाद के अखबार । सब मंगाय लये कस्बा ते ं''

कृपाराम की आंखें चमक उठीं उसने बड़े उत्साह से वो पुलिंदा अपने हाथ में ले लिया फिर अकड़ के गर्व से गरदन तान ली । वह उत्सुकता से आंखें फैलाते हुए वे सब अखबार फैला-फैला कर देखने लगा । फिर शायद कुछ याद आया तो मुझसे बोला-'' मोटा लाला, बांच तो तिहाये अखबार वारे हमारे लाने का छाप रहे हैं ?''

मैंने अखबारों का पुलिंदा हाथ में लिया और अपने पास रख लिया । फिर एक एक अखबार उठा कर जोर से पढ़ने लगा ।

एक अखबार में खबर इस तरह थी-

घोसी गिरोह ने छै लोग अगुवा किये: पुलिस को बड़ी चुनौती

मुड़कट्टा की घाटी /चम्बल /(निप्र) एक लम्बे समय से चुपचाप रह कर समय काट रहे कृपाराम गिरोह ने एक बड़ी वारदात को अंजाम देकर न केवल अपनी उपस्थिति प्रकट की है बल्कि इससे पुलिस को भी एक चुनौती फेंक दी है । कल सुबह मुड़कट्टा की घाटी से नीचे उतरती एक बस को रोककर कृपाराम ने बस की सवारियों को दो घंटे तक खूब लूटा और छै सवारियों को अगवा भी कर लिया है ,मजे की बात यह है कि यह छहों सवारियां सवर्ण जाति की हैं । पुलिस के सामने इन सवारियों को छुड़ाने की समस्या एक बड़ी चुनौती के रूप में आकर उपस्थित हुई है, देखना है कि अवर्ण-सवर्ण के आपसी द्वंद्व में उलझे इस अपहरण कांड से पुलिस किस तरह निपटती है ।

एक अन्य अखबार में समाचार इस प्रकार था ।

सवर्ण जातियों के खिलाफ घोसी ने बिगुल फंूका: छह सवर्ण अपहृत

मुड़कट्टा की घाटी /चम्बल /(डाक संवाददाता) चम्बल की घाटी में युगों से चली आ रही वर्ग सघर्ष्। की लड़ाई अब वर्ण संघषर्ा में बदलती दिखाइ्र दे रही है । सवर्णो के उत्पीड़न की वजह से बीहड़ में कूदने वाले बागी कृपाराम घोसी ने सवर्ण जातियों के खिलाफ एक बार फिर युद्ध का बिगुल फंूक दिया है । मुड़कट्टा की घाटी से गुजर रही एक नियमित बस को रोक कर कृपाराम गिरोह ने कल तड़के बस में सवार उन छै सवर्ण लोगों को अपहृत कर लिया जो दुर्भाग्य से बस में यात्रा कर रहे थे । चूंकि कृपाराम सवर्ण लोगों के खिलाफ है, इस कारण अपहृत लोगों की जान खतरे में है । अपहृतों की वापसी उनके परिजनों द्वारा चुकायी जाने वाली फिरौती या कृपाराम की दया पर निर्भर है ,अन्यथा पुलिस के मुखबिर तंत्र की नाकामयावी इसी से प्रकट होती है कि वह अपहरण के बीस घंटे बाद तक घटनास्थल पर नही पहुंच सकी ।

इस घटना से कई मुददे उभर कर आये हैं-पहला तो ये कि कृपाराम घोसी का मुखबिर तंत्र पुलिस के मुखबिर तंत्र की तुलना में ज्यादा ताकतवर है, तभी वह पिन-प्वाइंट सूचना प्राप्त करके अपहरण कर जाता है । दूसरा यह कि राजनीति में पिछड़े और दलित वर्ग के उदय होने के अंदाज में चंबल के डाकू वर्ग में भी अगड़े पिछड़े वर्ग का संघर्ष्। अपनी जड़ जमाने लगा है । मजे की बात यह है कि सवर्ण कही जाने वाली जातियों का एक भी डाकू इस वक्त

चम्बल घाटी में मौजूद नही है, इसलिए इस अपहरण के बदले मंे घोसियों के अपहरण की कोई संभावना मौजूद नहीं है। इस वक्त चम्बल में पिछड़े औेर दलित वर्ग के गिरोहों का एक छत्र राज्य कायम हो चुका है ।

तीसरे अखबार ने इस खबर को चुनाव कार्य से जोड़ते हुूए कुछ अलग ढंग से छापा था-

चुनाव परिदृश्य मे नया मोड़: घोसी गिरोह ने प्रचार शुरू किया

मुड़कट्टा की घाटी /चंबल / चुनाव परिदृश्य में घोसी गिरोह ने एक नये मोड़ को अंजाम दिया है , एक पार्टी विशेष के पक्ष में प्रचार शुरू करते हुए डाकू कृपाराम घोसी ने लोगों को गोलबंद करना शुरू कर दिया हे । उसके इस अभियान का विरोध कर रहे विरोधी दल के छह कार्यकर्ताओं को उसने भरी बस से अपहृत कर लिया है। इस घटना के एक प्रत्यक्ष दर्शी ने बताया कि अपहृत लोगों को जानवर की तरह हांक कर ले जाने से पूर्व्र बस की सवारियों से कृपाराम ने बाकायदा अपने दल के पक्ष में नारे लगवाये । इस घटना से प्रकट होता है कि डाकू लोग अब राजनीति में प्रवेश के लिये तत्पर है । राजनीति वेत्ताओं का कहना है कि आरंभ में अपने राजैेतिक आकाओं के लिए काम करने के बाद वे समय आने पर धूमधाम से राजनीति में प्रवेश करेंगे । इस बात में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये कि चंम्बल घाटी में हथियार लेकर पुलिस के आगे आगे जान की चिंता में भाग रहे इन डाकुओं को हम आने वाले युग में पुलिस के पीछे पीछे किसी जनप्रतिनिधि के रूप में शान से सफर करते पायेंगे औेर हमारे संविधानवेत्ता इस बेतुके परिवर्तन औेर बेतुकी वर्ग क्रांति के लिए कुछ न कर पायेंगे, बल्कि इस अकल्पनीय दृश्य को देखकर वे अपना सिर धुनते नजर आयेंगे।

इस घटना को अलग-अलग नजरिये से छपने वाली खबरों और बाद की पुलिस कार्यवाही से भरे अखबार बांचते फिर उसकी प्रतिक्रिया सुनते देर रात हम लोग स्कूल के अहाते मंे अपने बिस्तर पर पहुचे । रोज के क्रम से अपहृतांे के पांव में जंजीर बांधी गई , और सब सो गये ।

कृपाराम और श्यामबाबू का इस तरह अपने बारे में छपी अखबार की खबरों के प्रति बेतहाषा मोह देख कर मुझे अखबारो में छपी यह संभावना सच लग रही थी कि वे दोनों जल्दी ही राजनीति में दखल देना शुरू कर देंेगे ।

मुझ को चुप देखकर रघुवंशी ने टोका -‘‘कहा सोच रहो है मोंेटा लाला, अब आगे का किस्सा सुना।‘‘

और मैं दुबारा शुरू हो गया ।

मेहमान

तब आधी रात हुई होगी कि यकायक तेज रोशनी से पूरा अहाता भर उठा । किसी वाहन की हैड-लाइट रोशनी थी वो । बागी बड़ी कच्ची नींद सोते थे सो जब तक हमलोग उठतें, तब तक तो कृपाराम और उसके सारे साथी जाग कर लेटे ही लेटे अपनी बंदूकें संभ्ाल कर पोजीशन ले चुके थ्ो ।

उधर से आवाज आई -'' कृपाराम ,गोली मत चलइयो, हम हैं मास्टर !''

'' पहले उजाला बंद करो !'' कृपाराम संशय में था शायद ।

वाहन की हैेड लाइट बंद हुयी और उधर से एक छाया सी प्रकट हुयी ,कृपाराम ने ऊंची आवाज में उस आदमी से बोला-'' मास्टर ,तुम को कैसे पता लगा कि हम यहां है ? तुम यहां कैसे आ गये ?''

'' तुम्हारी खबरें तो अखबारन से पता लग जातु हैं मुखिया !''

वह व्यक्ति बहुत निकट आ चुका था और बड़ा निश्चिंत दिख रहा था, पर गिरोह अभी भी संशंकित था । बिलकुल निकट आने पर कृपाराम ने पूरी तरह उसे पहचाना तो वह उठा और उसे अपने पास ही बिठा लिया - '' कोई धोखा तो नहीं है मास्टर ?'

मास्टर शायद झल्ला उठा था, सो बोला -'' अब तुम्हई सोच लो । तनिक देर में पुलिस आई जा रही है, सो जांचते रहियो, हम तो चले ।''

'' मास्टर तुम गुस्सा जल्दी खाय जात हो । अब बोलो का बात है ?''

'' पुलिस ने इस बार राजस्थान की पुलिस के साथ मिल के तुम्हे घेरवे की तैेयारी करी है ,सो घंटा दो घंटा में यहां छापा परिवे वारो है । हम जीप लाये हैं, चलो निकरि चलो जल्दी से ।''

फिर तो जैसे बिजली सी चमकी। बागियों की फुर्ती देखते ही बनते थी उस वक्त। आनन-फानन में सारी पोटलियां बांधी गयी और जीप में लाद दी गयीं , और हम सब लोग जीप में जा लदे । जीप की भीतर की मंदी सी रोशनी में हम सबने मास्टर को देखा-सांवला सा गठीले बदन का ,पचासेक साल का मास्टर नामक वह आदमी अपनी छोटी-तराशी सी तीखी मूंछों, और बसंती रंग के बड़े से साफे के कारण तगड़ा आदमी दिखता था, लेकिन गर्दन के दुबलेपन से उसके कमजोर शरीर का सहज अहसास हो जाता था । मैं अंदाज लगाने लगा, कि यह आदमी मास्टर क्यों कहा जाता है ? या तो यह पहले किसी स्कूल का मास्टर रहा होगा , या फिर बदमाशी का मास्टर रहा होगा शायद । जो भी हो, इस वक्त तो यह बागियों का संरक्षक और निकट संबंधी सा दिख रहा है ।

तीन घंटे की तूफानी यात्रा के बाद गाड़ी रूकी ,तो हमने देखा कि हम किसी बस्ती से दूर जंगल में बसी खिरकारी के आंगन में खड़े हैं । चारों ओर दस-दस फिट ऊंची चहार दिवारी से घिरी वह इस वक्त सन्नाटे में डूबी थी-मानों उसमें आदमियों का नहीं भूत-प्रेतों का निवास हो ।

हम छहों को बन्दूकों के घेरे में बड़े ऐहतियात से भीतर ले जाया गया । भीतर ही नहीं बल्कि सीधे तहखाने में ले जाया गया हमे । एक खूब बड़ा सा हॉल था वह, जिसे शायद जेलखाने के उद्देश्य से ही बनाया गया था । ऊपर रोशनदान बने थे और एक कोने में बना था बाथरूम-लेट्रिन ।

हम लोग जाकर नीचे ज़मीन पर बैठ गये । जीप में तीन घंटे तक झुके झुके बैठे रहने के कारण हम सबकी कमर अकड़ गयी थी । जब छहों अकेले हुये तो लंबी सांस लेते हुये हम लोग जमीन पर पसर गये । हम सबकी आंखों में नींद मड़राने लगी थी, थकान के कारण ।

दिन भर ऐसे ही सोते-जागते बीता । शाम को हमे जो खाना मिला वह रूखा-सूखा ,स्वादहीन और बासा खाना था ।

वो रात बड़ी बैचेनी में बीती । आगे क्या होगा, क्या यहां बंद रहकर ही लम्बा समय बिताना होगा हमे ! प्रश्न रात भर परेशान करते रहे हमे । न नींद आ रही थी, न बदन में भीतर तक प्रवेश कर चुकी थकान से राहत मिल रही थी । लगातार दो दिनों से चालीस-चालीस किलोमीटर तक चलना पड़ रहा था हमे ।

सुबह हम लोग जबरन जगा दिये गये । बंदूक ताने खड़े े अजय के बाजू में खड़ा श्यामबाबू हमे लातों से रोंद रहा था-‘‘ सुन लेओ रे तुम लोग , सारे ऐसे घोड़े बेच के मत सोवो । यहां मालिक नहीं हो, गुलाम हो तिम। वो तो किस्मत बारे हो के मास्टर की खिरकारी में आराम करोगे ! नहीं तो कोई ऐसे घर में बिड़े होते कै हंगवे-मूतवे तरस जाते । हमि तो जा रहे हैं इते से । तुम याद राखियों ,कै इते तुम्हारी हर हरकत पर मास्टर की नजर रहेगी । सो चुपि चापि समय काटियो और बिनको हुकम मानियो, नहीं तो मास्टर हमते भी ज्यादा ज़ालिम है । बिना कहे ही गोली माद्देगो ।‘‘

अजय और श्यामबाबू के जाने के बाद कृपाराम नीचे उतरा ,उसके हाथ में एक पोटली थी । वह पोटली उसने मेरी ओर उछाल दी

मैंने पोटली खोली, उसमें बासी कूसी रोटी गंधा रही थीं, जेसे किसी दावत के बाद पततलनों से उठाई गई जूठन हो।

अब कृपाराम ने अपनी बगल में दबा रखा अखबारों का एक पुलिंदा निकाला और हमारे सामने ही बैठते हुए मुझसे बोला-‘‘ देख तो रे लाला, तुम्हारी तलाश में पुलस का-का ठठ करम कर रही है ! तनिक बांच के सुना, कै कहा-कहा मर्दानगी दिखा डारी उनने ।‘‘

मैने अखबार पढ़ना ष्आरंभ किया । एक में लिखा था-

पुलिस ने घोसी गिरोह पर षिकंजा कसा: रेत खदान पर छापा

गिदवारी ,मंगलवार (निप्र) मुड़कट्टा की घाटी से एक बस से छै लोगों को अगुवा करके बीहड़ में चम्पत हुए कृपाराम घोसी गिरोह की तलाष में चम्बल रेंज की पुलिस पूरी तैयारी से बीहड़ में जुट गई है । गिरोह की तलाष में एक रेत खदान पर छापा मारा गया है े, जहां बागी कभी-कभार आकर आसरा लिया करते थे ।

उल्लेखनीय है कि यह रेत खदान कृपाराम के एक रिष्तेदार द्वारा खनिज विभाग से ठेका लेकर चलाई जा रही है, और चम्बल नदी के उन घाटों से भी यह ठेकेदार रेत निकाल रहा है,जिनका ठेका किसी को नहीं े दिया गया है, अर्थात जो खदान गवर्नमैंट क्वेरी के रूप में लोक निर्माण विभाग , ग्रामीण यां ़ित्रकी, लोक स्वास्थ्य यां ़ित्रकी

और जल संसाधन (सिंचाई) विभाग के लिए आरक्षित की गई है । ठेकेदार ने नदी के किनारे ही अपना एक बड़ा कैम्प बना रखा है, जिसमें कई डम्फर, टेक्टर और टक खड़े रहते है। ठेकेदार के दर्जनों कर्मचारियों के अलावा वाहनों के चालक और क्लीनर मिला कर वक्त इस कैम्प में एक सैकड़ा से ज्यादा आदमी मौजूद रहते है, जो हर बक्त गैर कानूनी हथियारों से लैस रहते है। इस कारण आम आदमी और सरकारी कारिन्दे वहां पहुंचने में हिचकते है। पुलिस ने रेत खदान के इस ठेेकेदार के कैम्प से भारी असलहा और सरकारी खनिज से भरे कई वाहन जप्त किये है । लेकिन इतनी कवायद का पुलिस को कोई लाभ नहीं मिला, कृपाराम गिरोह पिछले कई महीनों से इस जगह पर नहीं आया है । इस कारण हताशा में घिरे पुलिस दल ने लगभग एक दर्जन आदमियों को अपने साथ बिठा लिया है और चार वाहन भी कैम्पस से उठाकर थाने में खड़े कर दिये है।

एक दूसरे अखबार में पुलिस की मषक्कत का एक दूसरा आयाम लिखा गया था-

घोसी गिरोह की तलाष में चरवाहे पकड़े: पुलिस की सर्च आरंभ

मर्दनसिंह का पुरा , मंगलवार । लम्बे सन्नाटे के बाद एक जोरदार वारदात करके सनसनी फैलाने वाले कृपाराम घोसी गिरोह की तलाष में पुलिस ने सर्च आरंभ कर दी है । पुलिस के तमाम आला अधिकारी अपने आफिस छोड़कर जंग्रलों में रात बिता रहे है और कृपाराम घोसी गिरोकह को इस तरह तलाष कर रहे है जैसे वह रूप् बदल कर कहीं छिप गया हो । जंगल और बीहड़ों में स्वछंद विचरने वाले चरवाहों से भ्ाेाी पुलिस दल ने सघन पूछताछ आरंभ कर दी है, और सन्देह होने पर चार चरवाहों को अपने साथ पुलिस की गाड़ी में बिठा लिया है । बताया जाता है कि यह सारी कार्यवाही देखने-दिखाने के लिए की जा रही है, ताकि जनता और पत्रकारों को उपयुक्त जवाब दिया जा सके । क्योंकि कृपाराम घोसी के आमने-सामने पड़ जाने पर पुलिस के छोटे कर्मचारीयों में इतना आत्मबल नहीं है कि वे इनकांउटर में भाग ले सके ,इसलिए दिखावा करना जरूरी हो गया है । पुलिस उस दिषा में कभी नहीं जा रहीक है जिस दिखा में गिरोह के होने की खबर हो , इस कारण ऐसे अभियानो से गिरोह दूर रहा पुलिस को उसकी परछांई भी पाना मुष्किल होगा ।

एक अन्य अखबार इस काम में पुलिस की कार्यवाही पर कोई भी सन्देह नहीं कर रहा था-

घोसी गिरोह का सफाया होगा: पुलिस अफसरों ने द्दड़ता से सौगन्ध ली

ग्वालियर ,मंगलवार ; कार्यालय संवाददाता द्ध चम्बल रेंज के आईजी ने आज यहां आयोजित एक उच्चस्तरीय बैठक में अपने अफसरों को प्रेरित किया कि वे बिना किसी संकोच और भय के कृपाराम घोसी गिरोह के खिलाफ कमर कस के डाकुओं के विनाष के लिए जुट जायें । अब अपना लक्ष्य कृपाराम घोसी का सफाया करना है, इसमें मै न तो कोई हीला-हवाली सहन करूंगा न कोई छुट्टी जा सकेगा । हमको अपने बड़े अफसरों और जनप्रतिनिधियों को जवाब देने में कठिनाई होती है, इस वजह से आप लोग भी अब पुराने सारे किस्से भूल जायें और इस कमीने बागी से दो-दो हाथ करने के लिए सौगंध खा लें । इस बैठक के बाद पुलिस के इंसपेक्टर व दूसरे अधिकारी बड़े जोष-खरोष के साथ बाहर निकले हैं और पूरी तैयारी के साथ बीहड़ों केी ओर प्रस्थान कर गये हैं । लगता है इस बार कृपाराम गिरोह की आफत आ गई है और अब वह या तो यह इलाका छोड़ देगा या फिर मारा जायेगा ।

मैं देर तक कृपाराम को उन अखबारों मंे से खबरे बांच कर सुनाता रहा जिन्हे सुनकर वह प्रसन्न और आत्मगर्वित होता रहा। फिर उठ कर गुनगुनाते हुये वहां से चला गया ।

कृपाराम के जाने के बाद हमारी नजरें आपस में मिलीं तो लगभग सिसकारी लेने के अंदाज में लंबी सांस भरी सबने ।

लल्ला पंडित ने ‘हरिओम तत्सत’ कहते हुए खाना आरंभ किया तो रोबोट की तरह हम सबके हाथ-मुंह चलने लगे । रोटी कई दिन बासी थीं उसके कौर कौर में सड़ांध की वजह से पतले तार से चलने लगे थे इस कारण भीतर जाने के बजाय हर कौर मुंह से बाहर को आ रहा था । लेकिन यहां न कोई इच्छा चलनी थी, न स्वाद, सो जैसे तैसे करके हमने कल की तरह रोटियां निगलीं । हर आदमी की खुराक की तुलना में आधा खाना था वह, लेकिन यहां यही खाना हमे खुदा की बड़ी रहमत सा दिख रहा था ।

अभी जागे देर भी नही हुयी थी कि खाना खाने के बाद हमे फिर से नींद आने लगी ,और हम सब जहां बैठे थे वहींे आड़े होने लगे ।

लल्ला पंडित को जाने क्या सूझा कि वह लेटे लेटे ही गुनगुनाने लगा-

प्रात समय रवि भक्ष्य लियो तब तीनहि लोक भयों अधियारों ।

ताहिं सो त्रास भयो जगको यह संकट काहूं से जात न टारो ।।

देवनि आय करी विनती प्रभु बेगिब हरो यह कस्ट हमारो ।

को नहीं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

मेरी इच्छा हुयी कि लल्ला पंडित को टोक दूं , लेकिन यह सोचकर मैं चुप रहा कि अगर उनको ईश्वर का इस तरह स्मरण करने से आत्मबल मिलता हो तो क्या हर्ज है ?

हमारा पहला दिन चुपचाप बीता था, लेकिन भोजन के बाद हम सब आपस में बतियाने लगे । पहले परिचय हुआ ,फिर दोस्ती हुयी और फिर तो हम सबकी आपस में खूब घुटने लगी । समय काटने के लिए हमने एक दूसरे से अपने अपने किस्से सुनाने का अनुरोध किया तो सबसे पहले रामकरन आरंभ हुआ ।

रामकरन बोला-जैसे गाव लोग अपने ढोरों के लिए गांव की जमीन से अलग एक खास जमीन को चारे के लिए चरोखर छोड़ देते हैं, वैैसे ही नेता लोग अपने चेलो-चमचों के लिए सहकारिता से जुड़ी समितियों और सहकारी बैकों को चरोखर मानके चरने के लिए छोड़ देते हैं ।

मुझसे रहा न गया, मै बोला-‘‘ अरे भैया, अब तो चरोखर भी सुरक्षित नही है, चरोखर जैसी बंजर जमीन भी अब नेताओं के लिए वोट की बड़ी पैदावार करने लगी हैं । हमारा एक नेता तो चरोखर के भी पट्टे बांटने लगा है अब!‘‘

लल्ला पंडित से रहा न गया,-‘‘ तै गिरराज, चलत बैल में आर गुचाउत, अरे लाला कहानी तो चलन दे आगे ।‘‘

मै मुस्करा के चुप रह गया तो रामकरन ने किस्सा वढ़ाया ।

लट्ठ

रामकरन बोला-

मै एक सहकारी बैंक में चपरासी हूं, कहने को जाति का बानिया हूॅ लेकिन मेरे पास न तो पूंजी है, न मेरे बाप-दादो ने कभी व्यापार किया सो मैं बंज-व्यापार की कोई बात नहीं जानता ,बस नौकरी कर सकता हूं। आप लोग षायद जानते होंगे कि सहकारी बैक का कामकाज प्राइवेट संस्थाओं की तरह चलता है, न कोई टाइम टेबिल न कोई कायदा-कानून । वहां अध्यक्ष सबका मालिक है । वही सबका माई बाप है और वही बैंक का सबसे बड़ा अफसर । वो जो कह दे वही कायदा,वही नियम । वो पुरानी कहावत है न -राजा बोले सो कानून ! हमारे यहां यह बात अध्यक्ष के लिए बोली जाती है । सो हर आदमी अध्यक्ष की सेवा करने में ही अपना धर्म समझता है ।

मै पिछले पांच साल से नौकरी कर रहा हूं और अब भी टैम्परारी नौकरी है मेरी । गांव का रहने वाला हंू और गांव वीरपुरा की बैक षाखा में ही तबादला करा लिया है मैंने, इसलिए नये अध्यक्ष को मै षकल सूरत से ही नही पहचानता.....और बेटीचा,े कहां तक इन सबकी सूरतें याद करो, हर दो साल में सरकार अध्यक्ष बदलती रहती है कि जा बेटा अब तू खा-कमा ले । सहकारी बैंकों में न कभी चुनाव होते न वे चुने जाते , सो हम लोग ध्यान ही नहीं रख पाते कि अब को अध्यक्ष बन गया !

अभी पिछले साल की बात है.........मै अपनी ससुराल गया था । मेरे ससुर अपने गांव के सरपंच है, लेकिन चपरासी हो या कलेक्टर, दमाद तो दमाद होता है । मैं पहंुचा तो मेरी खूब आवभगत हुई । एक दिन को गया था, सलहजों ने दो दिन के लिए रोक लिया........अच्छा होता कि मै पहले ही दिन लौट आता । हुआ ये कि अगले दिन जीप लेकर गांव में एक नेताजी पधारे और सरपंच होने के नाते सीधे मेरे ससुर के पास हाजिर हुए । मैने देखा कि या तो वे नेताजी नये थे सो षहर के बड़े नेताओं की तरह भकभकाते खद्दर के कपड़े नहीं पहनते थे या फिर वे साफ देहाती आदमी थे, सो उनका रहन-सहन बिलकुल सीधा-सादा था-मोटे कपड़ा की घुटन्ना धोती और वैसा ही कुरता ।

अपनी पंचायत में मेरे ससुर का अच्छा परपराटा था, सो जो भी आता उन्हे जरूर पूछता । उन नेताजी ने तो ससुर साहब के पांव छुए । उसी वक्त ससुर साहब ने उन नेताजी को मेरा परिचय दिया-'' जि हमाये दमाद है वीरपुरा वाले ।''

दमाद सुना तो नेताजी बैठते बैठते रूक गये और जब तक मै कुछ समझता, उनने लपककर मेरे भी पैर छू लिये । मै षर्मिन्दा सा खड़ा रह गया था, क्योंकि मेरे मन में हमेषा खुद के छोटा होने का भाव बना रहता था-पता नहीं नेताजी कौन है ! बिना जाने-पहचाने मेरे पांव छू लिए इनने ।

मेरे संकोच को भांपते हुए ससुर साहब बोले-'' इनते पांव छुआ के तुम काहेे सकुच गये लला ! जि तो हमाये छोटे भैया जैसे है !''

आज सोचता हंू कि काष मैं उस वक्त उनका परिचय पूछ लेता ! लेकिन मेरा संकोच मुझे ले डूबा ।

हुआ ये कि जब घर लौट कर अगले दिन मै बैक पहुंचा तो मैने अपने बैंक के सामने एक जीप खड़ी देखी । भीतर जाने पर पता लगा कि बैंक के नये अध्यक्ष निरपतसिंह हमारी षाखा का मुआयना करने आये है, और मैनेजर के कमरे में बैठे हैं ।

सहसा मैनेजर कमरे से बाहर आये और मुूझे पानी लेकर भीतर आने को कहा । मैने सहज भाव से पानी के गिलास भरे और टे में रखकर भीतर पहुंचा । परदे को हटा कर मैने कुर्सी पर आसीन व्यक्ति को झुककर नमस्कार किया और जब उनसे नजरें मिली तो मै सन्न रह गया । मुझे काटो तो खून नहीं । वे तो कल वाले नेताजी ही थे । मै काठ की तरह खड़ा रहा, मैनेजर ने टोका तो किसी तरह आगे वढ़ा । नेताजी के सामनेे पानी का गिलास उठा कर रखा । दुबारा उन्हे देखा तो पाया कि वे इस वक्त मुझे ऐसे घूर रहे है मानो कच्चा ही चबा जायेंगे ।

उनकी नजरों को अनदेखा करते हुए मै बाहर चला आया ।

जो कुछ हुआ था वह न मैनेजर जान सका न कोई दूसरा आदमी-सिर्फ मै जानता था और वे नेताजी, जो अभी महीने भर पहले हमारे अध्यक्ष नियुक्त किये गये थे ।

.......बात को काहे को चबा-चबा के बोलूं, सौ बातों की एक बात ये है कि अध्यक्ष जिस दिन जिला मुकाम पर लौटे, सबसे पहले उनने मेरे तबादले का हुकम निकाल डाला । मैं हैरान और परेषान हो उठा ।

मै दौड़ा-दौड़ा अपने ससुर के पास गया, और जब उनने अपने उस कथित छोटे भाइै निरपतसिंह की करतूत सुनी तो वे आग बबूला हो उठे थे । वे तुरत-फुरत जिला मुकाम पर जा पहुंचे और ज्योंही निरपतसिंह से उनकी भेंट हुई, उनने वे धरउल गालियां निरपतसिंह को सुनाईं कि लोग अवाक खड़े सुनते रहे । पहले तो निरपतसिंह चुप रहा फिर जाने क्या सोच कर उसने भी मेरे ससुर को खूब जवाब दिये । दोनों ने अपने-अपने मन की भड़ास निकाली और सार ये निकला कि मेरा तबादला फिलहाल रूक गया । लेकिन मुझे लगने लगा था कि अब मेरी खैर नही, आयंदा यह आदमी मुझे बात बेबात परेषान करेगा ।

और वही हुआ । पिछले साल एक किसान टेकटर के लिए करजा निकाल कर ले गया था । साल भर मे ंउसने एक भी किष्त नही पटाई तो जिला मुकाम से हम सबको चिटिठयां लिखी गई । अब आप ही बतायें सब लोग कि करजा देने से चपरासी को क्या मतलब ? लेकिन निरपतसिंह को तो अपने मन में लगी थी सो उसने मेरे नाम भी चिटठी लिखवा दी कि हम सबकी मिली भगत से उस किसान ने बैंक को लाखों की चपत लगा दी है ।

हम सबने कानूनी जवाब दिये लेकिन सुनना किसे था ?

महीना भर के भीतर हम सब मुअत्तल कर दिये गये ।......आज तक हम सब मुअत्तल है । मेरे स्टाफ के दीगर लोग कहते हैं कि यह सब झंझट मेरी वजह से हुआ । मै किसको क्या जवाब दूं !

अभी उस दिन में निरपतसिंह के एक रिष्तेदार के गांव आया था कि वह मेरी सिफारिस करे कि मुझे और बाकी स्टाफ को बहाल कर दिया जाये , और वह तो मिला नहीं , लौटते बखत मैं उस दुर्भाग्यषाली बस में सवार हो गया और मेरी विरादरी बामन-बनिया में से निकली सो कृपाराम के चक्कर में फंस गया । मुूझे भारी संकोच लग रहा है कि अगर बागीयों ने लाख-पचास हजार मांगे तो मैं कहां से दूंगा ! ससुर से मांगने की इच्छा नहीं है मेरी , और घर में कुछ है नहींे । सो एक ही आस हे कि यह डाकू आजकल मास्टर साहब का गुलाम है, उसी का हाथ इसके सिर पर है।मैं अपने ससुर से कहके मास्अर से कहलाउंगा इससे।’

जरूरी थोरी हे कि मास्टर का कहना ये मान जाये! मैं संषय में था।

रामकरण हंसा, ‘ मास्टर चाहे तो एक रात में कृपाराम की लाष डरी दिखाये किसी बीहड़ की झाड़ी फे, अपने चुनाव-फुनाव और ठेकेदारी-वेकेदारी में गांव वारन को डरपावे के काजें पाल रखो है मास्टर ने कृपाराम को ।

अपना किस्सा सुना के रामकरन चुप हुआ तो उसकी आंखों में आंसू छलछला आये थे ।

उसे ढांढस बंधाते हुए मैंने बात बदली-’’ तुम यार, ये सीताकिषोर के दोहे कहां से सीख गये ं‘‘

आंसू पोंछ के वह मुस्कराया-’’ बुरो मति मानियो भईया लोगो, हम अपने गम में कछू ज्यादा ही कमजोर हो गये थे ।‘‘

उस दिन देर तक वह हमे सीताकिषोर के दोहे सुनाता रहा ।

रामकरन के बाद मूछ वाले लम्बे से ठाकुर से अनुरोध किया गया तो उसने मूंछों पर हाथ फेरते हुए बोलना आरंभ किया-

मैं सिरोमन सिंह तोमर हूं और तंवरघार के लक्ष्मनसिंह के पुरा के रहने वाले हैं हम । घर में कका-दाऊ के कुल मिला के सौ आदमी हैं हम लोग । घर में अठारह-बीस बंदूकें है, ...और आप सबसे क्या छिपाना, अपने इलाके के बागीयों से हमारे प्रेम सम्बंध हैं ,सो हमारे घर के किसी आदमी पर ऐसा संकट कभी नहीं आया । जब से हम लोगों ने होष संभाला है , बड़े-बड़ेे बागी हुए, लेकिन किसी ने हम पर टेड़ी नजर नहीं डाली । पहली दफा हमारे घर के किसी आदमी की पकड़ हुई है, सोे अपने इलाके में हमारी तो नाक ही नीची हो गई होगी ।

...........आप लोगों को सुनाने लायक किस्सा ढूढ़ता हूं तो हमको कित्ती सारी घटनायें याद आरही है, आप लोग ही बताओे कैसा किस्सा सुनना चाहते हो....?.कोई रंग-रंगीली बात सुनाऐं , कोई धरम कथा सुनाऐं ....या कहीं की षिकार की कहानी सुना डालें ! खूब षिकार करे हमने, हर तरह के जानवर मारे हैं, और जे बडडे सांप भी सहज भले में लाठी अकेली से मार डाले हैं ।

लल्लू पंडित बोला- कोई धरम कथा हो जाये दाऊ !

मैं बोला - तुम हर जगह धरम घुसेड़ देते हो,..........आज तो कछू रंगीली कथा सुना देउ दाऊ ।

सिरोमनसिंह मुस्कराये - तो सुनि लेउ आज धौलपुर वारी को किस्सा !

धौलपुर वारी यानीकि वो लुगाई जो हमारी मामी बनी ओर जिसे हमारे बूढ़े मामा धौलपुर से करवे के लाने खरीद केे ले आये थे ।

मामा की उम्र्र थी साठ बरस और उन्हे मामी मिली पैंसठ साल की,अब कहा बतायें आप सबको कि पैंसठ की मामी ऐसी सजी-धजी रहतीं कि वे पैंतीस सालसे कम की लगतीं । मामा ने लाड़ में आके उन्हे दो सेर चांदी की आयलें, लच्छे ओर करधनी बनबादी जिसे पहन कर रूनन’झुनन करती मामी पूरे गांव में फिरतीं। चौड़ी पट्टी की मोटी बनारसी साड़ी पहर के वे जब नाक तक पल्लू खींच कर किसी मरद से बात करतीं तो दस बार अपन चुरियांेंं भरे हाथ हिलातीं, जिनके मद भरे संगीत में डूबा आदमी उनके अंधढंके चेहरे को देखने का लालायित हो उठता । नयी ब्याही बहू की तरह पूरे अदब और लिहाज से रहतीं थी वे ।

और इस अदब-लिहाज का ही कमाल था कि गांव भर की बहू बेटियां दिन भर उन्हे घेरे रहतीं और मामा के मकान से हीही-ठीठी के स्वर गूंजते रहते । नई उमिर की लड़कियों के लगाव का सबसे बड़ा कारण यह था कि उमर में इतनी जेठी होने के बाद भी मामी बहू बेटियों से ऐसे खुल कर बतियातीं जैसे वे उन सबकी जनम जनम की हमउम्र सहेलियां है । अपनी ऐसी सयानी गुइयां पाकर उन सबके मन में सालों से दबी घर-गृहस्थी और देह की तमाम उत्सुकतायें खोलकर सामनेे आने लगीं थीं, जिनके रोचक और मन को सरसा देने वाले जवाब धौलपुर मामी कभी सबके सामने कभी किसी के कान में फुसफुसा कर देती । दिन भर उनके कमरे से ‘हाय दइया ‘ और ‘कर गयी री‘ जैसे रस में डूबे वाक्य बाहर रिसते हुए वातावरण को रस सिक्त बनाते रहते ।

दो महीने बाद की बात है । एक दिन सुबह हुईृ तो सारा गांव स्तब्ध था। गांव से दर्जन भर से ज्यादा नवयुवतियां गायब थी ं। किसी के घर से बहू नदारद थी तो किसी की सयानी बेटी नही थीं ।

बाद में जब पता लगा कि धेैलपुर वाली मामी खुद भी गायब है, तो सबने अंदाज लग लिया था कि मामी अपने साथ धौलपुर की गर्म गोष्त की मण्डी के लाने कच्च माल लेने आईृ थी और एक साथ इतने नग उठा ले गई।

बड़ा हल्ला हुआ लेकिन कुछ न हो पाया , न धोलपुर जाने पर कुछ पता लगा, न पुलिस और सरकार में षिकायत करने से कुछ हुआ । उल्टे हमारे मामा को कई-कई रातें हवालात में बिताना पड़ीं ।

लज्जित और अपमानित से सब लोग सारे काम के लिये मामा को दोश्ी मान कर अपने अपने घर चुप बैठ गये और हमारे मामा से सदा के लिऐ गांव भर ने बैर मान लिया । इस गम मंे मामा इतने टूटे कि दिन भर घर में पड़े रहने लगे और बाद में वे एक दिन एक कुआ में गिर कर आत्महत्या कर बैठे ।

उस दिन से रोज रोज ऐसी ही नई नई कहानियां लोग सुनाते, जिसमें बाकी लोग पूरी रूचि लेते ।

लल्ला पंडित रोज-रोज जाने कहां कहां की ईश्वरावतारों की कथायें सुनाते। बैंेक चपरासी रामकरन अपने क्षेत्र में प्रचलित सीताकिषोर के दोहे और विरहा सुनाता । मैं अपनी पटवारी गिरी के जाने कितने घटे-अनघटे किस्से सुनाता । दोनों ठाकुर आल्हख्ंाड सुनाते और छठवां आदमी यानि कि शिवकरण तीर्थयात्रा के अपने संस्मरण सुनाता । सुबह से शाम तक, जैसे-तैसे हमारा समय इन सब बातों में ही कट जाता ।

रामकरण की बात सच सवित हुई एक दिन मास्टर फिर कृपाराम से मिलने आया, मिलने क्या आया, कृपाराम समेत चारों बागियों को संग ले गया। बाद में पता लगा था कि पंचायत के चुनाव में मास्टर का कबेटा हार रहा था सो धमकी दिलाने के वास्ते मास्टर कृपाराम को साथ ले कर गया है।

बाद में मैंने हेतम से पूछा था कि वो मास्टर कौनल है तो हेतमसिंह हंसा था फिर बोला था कि ‘ जरूली नाने वाको नाम मास्टरही होय, फिर मास्टर,डाक्टर,नेताजी,मैम्बरसा जैसे कितने ही तो लोग है। जो इन बागियों के माई-बाप हैं, पुलिस इनफारमेषन से लेकर कारतूस सप्लाय तक और आखिरी में समर्पण से लेकर सजा कम कराने तक वे ही तो इनहे बचाते है, और बदले में रूप्या पैसा से लेकर चुनाव में वोटों तक की गडडी इन्ही की बदौलत तो पाते हैं ये नेता जी ।

ज्यों ज्यांे समय बीतने लगा , हमारा साहस लौटने लगा ।

शायद पंद्रह दिन बीते होंगे ,जब कि दुबारा चलने की तैयारी हुयी । उस दिन बड़े भोर हमे तैयार होने का हुकुम हुआ ।

फिर वही जीप थी और वैसे ही जैसे-तैसेे ठुंसे हम सब । वही ऊबड़ खाबड़ रास्ता ओर वे ही धचके ।

तीन घंटे का रास्ता किसी तरह पूरा हुआ ।

जीप जहां रूकी वहां दूर दूर तक वही जंगली झाडियां थीं और वे ही मिट्टी के ऊंचे नीचे टीले बिखरे पड़े थे ।

हम लोग जीप में से उतरे और बिना कहे अपने सिर पर पोटलियां लाद लीं । कृपाराम का इशारा पाया तो हम सब एकतरफ को वढ़ लिये ।

पन्द्रह दिन तक उस मकान में ठीक से आराम करने के बाद हम सब पहली बार यहां - वहां से खसखसाती रेतीली जमीन पर पैदल चल रहे थे ,तो शुरू शुरू में पांव इस तरह लटपटाये कि ऐसा लगा कि जेैसे

हम सब लम्बा चलना भूल गये हों । लेकिन बागियों के किसी भी अंदाज में कोई कमी न थी। वे वैसे ही फुर्ती से चल रहे थे , और उनके हाव-भाव से लग रहा था कि उनकी इच्छा है कि पकड़ के लोग भी तेजी से चलें । लेकिन अन्जान डगर पर हम सब अपहृत धीमे ही चल पा रहे थे ।

वो दिन बड़ी मुश्किल से बीता ।

शाम हुई तो बागियों ने अगरबत्ती जला कर आरती गाई ।

एक पोटली में से खाना निकला । बागियों ने पेट भर के भकोसा और कुछ जूठे टुकड़े बचे सो हमको मिल बांट के खाने को दे दिये ।

मास्टर की कैद में रहने के दौरान हम सबके गाने का अभ्यास अच्छा हो गया था, सो बागियों के मनोरंजन के लिए हम सबने अपनी-अपनी सीखी चीजें सुनाना शुरू किया । कृपाराम किस्सों का शौकीन था । उसने हम सबसे गाना बंद करके कोई किस्सा सुनाने का हुकुम दिया तो सब चुप रह गये ।

सब लोगों ने कृपाराम से आग्रह किया कि आज वह हमे कोई किस्सा सुनावे ।

बड़ी नानुकुर और मान-मनौव्वल के बाद कृपाराम ने सुनाना शरू किया ।

सबसे पहले उसने पूछा - आपबीती सुनाऊं कि पर बीती !

सबने कहा ‘आपबीती ही सुनाओ दाऊ ! ‘

कृपाराम बड़े उम्दा तरीके से किस्सा सुनाता था, उसने बात शुरू की तो हम उसमें ऐसे डूबते चले गये कि सब कुछ नजर के सामने घटता दिखने लगा, न उसकी आवाज सुनाई पड़ रही थी, न उसका चेहरा दिख रहा था , हम सबको तो उसके किस्से के सारे के सारे जीते-जागते पात्र दिखने लगे थे अपनी आंखों के सामने आकर ।

उसके साथ ही हम भूतकाल में जा पहुंचे थे, जहां कि कृपाराम का घर परिवार था और उसकी प्रिय भेढ़-बकरियों का रेवड़ था । गांव था, उसके नाते-रिष्ते दार थे, उससे नफरत करते लोग थे तो उससे प्रेम करने वाले भी थे । इन सबके बीच था कृपाराम-एक किषोर चरवाहा कृपाराम घोसी वल्द गंगारामघोसी !

जिस न तो किसी तरह की चिन्ता थी न किसी की परवाह , जिसे अपना ब्याह भी एक कोतूहल और तमाषे सा लगा था ।

फेहरिष्त

हमारे साथ चल रहे पुलिस अफसरों ने अब तक थानों में बैठ कर डण्डा चमकाया था, कभी इलाके में कड़ी मेहनत नहीं की थी, सो इस तरह दर-दर की ठोकरें खाना भला उन्हे कहां से रास आता ! वे प्रायः थके रहते औार बात बेबात दल के किसी भी आदमी पर झुंझला कर बरस पड़ते ।

डस दिन सब लोग थके हुए थे, रघुवंषी का हुकुम हुआ कि आज की रात किसी गांव में नहीं बितायेंगे, हो सकता है कि ये गांव वाले ही डाकुओं को इत्तिला कर देते हों कि आज हमारे गांव में पुलिस दल का पयाम है । सब लोग अचानक मिले इस आदेष से हतप्रभ थे, दिन भर भूखे प्यासे चलते रहने के बाद ऐन उस वक्त दरोगा ने दुकुम ठोका जब कि हरेक के मन में कही घड़ी भर रूक कर ठण्डा पानी पीने की चाह थी ।

लेकिन रघुवंषी को नया सुझाव देने का साहस किस में था ? सब मन मारके आगे वढ़े । अचानक रघुवंषी ने हेतमसिंह दीवान से कहा-हेतम पानी पिलाओ!

हेतम ने बात को उतनी गंभीरता से नहीं लिया, उसने अपने एक सिपाही को हुकुम ठोका- जा रे दबोइया, साहब को पानी ले आ !

रघुवंषी को भला यह कहा से सहन होता ! वह फट पड़ा-सारे, तू बड़ो अफसर बन रहा है, तैंने दूसरे पर हुकम मार दिया ।

मुझे लगा कि तनिक सी बात का बतंगड़ बन रहा है, मैं चेहरे पर अतिषय विनम्रता लाता हुआ आगे वढ़ा-साहब, मैं भरि लाऊं!

रघुवंषी ने आखें तरेरीं- तू काहे बीच में कूदता है रे लाला ?

मै बेषर्म हो कर हंसा- साहब आप लोगिन की सेवा रोजि रोजि थोरी मिलनो है ! कौन दूर जानो है, बस अबहीं सामने वाले कुंआ से भरि के लाया ।

वह चुप रहा । मुझे लगा वह मेरे निवेदन को स्वीकार कर रहा है । मैंने अपने झोला में से डोर-लोटा निकाले और सौ एक गज दूर खड़े पेड़ों के उस झुरमुट की ओर वढ़ गया जहां मुझे कुंआ होने का अनुमान था ।

दस मिनट के भीतर रघुवंषी के सामने मंजे हुए लोटा में ताजा पानी भरके मैंने सामने हाजिर किया ।

पानी पीकर दरोगा नम्र हुआ । मेरे चेहरे पर संतोश झलका ।

पता नहीं किस बात का असर था कि रघुवंषी ने सामने दिख रहे गांव के बाहर खेत के बीचों बीच बनी उस झोंपड़ी की ओर संकेत करके कहा-सिन्हा साहब, आज हम लोग इस झोंपड़ी मे डेरा डालेंगे ।

'ठीक है सर, जैसा आपका ऑर्डर !' सिन्हा पुलिस का एक अनुषासित अधिकारी था ।

झोपड़ी सूनी पड़ी थी, लेकिन उसमें इतनी गुंजायस कहां थी कि पूरा पुलिस दल उसमें समा सकता, सो आस पास की खुली जगह देख कर सब लोग पोजीसन लेकर यहां वहां बैठने लगे ।

झोंपड़ी के भीतर रघुवंषी और सिन्हा के लिए एक तिरपाल विछा दिया गया । वे दोनों अंदर गये और पांव फैला कर बैठ गये । सहसा रघुवंषी ने मुझें आवाज दी- सुन रे लाला, इधर आ !

मैं भीतर को लपका । रघुवंषी ने अपनी टॉर्च जलाई और अपनी पीठ के बैग में से एक फाइल निकाली ।

फाइल खोल कर टॉर्च की रोषनी में ही उसने कुछ देर कागजों को देखा और फिर मेरे सामने पूरी फाइल बढ़ा दी- ले देख, तू उस दिन कह रहा था कि तुम दोनों के नाम पुलिस की सर्च टीम में कैसे आ गये, इस फाइल में सब लिखा है!

मैने आंखे फैेला कर फाइल पढ़ना आरंभ किया ।

फाइल के कवर पर अंकित था-टी निन्यानवे: कृपाराम गिरोह का विवरण

पहले पन्ने पर लगे कागज पर लिखा था-गिरोह का परिचय और पुरस्कार राषि । मैंने पढ़ा - कृपाराम गिरोह मैं सिर्फ चार डाकू हैं जो आपस में सगे भाई है । कृपाराम इस गिरोह का मुखिया है उसके ऊपर जिन्दा या मुर्दा दो लाख रूप्ये का पुरस्कार राज्य सरकार ने घोशित किया है, जबकि इस गिरोह के दूसरे दुर्दान्त डाकू ष्याम बाबू के सिर पर भी दो लाख रूप्ये के ईनाम का ऐलान किया गया है । बाकी के दो डाकू अजयराम ओर कालीचरण पर पचास-पचास हजार रूप्ये के ईनाम रखे गये हैं । इस तरह पूरे गिरोह पर पांच लाख रूप्ये के ईनाम के एलान हो चुके है।

दूसरे पन्ने पर गिरोह का इतिहास दर्ज था- इस गिरोह के सबसे खतरनाक डाकू ष्यामबाबू और उसके भाई अजयराम व कालीचरण का आचरण बचपन से ही खराब रहा है । चोरी-चकारी और उठाईगिरी करना इनकी आदत में रहा है । मौका मिलने पर इनने कुछ बड़ी वारदातें कर डालीं और पुलिस का दबाब पड़ा तो अपने बड़े भाई कृपाराम के साथ बीहड़ में कूद गये और उनने अलग से गिरोह बना कर हत्या, लूटपाट ,अपहरण और डाका डालना ही अपना पेषा बना लिया । एक प्रदेष की पुलिस का दबाब बड़ जाने पर ये लोग दूसरे प्रदेष में चले जाते हैं और मौका पाकर वापस लौट आ जाते हैं । पिछले कुछ दिनों से अपहरण करके बिना रिस्क के खूब रूपया बनाना इनकी खास आदत बन चुकी हैे ।

तीसरे पन्न्ेा पर गिरोह के सदस्यों को पहचानने वालों की सूची दर्ज थी- जिसमें कृपाराम के मां ,बाप, बहन, जीजा ,मामा-मामी के अलावा उनके गांव के चार मुअज्जिज आदमियों के नाम षामिल थे । मैं चौंका, उस सूची में ग्यारहवां नाम मेरा था और बारहवां लल्ला पंडित का । हमारे नाम के आगे लिखा था-ये दोनों आदमी सरकारी कर्मचारी हैं , इनका अपहरण कृपाराम गिरोह ने साल भर पहले किया था,तथा वह तीन महीने तक इन्हे अपने साथ लिये पूरी चम्बल इलाके मे घूमता रहा इसलिये इन दोनों को कृपाराम गिरोह के हर ठौर-ठिकाने तथा हितू-मुखबिरों की पूरी जानकारी होना चाहिए।

मेरा माथा इनका -तो ये वजह रही हम लोगों के फंस जाने की ।

लेकिन अब क्या हो सकता था ! जो होना था वह हो लिया ।

मैने फाइल दरोगा को वापस कर दी । रघुवंषी मुसकरा रहा था-पढ़ लिया न ! पुलिस के रिकॉर्ड में जरा-जरा सी हंगनी मूतनी बात दर्ज रहती है, तुम बच के कहां जाते, हम लोग सात पाताल से ढूढ़कर तुम्हे ले आते ।

मैं झेंपते हुए उनकी बात का समर्थन कर रहा था ।

दरोगा ने मेरी झेंप तोड़ी- हां अब सुना, कि कृपाराम ने उस दिन अपने बचपन का क्या किस्स बयान किया ।

मैने ठण्डी सांस ली और षुरू हो गया ।

,,,,,,,,

ब्याह

कृपाराम की याददास्त बड़ी तेज है । जब उसका ब्याह हुआ तब वह दस बरस का रहा होगा, लेकिन उस दिन जब किस्सा सुनाने बैठा तो आंख मूंद कर इस तरह राई-रत्ती बात सुनाता चला गया जैसे अभी कल की कोइ्र घटना बता रहा हो ।

पहले उसने अपने खानदान की कीर्ति उचारी -'' हमारा कुल-खानदान घोसी के नाम से जग-जाहर है, पर हम असिल में गड़रिया हैं । हमारे बाप-दादा गाय-भैस चरात हते तो उन्हे सबि लोग 'गोरसी' 'गोरसी' कहत हते, बाद में गोरसी ते घोसी कहलान लगे। गड़रिया दो तरहा के होते हैं एक नीखर और दूजे ढेंगर । नीखर वे जो गड़रिया राजा की ब्याही-थ्याही गड़रिया रानी से पैदा भये, और दूजे ढेंगर वे जो उनकी बामन रानी से पैदा भये ।''

लल्ला पंडित को अपनी ब्राहमण जैसी सर्वोच्च जाति की स्त्री के गड़रिया की रानी बन जाने की बात सुनकर बड़ा झटका लगा, सा जलकर उसने पूछा-'' दाऊ, जे कहां की कथा दे निकारी तिमने ! कहां के पुराण स ेले आये जे कथा? कौन सी बामनरानी गड़रिया राजाके संग ब्याही गयी ।''

कृपाराम विहंसा-'' पंडित सारे, तैं का जानत ,तिहारी जाति की सिग औरते सती-सावित्तरी हत हैं, सारे उनको भी शरीर है, उन्हे भी भूख-प्यासु और दीगर इच्छायें व्यापतु हैं । वे भी मरद को संग चाहतु है,............हां, हम जिन रानी की चरचा करि रहे , वे तो मजबूरी में गड़रिया राजा के संग रहन लगीं थीं । किस्सा कछु ऐसो भयो कि, एक बामन देवता की घरवाली पानी भरनि को पनघट गईं थी , लौटतु में बीच मारग में एक गड़रिया अपनी गाड़रनि को हांकत चलो आइ रहो हतो, । भेड़नि की गर्द से बचिवे के लाने बामननी एक तरफ को हट के खड़ी है गई । अब हजारनि गाड़रें निकरिवे में लगी अंधेर देर, सो जब बामननी घर पहुंची बामन देवता बड़े फिरंट हो गये-बता दारी कहां गई हती ? बेचारी बामननी समझातु रही, कै पीवे को जल अशुद्ध न हो जावे तासे मैं रास्ता में ही एक तरफ को हट के ठाड़ी है गई हती, पै बामन न मानो, और गुस्सा में अपनी घरवारी को घर ते निकरिवे को हुकम दे दयो। लाचार बामननी वा ही गड़रिया राजा के पास गई जा की गाड़रें निकर रई हती, और अपनो दुखड़ा कह सुनाओ । बामन के पास बामननी को संग लेके आये गड़रिया ने बामन को बहुत समझायो , पै पंडित महाराज कहां से मानिवे वारे हते । पत्नी तज दई सो तज दई । बोले- तैं बड़ो भलो चाहि रहो जाको, जा तू ही रखिले, जा खों !''

'' लाचारी में गड़रिया राजा ने अपने घर में पहली रानी के संग-संग बामननी को भी रख लियो । जो बच्चा बामननी से पैदा भये वे सब ढेंगर कहलाये और गड़रिया रानी से पैदा भई संतान कहलाई नीखर । हम लोगनु में आपस में शादी ब्याह नही होतु है । हमारे दर्जननि गोत्र हैं-सागर, पटोरिया, रठोरिया, हिन्नवार, कोको लोरिया, चंदेल, और भी जाने कहा कहा ।''

मैने इशारे से लल्ला को रोका और कृपाराम से बोला-''दाऊ, आप तो अपने ब्याह का किस्सा सुनाओ ।''

कृपाराम ने मुझे डांटा-'' हमारे बाप को किस्सा तो सुनि लो पहिले !''

मैं सहम गया-'' सुनाओ दाऊ, हमिने समझी कै जे लल्ला पडित कथा में बिघन डारि रहे हैं ।''

श्यामबाबू अकड़ उठा था-'' केसे बिघन डारेगो, जो पंडित वारो सारो, पीछे से धुंआ निकाद्दगों सारे के ।''

मैं और लल्ला दोनों सिहर उठे ।

कृपाराम फिर शुरू हो गया । हम सब उसके संग-संग कथा में बहने लगे ।

गंगा घोसी ग्राम जनकौरा के रहने वाले थे । बचपन में ही उनका ब्याह फूलपुरा की शिवदेई के साथ हो गया था । सन छप्पन की बात है, सारी दुनिया में भयानक अकाल पड़ा । गंगा के घर की सारी भेड़-बकरियां

चारे-पानी के अभाव में फैली महामारी में एक-एक कर के खतम हो गईं । गंगा थे अपने बाप के इकलौते लड़के, उस बखत तक बाप भी सुरग सिधार गये थे और मताई भी । चाचा भी नहीं थे, उनके दो लड़का थे-जमुनाप्रसाद और रेवती प्रसाद, और उनकी भी हालत ठीक नही थी । गंगा के घर में कोई दूसरा था नहीं, उनका बचपन में ही ब्याह हो गया था, हां दूसरी विदा नही हो पाई थी । गांव में तो पेट भरना भी कठिन था न मजूरी मिलती थी न कहीं से कुछ उधार, सो अकाल के मारे गंगा सोच विचार के अंततः अपनी ससुराल जा पहुंचे । ससुर का घर खूब खुषहाल था । कछु दिन मेहमानी करी फिर मन मारि के गंगा अपने ससुर के घर में ही रहने लगे ।

बाद में वहीं उनके एक लड़की और एक लड़का हुआ-नाम रखे, चम्पा और कृपाराम ।

बुरा समय जैसे तैसे निकल गया । जब दिन फिरे तो वे अपने गाव लौटे । अपने गांव में रहके उनकी हालत संवरी तो उनने अपना पुराना खण्डहर मकान नया पक्का बना लिया और अपनी भेड़-बकरियां भी पाल लीं ।

तब कृपाराम और श्यामबाबू छोटे थे , कालीचरण और अजय राम का जनम तक नहीं हुआ था, कि एक दिन दस बरस के कृपाराम को देखने करया (ब्याह तय कराने में मध्यस्थ की भूमिका निभाने वाले खास पेषेवर लोग) आ पहुंचे ।

गंगा को अपना घर करया के आने लायक लगा तो उन्हे अपार खुशी हुई । ‘समाज के लोगों में उनके घर लौट आने और फिर से आसूदा होने की चर्चा होने लगी है षायद,‘ उनने सोचा । करया लोगों की आवभगत में गंगा घोेसी ने कोई कसर नही रख छोड़ी । एक बकरा कटा । रात को देर तक वे लोग शादी ब्याह की बातें तय करते रहे । कृपाराम को सिर्फ इतना याद है कि रात को ब्यारू करके वह सोने जा रहा था कि दादा ने हेला मार के उसे बुलाया था और अपनी बगल की खाट पर बैठे चार-पांच लोगों से ‘जय राम जी की‘ करने को कहा था। कृपाराम नेे जय राम जी की करी और अवाक सा खड़ा उन पीले साफे वाले मुच्छड़ लोगों की तरफ टुकर-टुकर ताकता रहा था ।

दूसरे दिन वह जब अपनी गाड़र चराने हार में गया, तो सारे साथी उसे चिढ़ा रहे थे-इक मोड़ा की भई सगाई, दुलहन बन के छेरी आई ।

तब जाकर उसे अहसास हुआ था कि जैसे गांव के किसन, मरजाद, झनकू वगैरह की सगाई हो गई है, कल रात वैसी ही उसकी भी सगाई हो गई है ।

अम्मां ने कृपाराम के ब्याह की तैयारी शुरू कर दी थीं ।

फिर महीना भर बीता होगा कि एक दिन फिर से मोहल्ले के मरद-औरतें जुटीं । एक पीले पग्गड़ वाले ने उसके हाथ में कलावा से लपेट कर रखा गया कागज का एक लिफापा और पांच रूपया-नारियल दियेे ।

कृपाराम ने वह लिफापा अपने पिता को सोंप दिया। बुआ की बातों से कृपाराम को पता लगा कि इस लिफापे में आज लगुन आई है,बुआ और अम्मां गुनगुना उठीं थी-

राजा दसरथ फूले न समायें,लगुन आई मोरे अंगना

आजे फूले, आजी फूलीं फूले सब परिवार

रामचंदरजी ऐसे फूले जैसी फूले है फुलवार

लगुन आई हरे हरे, लगुन आई मेरे अंगना....

अगले कई दिन तक यही क्रम बना रहा, सांझ ढले ही घर के लोगों की रोटी-पानी से निपट कर मोहल्ले की गोते-नाते की महिलायें कृपाराम के घर पर इकट्ठी हो जातीं और अपनी मनपसंद सखी के साथ आंगन में रखी चकिया मिटटी की चक्की पर बैठ कर छबलियांे (छोटी डलियों) में गेंहूं या चने की दाल लेकर पीसने लगती थीं ।

वह दिन माता पूजन का दिन था । सुबह से ही नाई दादा हर घंटे दो घंटे बाद कृपाराम के शरीर में उबटन (बेसन को तेल में मल कर बनाया गया घरेलू बॉडी क्लीनर) का लेपन कर रहे थे, जिससे उसके बदन का मैल निकल आये और वह गोरा होकर सुंदर बन्ना (दूल्हा)के रूप में बरात के लिये अभी से तैयार हो जायें ।

सांझ तक उसके बदन पर पांच बार उबटन लगा या और दो बार उसे नहलाया गया । सांझ के पहले वह फिर नहाया । नये कपड़े पहन कर वह तैयार हो गया और पौर में जा बैठा । मौका देख कर उसके कुछ दोस्त उसके पास आकर बैठ गये । इस बखत वे आपस में क्या बाते करें यह नही समझ पा रहे थे, उधर बाहर गांव का ढपला बजाने वाला आ गया, और सामने के चबूतरे के सहारे खड़ा होकर दरवाजे पर डम डाम डिमा-डम डाम डिमा का मस्ती भरा संगीत गुजाने लगा । अब लगने लगा था कि इस घर में ब्याह कारज होने वाला है ।

तब अंधेरा घिर रहा था जबकि कृपाराम को पौर में से भीतर बुला कर अम्मां ने उसके हाथ में लाल कपड़े की दो छोटी-छोटी झंडिया दे दीं , और उससे अपने दोस्तों के साथ मंदिर की तरफ चलने को कहा । नाई ने उजाले के लिए गैस बत्ती (पैट्रोमैक्स) उठा कर अपने कंधे पर रख ली थी और वह सबसे आगे चल पड़ा था ।

गांव के बाहर जहां हनुमान जी की मढ़िया थी वहीं कुछ दूसरी मूर्तियां रखीं थीं। चबूतरे पर पहुंच कर काकी ने कृपाराम के हाथ की झंडियां अपने हाथ में लेकर मूर्ति के पीछे बनी जगह पर खोंस दी और पानी ढार कर पूजन आरंभ करदी ।

कुछ देर बार वे लोग घर लौट आये, तो कृपाराम को थकान अनुभव होने लगी, वह अपने पिता के बिस्तर पर जा लेटा था और उसे झपकी सी आ गई थी।

रात दस बजे के करीब सरमन भैया की घरवाली बजार वाली भाभी ऊंघते से कृपाराम के पास आई और उसकी बांह में च्योंटी भर के उस जगाती हुई बोली-‘‘ चलो देवर लाला, तुम्हारे हरदी लगा दें ।‘‘

कृपाराम उठा तो वे उसे लेकर बीच आंगन में ले आई । आंगन में गोबर से उरेन डाल कर (लीप कर) बीच में आटे और हल्दीसे चौक पूरा जा चुका था, बढ़ई के यहां से छेंवले की लकड़ी की बनी चार-चार अंगुल चौड़ी और हाथ-हाथ भर लम्बी दो पटली दो दिन पहले ही आई थी। बुआ ने कृपाराम के हाथ में एक कटार देकर उसे पटली पर उकडूं बैठने का इषारा किया ।

कृपाराम इस वखत उन सबके हाथ का खिलौना बन गया था । वह वैसी ही हरकतें कर रहा था जैसा उसे इषारा किया जा रहा था ।

भौजी ने उसकी कमीज उतरवाई और पिसी गीली हल्दी की भरी थाली लेकर सामने लकर रख दी । सबसे पहले अपनी दांयी हथेली में गीली हल्दी का लोंदा लेकर भौजी ने कृपाराम के चेहरे पर मल दिया । फिर अम्मां ने नाम ले लेकर छह औरतों से और कहा जो आगे आकर कृपाराम की छाती-पीठ और हाथों पर हल्दी मलने लगी। औरते गा रही थीं -

हल्दी हल्दी हरदोली हारो उपजी जे सिंघल दीप

हल्दी कहे मैं ंपियरी हारो मो बिन कारज न होय हो...

ऐसी हरद मेंहगी भई हारें बिकये रूपया सेर हो

पैसा की पैसा भरी हारों बिकये रूप्या सेर हो

ऐसी दूला की मैया आजी बुआ बिकये रूप्या सेर हो

लाड़ली हारें वे बनिया के जाये हो

बनिया हे लड़वाओं के हारो रखों रात बसाये हो

रात बसाई न बसी वे तो समझ गई दिल मांझ हो

हल्दी हल्दी हरदोली उपजी ....

अम्मां ने बजार वाली भौजी से कहा- जा दारी अपने देउर खों तनिक ठीक ठीक हरदी और लगा दे ।

मुसकराती भौजी ने आंख मार के कहा -अबहीं हाल लगाउत चाची ।

एक हाथ में हल्दीकी थाली दूसरे में कृपाराम का हाथ पकड़ केे वे भीतर वारे कमरे में जा पहंुची फिर हुकुम के स्वर में कुपाराम से बोली- अपनो सूथना उतारि दो लालाजी, हल्दी लगवालो तनिक !

कृपाराम भौचक्का से उन्हे देख रहा था, तो देर होती देख भाक्ी ने उसकेे पजामा का नाड़ा खच लिया था, और जब तक कृपाराम पजामा संभालता, तब तक तो पजामा नीचे जा चुका था । कमर में अंटी पट्टे की पुरानी सी तुड़ी मुड़ी सी चड्डी उसके बदन पर लटकी हुई थी , इस दशा मंेंं अचानक आ जाने पर कृपाराम सकुचा गया था ।

वह अपनी चडडी संभालता खड़ा था कि टेसन वाली भौजी ने हल्दी की अंजली भर के कृपाराम के पांवों में जांघो से लेकर पंजों तक रगड़ना शुरू कर दिया था । कुछ ही देर में उसके दोनें पांव भी उसके चेहरे , पीठ सीने की तरह पीले पीले मोटे सूखे लेप से लिथड़ गये थे ।

आधा घंटे बाद कमरे में से मुस्कराती भौजी उसे अब तक छोटे से लला बने रहने के लिये उलाहना देती हुयी वहां से चली गई थीं ,जब कि उसके बदन का ऐसा कोई हिस्सा नहीं बचा था जहां भौजी ने बेदर्दी से हल्दी न रगड़ डाली हो।

स्ुाबह से उसके साथ मामा का हमउम्र लड़का षंकर सहबाला के रूप में पहरेदार के रूप में लगा दिया था, और उसे अकेले-दुकेले घर से निकलने की मनाही कर दी गई थी । खेत मे दिषा मैदान को जाते वक्त भी उसके साथ उसका सहबाला रहता था ।

कृपाराम ने अनुभव किया कि मामा का लड़का षंकर हालांकि अभी कंुंवारा था लेकिन उसे दुनियादारी की बातों का बड़ा अच्छा ज्ञान था । वह दो दिन से कृपाराम को ब्याह-षादी के बारे में तमाम ऐसी नई बातें बतला रहा था, जो कृपाराम को कभी रस विभोर करती थीं तो कभी सुखद बिस्मय में डाल देती थीं ।

सुबह आंगन के बीचों बीच जहां बैठा के कृपाराम को हरदी-तेल चढ़ाया गया था, वहीं ठीक उसके बगल में उरेन डालकर एक और चौक पूरा जा चुका था । फूफा ने पूजा की थाली मे से हरदी चावल लेकर जमीन की पूजन की , फिर लोहे के सब्बल को भी पूज दिया। हल्दी-चावल, फूल-बताषा और आंटी बांध कर जमीन पर रखा सजा हुआ वह सब्बल उस वक्त ऐसा उम्दा लग रहा था मानो ब्याह के रीति रिवाजों में इस तरह श्रम और श्रम से जुड़ी चीजों को उचित सम्मान दिया जाना किसी समय पर आरंभ की गई कोई श्रमवादी परंपरा हो ।

चौक के बीचोंबीच सब्बल से खोदके आठ अंगंुल गहरा गड्ढा बना कर फूफा ने सबसे पहले लोहे की कील, कोयले की डगरिया,तांबे का छेददार सिक्का, हलदी की गांठ, साजी सुपारी , हल्दी-चावल और फूल डाला फिर उस गडडे में खंभ रख कर मिट्टी से पूरने लगे । उधर बुआ और फूफा मिल कर खंभ गाड़ रहे थे, उधर पछार वाली मामी ने गीत टिटकार दिया था-

राम लछमन जे दर खोदियो, सवा साय रोपे है खम्भ !

मण्डप रमानों सियाराम ने....!

गं्ागा राम जे दर खोदियो, सवा साय रोपे हें खम्भ !

मण्डप रमायो कृपाराम ने !

चार पांच तगड़े से लड़के आनन-फानन में उनके आंगन में जमा हो गये थे, जिन्हे देखकर प्रसन्न मन अम्मां ने उनसे कहा -भइया हो, तुम सब मिलिके मड़वा पूरि देउ !

अम्मां ने पहले उन सबको हल्दी का तिलक लगा कर चावल चिपकाए, फिर सबको एक-एक बताषा खाने के लिए दे दिया अैार आंगन के एक कोने में रखी आठ-दस बल्लियों और उन हरे पत्तों की पूजा करने लगीं जो दो तीन पहले गांव के हल्ला कक्का जंगल से काट लाये थे ।

कुछ देर बाद आंगन के चार कोनों में चार थुमियां (लकड़ी की आदमकद बल्लियां) गाड़ कर ऊपर आड़ी लकड़ियां बांध दी गई थीं फिर बीच के खाली हिस्स्े पर आम और जामुन की हरी डालियों व पत्तों को पूरा जाने लगा था

मण्डप छाया नहीं कि औरतों में भात पहनने की रस्म निभाने हेतु हलचल होने लगी ।

ढपला वाले बुलावाये गये और मोहल्ले में भात का बुलौआ फिरवा दिया गया । अम्मां ने गुलाबी रंग की हरी किनार की कटवर की साड़ी पहनी और बहुत दिनो ंबाद अपने बालों में कंघी की ।

इषारा मिला तो आगे-आगे ढपला वाला और पीछे-पीछे सारी औरतें गाती हुई चल पड़ी थीं । गांव की गलियों में अपने गीत गुंजाती वे सब भतैयों के निहोरे करती हुई गीत गा रही थीं -

भैया भात सबेरे लेके जल्दी आना रे...

भैया भाभी जेसी बेंदी झूमर हमको लाना रे...

बहन क्या पागल हो गई है, बहर का सिर्रन हो गई है

बहन क्यालड़का बेचूंगा,बहन का लड़की बअेचूंगा

बहन क्या खुद बिक जाऊगां...

तुम्हे मैं क्या क्या लाऊंगा

भैया तुम भाभी बिचवा दो

तुम मुझको जेवर मंगवा दो

दूसरी भाभी ले आना , भैया तुम भात ले आना......

बजार वाली भाभी के गीत सबको खूब मस्त कर देते है, वे हमेषा नई फैसन के खूब जोरदार गीत गाती थी, कृपाराम को आज इतने बरस बाद अधबुढ़ापे में भी टेसन वाली भाभी का मण्डप की तारीफ में गाया वह गीत याद है जो उनने घर से चलते वक्त उठाया था और घर लौटते तक वे बीच में बीच में नये नयंे दोहों को अंतरा के रूप में जोड़ कर अकली गाती रहीं थीं -

बन्ना जी तुमरो मण्डप बड़ो भारी...

हीरा मोती लटक रहे, सोने की छबि न्यारी, बन्ना जी तुमरो.....

काली चोटी ऊन की जी वह गांठ गंठीली होय

बालापन की दोस्ती जी बड़ी रसीली होय बन्ना जी ...

सीसी भरी गंुलाब की जी वर भेजू किसके हाथ

देखनिहारे घरे नहीं और देवरिया नादान......बन्ना जी

कोठा ऊपर कोठरी जीवर गड़े सुनार

पायल गडियो बाजनी जी झनक सुने लगवार......बन्ना जी तुमरो मण्डप.....

बेला भरी खीचड़ी जी वर घी बिना खाई न जाये

बहुत पियारो मायको जी वर बिन रहो न जाये...बन्नाजी तुमरो.....

क्या साइकिल का बैठना जी वर साड़ी सत्यानास

साइकिल पर से गिर पड़ी जी वर टूटे बत्तीसी दांत....बन्नाजी

छो गोरी दो सांवरी जी कहीं चारई हाटनि जांय

गोरी के लग गओ काटना जी चारों झोंका खाय...बन्ना जी

तुरसाने को मोंगरा जी जे मे करिया नाग

काटत काटत मैं बची जी पिया तुम्हारे भाग....बन्ना जी

घड़ी भर आराम करके महिलाओं ने भात पहनने की तैयारी षुरू कर दी, अम्मां ने भीतर के कमरे से नारियलों से भरी डलिया लाकर अपने पास रख ली थी और एक नये लोटा में जल भर के कलष के रूप में अपने भैया भाभी से ष्सगुन का रूप्या डलाने के लिऐ मण्डप के बीच में रख दिया था । कुटुम के बड़े-बूड़े बुलाये जाने लगे थे जिससे कृपाराम के मामा उनको भात की पहिरावन पहना कर सम्मान कर सकें ।

बारी-बारी से खानदान के बड़े बुजुर्ग मण्डप के नीचे आते गये और कृपाराम के मामा उन सबको अपनी श्रद्धा और हैसियत से जो भी कपड़े यानी कि कमीज, तौलिया वगैरह बन सकी, भेंट करके तिलक लगाते रहे । अंत में कृपाराम के दादा,अम्मां कृपाराम उसकी बहन और भाई को वस्त्र देकर मामा ने सबके पांव छुये ।

कृपाराम को बरात में जाना बड़ा अच्छा लगता है, क्योंकि वहां सारी सेवायें अथफर हाती है । हजामत के लिए नाई बैठा होगा, कपड़ों के लिए धोबी तो जूतों पर पॉलिष का भी इंतजाम होगा, और फिर खाने का तो पूछो ही मत, पल पल पर तरहा-तरहा के पकवान के भरे दोने मिलेंगे । कृपाराम बेकरारी से उस क्षण का इंतजार कर रहा था जब बरात की बैलगाड़ी में बैठने के लिए उसके दादा उसे इषारा करेंगे ।

गांव और कुटुम के हर ब्याह में वह नमक और पानी परोसता है, लेकिन आज काका ने उसे अपने खुद के ब्याह में परोसाई ते दूर रही , घर से बाहर निकलने पर भी रोक लगा दी है । सारे बदन में थोपी हुई हल्दी से हर पल

एक अजीब सी गंध निकलती है, ऊपर से वक्त-वेवक्त कम्बल लपेटना पड़ता है तो पसीना के फौबारे छूट जाते है। कांधे से कमर तक लटकी कटार और उसकी पट्टी अलग कंघे से लेकर कमर तक चुभती है ।

देर रात उसे एक पत्तल में खाना मिला तो उसने बड़े स्वाद से लड्डू और रायता खाये , दूध-दही की चीजें बचपन से ही अच्छी लगती है उसे । बचपन से उसके घर में करियल (भैंस) पली रहीं, और जब कोई करियल छुटा जाती थी तो गड़रिया के घर में बकरिया तो बनी बनाई है । बकरिया का दूध तो भैंस से भी ज्यादा गाड़ा होता है । दूध में मीड़ के रोटी खाना कृपाराम का प्रिय षगल है ।

अगले दिन कृपाराम का कायापलट हो गया । सुबह-सुबह नाई दादा ने उसे तीन दिन बाद मलमल के नहलाया , तो उसे अपना सारा बदन रूई सा हल्का होता महसूस हुआ ।

अम्मां ने अब उसे नये कमीज पैंट पहनाये । नये कपड़ांे से निकलती माड़ की गंध कृपाराम को एक नषा सा पैदा कर देती है । उस वक्त भी उसे नषे का अहसास हुआ । उसके सारे के सारे दोस्त उसे नये कपड़ा पहनते हुए देख रहे थे और उनकी नजरों से कृपाराम साफ महसूस कर रहा था कि दोस्तों को इस वक्त उसकी किस्मत से रष्क हो रहा है ।

उधर बारात के लिए सजी गाड़ियों के पास बैठे बाजे वाले घर के लोगों और दूल्हा को आते देख कर अपनी इतनी देर तक की ऊब और थकान को भूलकर उत्साह से बाजे बजाने लगे थे । पीतल के चमकदार तूतू का बाजे वाला एक फिल्मी धुन बजा रहा था- लेके पहला पहला प्यार, भरके आंखों में खुमार, जादू नगरी से आया है कोई जादूगर !

पहली बैलगाड़ी में कुछ बूढ़े पुरानों को बैठा कर गंगाराम ने हंकैया को बैलगाड़ी बढ़ाने का इषारा किया, तो हांकने वाले ने अपनी चामटी फटकारी-चल रे गबर-गनेस मोड़ा त्याह लायें । उसका इषारा पाकर बैलों ने सिर मटकाया और तेजी से आगे बढ़ लिये । फिर तो होड़ लग गई, सारे मेहमान एक एक करके वहां खड़ी बैल गाड़ियों में बैठने लगे थे । सब ने अपने-अपने दोस्त चुन लिये और दोस्तों के झुण्ड अलग अलग बैलगाड़ियों में बैठने लगे ।

तब सूर्य डुब चुका था और अंधेरा होने को था कि कृपाराम से किसी ने कहा, देख लला वो दीख रहो तिहारी ससुराल को गांव !

उत्साह और उमंग से कृपाराम ने गांव की तरफ देखा ।

गांव के बाहर गेंवड़े पर लाल-पीले पग्गड़वाले आठ दस बुजरग आदमी बैठे थे उनने एक साथ कई बैलगाड़ियां आती देखीं तो वे एक-एक कर उठ कर अपनी धूल झाड़ने लगे । पहली बैल गाड़ी वाले से उनने पूछा-कौन की बरात है भैया?

बैलगाड़ी हांकने वाला अकड़ कर बोला-गंगाराम घोसी के लरिका की बरात है !

उन सब की आंखों मे चमक आ गई , वे इसी बारात की अगवानी के लिए जाने कब से आकर बैठे थे । वे आगे बढ़े और दूल्हा के बाप को ढू्ढ़ने लगे । किसी ने पहचान कराई तो उन सबने गंगा राम के घुटने छूकर भेंट क्रांरे की और बोले-चलो जनवासे में तुम सबकी बाट चाहि रहे हैं सब के सब ।

एक बगीचा में खुले मैदान में बीचों-बीच एक खूब ऊंची बल्ली गाड़कर पच्चीस-तीस हाथ चौड़े गोल कपड़े की चांदनी का गोल चंदोवा तान दिया गया था, जिसके नीचे बरात के रूकने का बंदोबस्त था । यहां से वहां तक दर्जनों तिरपाल और फर्स बिछा दिये गये थे । वहां भी लड़की वाले घर के कुछ लोग बैठे बरात का इंतजार कर रहे थे ।

कुछ देर में ही यहां से वहां तक बराती पसर गये थे ।

लोग सुस्ता ही नहीं पाये थे कि लड़की वाले का नाई आकर खड़ा होगया- अब दरवाजे पै टीका के लाने चलिवो होय बघेला जी !

बराती दरवाजे पर जाने के लिए सजने लगे ।

कृपाराम ने कपड़ा पहन लिए तो मामा ने आगे बढ़के उसे टीका लगाया

सब एक दूसरे से पूछ रहे थे- क्या दूल्हा घोड़े पर बैठेगा ! उनके गांव में तो ठाकुर-बामन ऐसा नहीं होने देते! मजाल क्या है कि कोई छोटे वर्ग का आदमी घोड़े पर बैठा कर अपने बेटे की बरात निकाल ले । ऐसा लगता है कि इस गांव के लड़की वाले ने बड़े लोगों से अनुमति ले ली होगी , तभी घोड़ा भेज दिया; नहीं तो उनके गांव में दूल्हा या तो फूफा की गोदी में चढ़ कर टीका करवाता है , या फिर साइकल पर बैठ कर टीका करवा लेता है ।

दूल्हा को बैठने के लिए घोड़ा क्या आया, बराती लोग जहां थे वहीं नीचे बैठ कर आपसी बहसबाजी में उलझ गये-ऐसा कैसे संभव है कि एक गड़रिया को घोड़े पर बरात निकालने की अनुमति दे दी गई । सबको आषंका थी कि हो न हो लड़की के बाप ने जबरन ऐंठ में घोड़ा मंगा लिया है और हो सकता है कि जब गांव से बरात निकले तो इस गांव के ठाकुर-बामन दूल्हा की बेइज्जती कर डालें ।

घोड़े के बहाने जाने कितनी तरह की बहस चल पड़ी थीं । एक जगह चर्चा थी कि अपने यहां रिवाज के मुताबिक दूल्हा को घोड़े पर नहीं बैठाया जाता,बल्कि घोड़ी मंगाई जाती है । तो वहां प्रष्नकर्ता पूछ रहे थे कि घोड़ा-घोड़ी में क्या फर्क हौ भला ? और बताने वाला अपनी बुि्द्ध से इस रिवाज का मतलब समझा रहा था ।

एक जगह इस बहाने गड़रियों समेत सारे पषुपालकों के षोषण पर बातचीत चल पड़ी थी । एक बुजर्ग बता रहे थे-इन ऊंची जात वालों ने अपनी जात को तो बरबादी चाहने वाला मान रखा है । आपस में कहावत कहतु है-अहीर गड़रिया गु्जर, तीनों चाहें ऊसर ! अब जे बेटी-चो बतावें, कि हम काहे ऊजर चाहेंगे, हम तो अपनी गाड़र-बकइया के लाने हरो-हरो चारो चाहेंगे ।

यह कहावत सुनकर दूसरा बूढ़ा बोल उठा था-अरे हमे तो सीधो सत्यानासी कहतु है ये लोग । अप सबने कहावत सुनी हंुइये- अहीर गड़रिया गूजर पासी, ये चारों सत्यानासी । अब इन सबते कौन पूछे कि भैया हम

सबही तो तुम्ह सबिके पेट भरि रहे, तुम्हारे लाने घी दूध मिले , जाके लाने हम गोबर-पेषाब की बदबू सूंघतु ,ढोर की गंदगी साफ करतु और तुम हमते सत्यानासी कहि रहे ।

तीसरा व्यक्ति थोड़ा कम उत्तेजित था-अरे बाकी बातें तो हमारे धंधे से और हमारे ढोरन से जुड़ी हैं, अकेले हमे मूरख कहिवे को इनके पास का तरक है। सारांे ने एक कहावत बनाई है-सुबह को निकरो संजा के घर आव, गड़रिया कमा जाने गेंहुंअन को भाव ।

इस झुण्ड में ज्यादा लोग थे इसलिये बाकी झुण्डेंा के लोग भी इधर आकर इकट्ठे होने लगे थे । भीड़ बढ़ती देख एक नेता नुमा व्यक्ति उठ खड़ा हुआ , और बोलने लगा-गड़रिया विरादरी के सम्मानीय सदस्य गण, एक विदेषी विद्वान ने कहा है कि सारे आर्य लोग मूल रूप से गड़रिया थे । सब जानते हैं कि इतिहास के ग्रंथों में साफ लिखा है कि आर्य लोग अपने पषुओं के लिए उम्दा चरागाह ढूढ़ते हुए इस देष में चले आये । इस तरह इस देष के वे सब लोग जो अपने को ऊंची जाति का मानते हैं वे सब या तो गड़रिया हैं या गड़रियों की संतानें हैं, और क्या बतावें, ये ब्राहमण लोग वेद-ग्रथों को सबसे ऊंचा मानते है, लेकिन कोई उनसे पूछे कि उन्ही विदेषी विद्वान का लिखा हुआ पढ़ें जिसमें वे कहते हैं कि वेद कोई धर्म ग्रंथ या ईष्वर के बनाये ग्रंथ नहीं है, ये तो गड़रियों के गीत है, तभी तो उनमे जगह-जगह अपने ढोरों के लिए समृद्ध चरागाह, अथाह पानी और अच्छे मौसम के लिए प्रार्थना की गई ।

एक पल को रूककर वह बोला-भाईयों, ढोर पालने से हम छोटे नहींे होजाते ! इतिहास पलट कर देखोंगे तो पता चलेगा कि संसार में बड़े-बड़े लोगों ने पषु पाले है। भगवान किसन को भले ही लोग यादव कहें, पर असल मंे वे पहले पषुपालक थे । महादेवके अवतारी कारसदेव भी पषुपालक थे भले ही उन्हे गुर्जर लोग अपनी विरादरी के मान कर उनकी पूजन करते रहें । ईसामसीह का जन्म एक पषुषाला में हुआ था और वे अपने उपदेषो में खुद को गड़रिया और अपने अनुगामियो को गाड़रें कहा करते थे । राज चंद्रगुप्त मौर्य गड़रिया बालक था । सारे गड़रिया राजा अजयपाल के वंषज है, यह बात आप और हम भली प्रकार जानते है। हमारे यहां पाल राजाओं का एक प्रतापी वंष हुआ है, वे सब राजा लोग पाल यानि गड़रिया थे । राजा और योद्धा ही नही,ं बड़े-बड़े कलाकार भी हमारी विरादरी में हुये-जिनमंे तानसेन ओर बैजू बावरा का नाम प्रथम गिनती में आता है ।

उसकी बात सुनकर लोगोंे ने जोर से जयकारा लगाया और देर तक तालियां बजाते रहे ।

कमीज-पजामा धारी एक सज्जन गला खंखार कर उठे और बोले- कुंजे बाबा की बात के बिना यह चर्चा अधूरी रहेगी । आप सब जानते हो कि कुंजे बाबा गड़रियों के कोकोलोरिया गोत्र के थे और उनके सिगरे बदन में कोड़ हो गया था, उनने तपस्या करी ओर सोने सा बदन फिर पा लिया । उनकी तपस्या का असर आज तक है कि उनकी पूजा हम सब गड़रियों में होती है, किसी गांव मंेें हमारी जाति का केवल एक घर काहे न हो कुंजे देवता की मढ़िया जरूर बनी होगी। हमारे लिये ढोर सबसे बड़ी दौलत है, और हमारे ढोरों की हारी बीमारी ठीक करने वाले होने से कुंजे देवता हमारे सबसे बड़े भगवान है । वे हमारेसब गोत्रों मे ंपंुजते है। चाहे हम सागर, पटोरिया,रठोरिया, हिरनवार, हिन्नवार, कोकोलोरिया,रछारिया,पड़ेरिया,चंदेल,मौर्य,लखोमिया रेनबार,रेकवार बानिया, पुरा,धनोरिया,पेंदवार में से कोई काहे न हों ।

वहां तो सभा का माहौल बन गया था । सब लोग जाने आने की सुरत भूल कर बैठ गये थे और हर बोलने वाले की बातें ध्यान से सुनने लगते थे । एक नवयुवक जो कहीं बाहर कस्बे में पढ़ रह था, वह उठ कर खड़ा हुआ और उस नेता नुमा आदमी से पूछने लगा-चाचा आप बताओ कि अपने यहां ब्याह पढ़ने के वास्ते पहले बामन काहे नहंी आता था ?

वे सज्जन उठे-देखो बेटा सच्ची बात पता नही, कै क्या बात रही होगी? कोई तो ये कहता है कि एक बार किसी गड़रिया ने बामन के लिए अपने घर में किसी मंगल उत्सव में पूजन कराने बुलाया तो बामन नही आया । कारण पूछने पर कहने लगा कि तुम्हारे यहां हजारन भेड़-बकरी है, रोज कोई न कोई ब्या जाती है, और इस वजह से तुम्हारे यहां सदा ही सोर-सूतक बना रहता है ,सो तुम्हारे यहां हम कभी पजन कराने या ब्याह पढ़ने नहीं आयेंगे ।

एक कथा यह भी सुनाई जाती है कि एक गड़रिया के लड़का की बरात जा रही थी कि रास्ते में एक बामन मिल गया, उसकी मोटी चुटइया, मोटा जनेऊ और बड़े तिलक मुद्रा देखके सबने समझा कि बड़ा जानकार पंडित है, सो सबने उससे निवेदन किया कि पंडित देवता हमारे यहां ब्याह पढ़ने चलो । वह बोला कि मैं तो बिना पढ़ा लिखा आदमी हूं, मुझंे मंतर-तंत्तर नहीं आते ! बरातियों ने समझा यह बहाना बना रहा है ,भला बामन आदमी बिना पढ़ा लिखा कैसे हो सकताहै ? सो वे उसे जबरन उठा के अपने साथ ले आये । फिर जब भांवरन के बखत पंडित ने मण्डप के नीचे भी वही बात कही कै मै निरक्षर हूं तो बरातियों ने हंसी-ठेला में उसके साथ झूमा-झटकी कर दी , यानि कि उसे इतना पीटा कि वह मर ही गया, फिर उस पंडित की लाष को पटा के नीचे दाब के बोले-पंडित मार पटा तर दाबो, हो जा मोड़ा-मोड़ी चांईं मांई !

......उस दिनसे बामनों ने गड़रियों के यहां आना जाना बंद कर दिया ।

......बरसों बाद झांसी मे सेठ दीनानाथ पाल ने 1911 में ब्राहमणों की एक बड़ी सभा बुलाई और सबसे प्रष्न पूछा कि क्या गड़रिया ष्ूाद्र होते है, तो सब बामनों ने आपस में शास्त्रार्थ करके निर्णय किया कि गड़रिया षूद्र नही होते है।

कस्बे में पढ़ रहे युवक ने दुबारा उठकर प्रष्न किया-जब बामन नही आता था तो हमारे यहां ब्याह कैसे होते थे ?

एक बूढ़े दादा उठ खड़े हुए और बोले-अरे पगले इतनो नाने जान्तु तैं ! पंचन से बड़िके काहे के बामन और काहे के को ? उन दिनों में दो सरई (दिया) में सुपारी,चावल,दक्षिणा,हल्दी कीगांठ रखके दोनों दियों के मुंह आपस में जोड़ देते थे और ऊपर से कलावा (आंटी-लाल रंग का धागा) लपेट देते थे । फिर समाज के बुजुर्रग और पूज्य व्यक्ति आसपास बैठ जाते थे । उन दियंो को अपने दोनो हाथों में लेकर बजाते भऐ सब लोग एक दूसरे को देत जात हते ओर मण्डप के नीचे खंभ के चारई तरफ ओर दूल्हा-दंुलहिन सात भांवर के लिये चांई-मांईं घूम जाते हते । उस समय कहो जाउत हतो-

सबजने मिल के सरैया बजाओ, दूल्हा दुलेनि सात बार घूम आओ

जा से बढ़के कौन सो न्याओ, कहो भइ्र पंचो हो गओ ब्याओ

कृपाराम के दादा बीच में खड़ेे हो कर बोले...अब सब पंचों से विनती है कि टीका के लाने दरवाजे पै चलिवो होय, कल सुजन भ्ेेांट के बखत दुबारा हम लोग बैठ के बातचीत करेंगे ।

बरात चली तो सतर्कता के नाते गंगाराम ने अपने बेटे को घोड़े पर नही चढ़ने दिया । आगे-आगे बाजे बजते चले, उनके पीछे बरात बीच में दूल्हा और अंत में खाली घोड़ा चलता रहा ।

लड़की वाले के दरवाजे पर बरात पहुंच गई तब एन दरवाजे के सामने घोड़ा खड़ा करके कृपाराम को बिठाया गया । दुलहिन का बाप हाथ में पूजा की थाली लेकर खड़ा हो गया, उनका पंडित बगल में खड़ा था और उसने मंत्र बोलना आरंभ कर दिया था-गणानामत्वा गण्पति गुमम हवामहे

प्रिया नाम त्वा प्रियपति गुम्म हवामहे

निधिनाम त्वा निधिपति गंुम्म हवामहे

बसो मम आहम जानि गर्भ्र धम्मः त्वम जासि गर्भघ्वम:

सुबह देर तक सारे बराती अलमस्त और बेचिंत होकर सोते रहे ।

दुलहिन के बाप ने एक धोबी भेज दिया था जो कुंआ की जगत पर बैठ कर सबके कपड़े धो रहा था । बगल में छुरा-उस्तरा धरे एक नाई आकर बैठ गया था जो लोगों की दाड़ी और हजामत बना रहा था । बरातियों के नखरे जग गये , लोग नाई के सामने बैठ कर अपनी हप्तों की बड़ी दाड़ी और बाल नाई से छिलवाने लगे । उधर घोबी के सामने कपड़ों का बड़ा ढेर लग गया था ।

कुंआ के ठण्डे पानी से लोगों ने जी भर के नहाया और एक तरफ रखा सरसों का तेल बालों और हाथ पांव में चुपड़ने लगे ।

दोपहर के एक बजे लडकी बाले की तरफ से भोजनांेंका बुलौआ आया तो लोग कपड़े पहर-पहर कर तैयार होने लगे ।

भोजनों के वक्त औरतों को ष्संभवतः मस्ती चढ़ आई थी, सो वे अब सीधे सीधे गारी गाने लगीं थीं-

सजन तुम बातन के बड़िया

गंगाराम अक्कल के गड़िया, मेरी भंवर कली

कहत हते मेरी महल अटारी, और बनी छजिया, मेरी भंवर कली

छजिया मजिया कछुई नई है द्वार खड़ी टटिया..... मेरी भंवर कली

क्हत हते मेरे मोड़ा मोड़ी एक से इक बड़िया.... मेरी भंवर कली

मोड़ा मोड़ी कछूई नई है, जनम कै है रडुआ,........ मेरी भंवर कली

कहत हते मेरे भैंसे गइये और बंधी बछिया

गइयें भैंसे कछुई नही है द्वार बंधी कंुतिया,......मेरी भंवर कली

कृपाराम को लग रहा था कि गारियां सुन कर काका वगैरह नाराज हो उठेंगे, लेकिन उसे ताज्जब हुआ कि वे सब मुसकराते हुए गारियां सुन रहे थे । इस तरह मुसकाने से गाने वाली महिलाहओं का हौसला वढ़ा और वे दूसरी गारी गाने लगीं-

मेरी सेवा मंें नौकर हो सारे, तुझे मजूरी दे दउंगी

दे दउंगी रे दिलाय दउंगी, तुझे मजूरी दे दउं्रगी

सुन लो रे गंगाराम,जमनाप्रसाद, रेवतीप्रसाद, दूल्हा के फूफा-मामा हो

मेरी सेवा में नौकर हो सारे ....तुझे मजूरी दे दउंगी

अन्नो दर, मेरो दन्नो दर, मेरी नौ मन भूसी फटक सारे , तुझे मजूरी ....

आखर झार, मेरी बाखर झार, मेरे चूल्हे में चौका लगा सारे.... तुझे मजूरी

खटिया बिछा , बिछोना बिछा मेरी सेजों में तकिया लगा साारे.... तुझे मजूरी

साड़ी धो मेरो साया धो मेरी चोली मेंसाबुन लगा सारे...... तुझे मजूरी

दूल्हा और उसके घर के लोगों का भोजन समाप्त हो गया लेकिन गारियां पूरी नहीं हुईं । सब लोग कुल्हड़ के पानी से चुरू लेकर हाथ धोने लगे, और साफी से मुंह पोंछते हुए भीतर झांकने लगे कि आखिर वे कौन दबंग औरतें हैं जो ऐसे साफ ढंग से मजूरी देकर घर और अपने निजी काम कराना चाहती है, लेकिन वे सब निराष हुए क्योंकि अंदर सारी औरतें घूंघट डाले बैठी थीं । सब लोग मुसकराते उठे और जनवासे को लौट गये ।

कृपाराम जब मण्डप में पहंुचा उसकी सास ने आगे बढ़के उसे अपने हाथ से दोना मे ंरखा दही-गुड़ खिलाया , और उसके दांये हाथ की छिंगली पकड़ के मण्डप के नीचे खम्भ के पास ले आई।

सामने ही कृपाराम के ससुर बैठे थे जिनकी गोदी में पीली सी साड़ी पहने एक कम उम्र की लड़की बैठी थी जिसके चेहरे पर हाथ भर का घूंघट था ।

’चलो बघेले जी कन्या दान करिये ‘ कहते हुए पंडित ने आटे की बनी एक लोई दुलहिन के हल्दी लगे पीले हाथो में रख दी थी और दुलहिन का हाथ उसके मां बाप ने अपने हाथ में ले लिया था। पंडित महाराज जोर जोर से जाने किस भासा में मंतर सुन रहे थे । भावुक होती स्त्रियों का स्वर ठनकदार आवाज में वे गा रही थीं-

गउअंन के हाथ सदा नित होवे कन्या के दान न होंय रामजी

गउओं के दान पुरोहित को दीन्हे , कन्या को दान दामाद को हो राम जी

घर ही गंगा, आजुल घर ही हो जमुना घरही हो तीरथ हो राज मी

मड़वा तरे हो अजुला गंगा बहत है, जा मै करो इसनान हो राम जी

पंडित ने इषारा किया तो दुलहिन के पिता ने अपनी बेटी का हाथ कृपाराम के हाथ में दे दिया। वह गर्म और नर्म सा हाथ अपनी हथेलीयों में संभालते वक्त कृपाराम को फुरहरी सी लगी।

उधर पंडित ने दूल्हा-दुलहिन को अगल-बगल बैठा कर कृपाराम के ससुर से कहा था- चलो पांव पखारो,बघंेला ।

फिर दूल्हा-दुलहिन के पांव पखरई का यह क्रम देर तक चला , सांझ से रात हो गई और रात भी आधी होने को आगई थी । दस दिनों से लगातार गाते रहने की वजह से महिलाओ के गले बैठ गये थे, लेकिन वे हार नहीं मान रहीं थीं और अब भी गा रही थीं-

पलंग मेरो हीरन से जड़ियो,पलंग मेरो मोतिन से जड़ियो

सजे तुम्हारो महल पलंग मेरो हीरन से जड़ियो !

कुंआ में दो मेड़का जी मोय पानी भरन न देंय

पंासे पकड़े लेज को जी छूंटें न छूट न देंय,,,पलंग मेरो

तुुारसाने को मोगरा जी, जेमे करिया नाग

काटत काटत मैं बची जी पिया तुम्हारे भाग...पलंग मेरो

रखनों नहीं जी कांच को जी छिंगरी को दुख देय

ऐसे सजन को करूं जो हंसे न ऊतर देय....पलंग मेरो

छज्जे से छज्जे मै फिरूं झांके देवर जेठ

छज्जे से मैं गिरूं लगी महीना चोट..... पलंग मेरो

अस्सी कली को घाघरो री धरो पलंग के बीच

साजन मेरे नादना कि मच रही कीचमकीच....पलंग मेरो

मोट खददारी ओढ़ने जी सास न ओढ़न देय

ओढ़ बजारे मैं गई जी घर आ ओलम देय,,,पलग मेरो

तारा में तारा बसे जी चंदउ बसे अकास

घर में साजन यों बसे जी जो दरपन मे ंकांच

पलंग मरो हीरन से जडिंयो...........

दोपहर को बाहर चबूतरों पर तो बरातियों की दुबारा पंगत बैठने लगी थी कि भीतर विदा की तैयार होने लगी । एकाएक कृपाराम के दादा और उसके ससुर के बीच जाने किस बात पर विवाद होने लगा था । भीतर से औरतें भी तेज स्वरों में जाने क्या-क्या बोल रही थीं । कृपाराम ने षंकर से कहा कि वह मामला समझ के आये कि क्या मामला है!

थोड़ी देर बाद लौटकर षंकर ने बताया कि दुलहिन छोटी उमर की होने से उसका बाप विदा नही करना चाहता लेकिन कपाराम के दादा खाली बारात वापस ले जाने को तैयार नही है- वे कह रहे है कि जैसी हंसती खेलती है, वैसी ही वहां भी हंसती खेलती रहेगी ।

अंततः समाज के कुछ लोगों के हस्तक्षेप के बाद मामला निपटा कि लड़की की एक बहन भी उसके संग जायेगी ।

तब दोपहर के दो बजे थे जब उनकी बैल गाड़ियां अपने गांव के लिये सज के खड़ी हो गयीं। हल्दी का हमला यहां भी हुआ, अब तक गारीगा रही महिलाऐं अपने हाथों में हल्दी थथेरें बरातियों पर औचक हमले करने में जुट गई थीं । जवान लड़के तो बिगड़ने लगे थे, लेकिन प्रौढ़ लोग इस खेल से प्रसन्न थे ।

गांव के गोंवड़े तक कृपाराम के पिता बारात को छोड़ने आये ।

अंधेरा होते-होते उनकी बैल गाड़िंयां अपने गांव पहुंच गईं ।

अम्मां और बजार वाली भौजी ने लपक कर दुलहन को संभाला

लल्ला पंडित ने पूछा-दाऊ, फिर तुम्हाऔ चौक तो पांच साल बाद भओ हुइये !

हां पांच साल बाद हम जब खूब सयाने भये तब हमाई अम्मां ने जिद करके हमारो गौनो करो , नाही तो हमारो ससुर कहित हतो कि हमाई बिटिया अबे भी छोटी है, अबे नही भेज रहे हम ।

इतना कह कर कृपाराम ने हंसते हुए अपना किस्सा समाप्त किया और कहा कि कल मैं बताउंगा कि हम लोग डाकू कैसे बने।

उस रात सोते वक्त मेरे कानांे में कृपाराम के ब्याह के वे सारे गीत गूंज रहे थे जो उसने बाकायदा गा कर भी हम सबको सुनाये थे ।

देर रात जाकर नींद लगी मेरी उस दिन ।

,,,,,,,,,

हिकमत

कृपाराम ने इस तरह किस्सा शुरू किया मानो वह किसी और की कहानी सुना रहा हो....

कृपाराम एक सीधासादा और मेहनती चरवाहा था । बचपन से ही तेज अक्कल वाला था , लेकिन गांव में स्कूल न था सो बचपन में पढ़-लिख न सका । पिता ने जैसे-तैसे करके बचपन में ही विवाह कर दिया था और घर में दो बच्चा खेल रहे थे तब कृपाराम के।

अपने पिता गंगा घोसी के साथ कृपाराम दिन भर अपने ढोर-बखेरू चराता रहता । शाम को कारसदेव के चबूतरे पर ढांक बजाता , ग्वालों के देवता कारसदेव की प्रशंसा में उनके प्रिय स्तुतिगीत गोटें गाता। उस समय कृपाराम की उमर थी चालीस साल, उससे छोटे तीन भाई थे- श्यामबाबू, अजयराम और कालीचरण । तीनों तीस साल से ऊपर के हो चुके थे । न ब्याह हुआ था, न सगाई । दिन भर गांव में मटरगश्ती करते घूमते तो गांव के तमाम बुजुर्गो की नजर में खटकते ।

वे रोज नई हरकत कर डालते ।...... कभी किसी की खड़ी फसल में अपनी भैंसे चराने छोड़ देते तो कभी....... दूसरे के खेत को जा रहा नहर का पानी अपने खेत तरफ मोड़ लेते । वे कभी....... किसी सरकारी अहलकार पर बिना बात हाथ उठा देते तो कभी....... किसी पड़ौसी का मुर्गा चुराकर खा जाते । लड़कियों को छेड़ने और अकेली-दुकेली काम करती औरतों से चिपटने के तो कई किस्से कर डाले थे उनने ।

रोज कहीं न कहीं अरे-टण्टे कर आते, और शाम को गंगा घोसी के पास कहलान आ जाती । घोसियों में एक कहावत बहुत प्रचलित है- खुंश की मुंश दोहनिया पे दे मारी । उनके घर रोज यही होता , बच्चों के ब्याह न होने से समाज से खफा होकर बैठे गंगा घोसी न उमर देखते न शरीर ,रोज ही डंडा उठाते और अपने जवान बेटों की पिटाई पर पिल बैठते।

बेटों के मन में धीरे-धीरे अपने बाप के खिलाफ गुस्सा जमने लगा, लेकिन बदन से हट्टे-कट्टे अपने बड़े भाई कृपाराम से वे तीनों डरते थे , सो बाप के खिलाफ एक शब्द भी न बोल पाते थे ,चुपचाप मार सहते रहते थे।

बाप और मताई रोज अपने निठल्ले बेटों को गरियाते कि कैसे बेशर्म हैं अपने बाप की कमाई खाते-खाते गर्रा रहे हैं, खुद कुछ नहीं करते ।

लेकिन गांव में काम ही कहां धरा था ! होने को शहर में काम की कमी न थी लेकिन शहर जायें तो किसके दम पर ? फिर ऐसे अरजेंटा लड़कों को किस भरोसे गंगा घोसी गांव से बाहर भेजते !

सरपंची का चुनाव आया ।

हर बार की तरह हिकमतसिंह चुनाव मैदान में था ।

हिकमतसिंह के खिलाफ गांव का कौन आदमी खड़ा हो सकता था भला ! लेकिन एकाएक गांव में हौर मच गया.......कि बीस साल से निर्विरोध सरपंच बनते आ रहे हिकमतसिंह के खिलाफ गांव के ही सं ुदर ठेकेदार ने इस साल के सरपंची चुनाव में परचा भर दिया है..........कि गंगा घोसी के तीनों छोटे लड़के इन दिनों उसके बॉडीगार्ड बनके उसके साथ भाग-दौड़ कर रहे है........कि शहर से पचास गुंण्डे भी साथ ले कर आया है सुंदर ठेकेदार ....कि हर बार की तरह एक तरफा वोटिंग नहीं हो पायेगी इस बार............ कि अब हिकमतसिंह के दिन लद गये ....किइस बार हिकमत की हिकमत नही ंचलपाऐगी... और भी बहुत कुछ ऐसी ही बातें, जिनसे गांव में आग सुलग सकती थी ।

और सचमुच संवर्ण पट्टी में आग लग गई थी ।

चुनाव वाले दिन पंचायत के तीन गांव के तीनों मतदान केन्द्रों को सुदरसिंह ने अपने कब्जे में लेकर वोट डालने आये सारे वोटर भगा दिये और अपने पक्ष में वोट डलवाना शुरू किया , तो हिकमतसिंह भला कहां से

चुप रहता ,उसने कलेक्टर और एसपी को सीधा फोन मिलाया और राजधानी तक के अफसरों को फोन खटखटाना शुरू कर दिया । सांझ होते-होते उस पंचायत का चुनाव रद्द हो गया ।

अगले दिन कलेक्टर और एसपी उस पंचायत के तीनों गांवों में खुद आये । उनके सामने हिकमतसिंह की तरफ से दर्जनों गवाह तैयार थे , उनने भी वही कहा जो हिकमतसिंह कह रहा था । शाम तक वूथ कैप्चर करने वालों के खिलाफ बाकायदा पुलिस रपट दर्ज करा दी गयी ।

फिर क्या था ! हिकमतसिह की बन आई ।

उसने साम-दाम-दण्ड-भेद चारों नीतियों को अपना कर पुलिस के नीचे के अफसर-अहलकारों को हाथ में ले लिया और चुनाव कार्य में दखल देने के मामले को इतना उछाला कि सुंदरसिंह समेत उसके सारे समर्थक सीखचों के अंदर पहुंचा दिये गये । श्यामबाबू, अजयराम और कालीचरण तो गिरफ्तार हुये ही निरपराध कृपाराम भी नहीं छोड़ा गया। हिकमतसिंह के कहने पर पुलिस दरोगा ने उस रात उन चारों को इतना मारा कि तीन-चार दिन बाद जब वे लोग घर लौटे तो उनका अंग-अंग कुचला जा चुका था।

श्यामबाबू के मन में लगी आग मंदी नहीं हो रही थी और उसको बड़ी बैचेनी हो रही थी । वह हिकमतसिंह के खिलाफ सीधा अटैक करना चाहता था ।

उसकी इसी इच्छा ने सारा काम बिगाड़ दिया ।

हुआ ये कि हिकमतसिंह की सबसे छोटी बेटी संतों सावन के महीने में गौने के बाद पहली बार गांव लौटी थी और गांव की दूसरी नयी ब्याही लड़कियों की तरह गहनों-जेवरों और नये कपड़ों में सजी-धजी रूनझुन करती अपनी सखी-सहेलियों से मिलती-भेंट करती फिर रही थी ।

एक सांझ गांव की गली में वह अनायास ही श्यामबाबू के सामने आ गयी तोे उसका माथा ठनक उठा । अठारह-उन्नीस साल की उफनाती उमर ,ऊपर से नये ब्याह के कारण बदन में पैदा हुई लुनाई ने संतो की देह को ऐसी उत्तेजक बना दिया था कि देखने वाला अपना नियंत्रण खो बैठे । संतो की कसमसाती देह देख कर श्यामबाबू का भी मन अकुला उठा और धनुष की प्रत्यंचा सा तन गया उसका शरीर विद्रोह के लिये व्याकुल हो उठा ।

वह उस क्षण से ही कुछ कर गुजरने की सोचने लगा ।

अगले दिन उसे मौका मिल गया ।

संतो उस वक्त अपनी एक सहेली के साथ गांव के बाहर मौजूद अपने बगीचे पर जा रही थी कि अमराई में छिपा श्यामबाबू अचानक ही प्रकट हुआ और उसने संतो को अपनी बांहों मेे जकड़ लिया । संतो की सहेली तो सिर पर पैर रखके भाग निकली वहां से । अकेली रह गई संतो यह देख कर अधमरी सी हो गई । फिर भी उसने श्यामबाबू से छूट कर भागने का प्रयास किया । एक बार तो लगा कि वह उससे आजाद हो गई है और वहां से आसानी से भाग लेगी । लेकिन लंब-तड़ंग श्यामबाबू ने फुर्ती दिखा कर संतो की साड़ी का एक कोना अपनी

बलशाली मुटठी में जकड़ लिया । भागने का प्रयास करती संतो के बदन से साड़ी खिंचती चली गयी और कुछ देर बाद वह अधनंगी होकर असहाय सी वहां खड़ी रह गयी थी ।

श्यामबाबू के अनियंत्रित हाथ संतो के बदन पर हड़बड़ी से फिसलना आरभ हुये तो घबराई हुयी संतो निढाल हो गई थी ।

उधर श्यामबाबू संतो को निर्वस्त्र करने का प्रयास करते करते खुद ही ढेर हो गया था । बरसों का तरसता बदन आखिर कितना धैर्य रख सकता था ! लेकिन श्यामबाबू को अपनी इस नाकामयाबी का कोई गम न हुआ , वह तो सिर्फ संतो को बदनाम करना चाहता था । इस घटना के बाद उसका उद्देश्य हल होता नजर आ रहा था । वह तुरंत ही वहां से रफूचक्कर हो गया , तो डरी-सहमी संतो ने जैसे-तैसे अपने कपड़े व्यवस्थित किये और वापस चल दी थी ।

घर लौट कर संतो ने अपनी मां को सारा किस्सा सुनाया तो मां ने दांत तले उंगली दबा ली-बाप का बदला बेटी से लेने का यह तरीका अब तक इस गांव में प्रचलित नहीं था ,श्यामबाबू ने ये क्या किया !

ठकुराइन ने अपनी बेटी को उसके सुहाग की सौगंध देकर इस बात के लिए मजबूर किया कि यह बात वह किसी को नहीं बताएगी । संतो सहमत हो गई, लेकिन मां और बेटी दोनों के मन पर बड़ा वजन टंग गया था ।

लेकिन अंततः हिकमतसिंह को जाने कैसे यह बात पता चल ही गयी । घर लौटकर उसने अपनी पत्नी को इतनी बडी अनहोनी छिपा लेने के लिए बुरी तरह डांटा, और एक दो लप्पड़ भी मार दिये ।

आंसू गिराती ठकुराइन ने अपने पति को कुल-खानदान की इज्जत का वास्ता दे कर उससे ष्यामबाबू के खिलाफ कुछ न करने का आग्रह किया । तब हिकमतसिंह चुप रह गया लेकिन झल्लाहट में उसने घड़ांेची में रखे सारे घड़े फोड़ डाले ।

फिर भी ठाकुर का मन ज्यादा दिन धैर्य न रख सका । अंततः हफ्ते भर बाद उसने अपने लठैतों से गंगा घोसी समेत उसके चारों बेटों को अपने घर बंधबा कर मंगा लिया था ।

वो पूरी रात उन पांचों की पिटाई होते बीती । तमाशा देखने के लिए गांव के भगोना पंडित से लेकर तमाम वे लोग मौजूद थे जो हिकमत के कहने पर अपनी धोती की कांच तक खोलने को तैयार रहते थे । संतों के छेड़ने के बाद से उन सबको अपनी बहू बेटी की इज़्ज़त खतरे में नजर आने लगी होगी शायद ।

ठाकुर ने अपने हाथों श्यामबाबू के बदन में कमर के नीचे लोहांगी से ऐसे-ऐसे ठूंसा मारे कि वह जिंदगी भर किसी बहू-बेटी की तरफ आंख उठा कर न देख सके । यही हाल कृपा, अजय और कालीचरण का हुआ।

घर लौटे तो गंगा घोसी के चारों के चारों बेटे नामर्द हो चुके थे । उन चारों का बदन अनगिनत चोटों और फै़रक्चरों से भरा हुआ था । विरादरी वालों के साथ वे थाने में रपट दर्ज़ करने गये तो हिकमतसिंह के जरखरीद गुलाम दरोगा ने उनकी एक न सुनी और वे निराश होकर घर लौट आये ।

पूरे दस दिन की तीमारदारी के बाद जाकर वे लोग इस लायक हुए कि चल-फिर सकें । वे लोग उसी दिन गांव से भाग निकलेे । घर में सिर्फ कृपाराम की पत्नी और बूढ़े मां-बाप रह गये ।

पुलिस आये दिन उन दोनों से पूछने-ताछने आ धमकती । वे दोनों क्या बताते ! पुलिस हाथ मलती रह जाती ।

उन चारों के फ़रार होने की खबर सुनके गांव में सबसे ज्यादा हिकमतसिंह को डर गया । उसने अपने घर पर लठैतों की फौज बिठा ली ।

महीना भर तक जब कोई वारदात नहीं हुई तो गांव के लोगों ने यह कहके अपने मनको समझा लिया कि वे लोग बागी नहीं बने बल्कि इतनी बेइज़्ज़ती के होने से लाज-शरम की वजह से वे लोग कहीं अंत गांव में जाकर रहने लगे हैं ।

लेकिन जल्दी ही उन सबका यह भरम टूट गया ।

तब उन्हे गांव से जाये हुए डेढ़क महीना हो चुका था कि एक दिन गांव वालों को पता चला कि गांव से मील भर दूर ,शहर से तगादा करने आये एक मुनीम की मोटरसाइकिल चार लोगों ने रोककर उसके पास रखे बीस हजार रूपये छीन लिये हैं । मुनीम ने जो हुलिया बताया,वो गंगा घोसी के चारों बेटों से मिलता-जुलता था ।

सारे इलाके में जाहिर हो गया कि गंगा के बेटे बीहड़ में कूद गये ।

अगले कई दिनों तक यह क्रम चला कि गंगा जिस रस्ते से निकलते , गांव के लोग झुक-झुक के उससे जुहार करते । गांव के हर मोहल्ले के लोग किसी न किसी बहाने उसके पास आने लगे और उनमंे से हरेक यह जताता कि पूरे गांववासी गंगा का पूरा सम्मान करते हेंै , हर ऊंच-नीच में उसके साथ हैं । पहले तो वह इस आवभगत और आत्मीयता का मतलब नहीं समझ पाया लेकिन फिर यकायक उसको लग उठा था कि बेटों के बागी बन जाने से उसकी तो प्रतिष्ठा ही बढ़ गई ।

अपने गांव में गंगा को इतना सम्मान मिला कि वह फूला न समाया । वह पत्नी से यही चर्चा करता रहता । उसे लग रहा था कि डाकू बनके उसके बेटों ने पूरी दुनिया के सामने अपने बाप का नाम ऊचा किया है, खानदान का नाम उद्धार दिया है ।

अपने बेटों के लिए उसका दिल आशीषों से भर उठा । वह प्रायः गांव के फगवारे कन्हई को अपने घर बुला लेता और सीताकिशोर के दोहे सुनाने का आग्रह करता। अपनी सारंगी की रंे-रैं , पैं-पैं के बीच कन्हई लम्बी तान ले सुनाने लगता-

घर घर मंे चरचा चलत   नामवरी हो जात

जब लरिका जय बोलिके भरकन मंे कढ़ि जात

पीरी माटी भुरभुरी उपजा में   कमजोर

मनुस कहां से होंयेगे मृदुल और गमखोर

उधर उन चारों भाइयों का बीहड़ की जिंदगी से पहला-पहला परिचय था, सो उन्हे भारी तकलीफ हो रही थी । घूमने के लिए या ढोर चराने के लिए बीहड़ों में आना और बात थी , हमेशा के लिए रहने के वास्ते बीहड़ों में आ जाना और बात । पीली मिट्टी के वे ही ऊंचे-नीचे ढूह पहले कितने लुभावने लगते थे , लेकिन अब वे मौत का घर दिखाई देते थे- पता नहीं कौन किस टीले के पीछे छिपा हो, और घात लगा के उन पर टूट ही पड़े । न कोई ऊंचा पेड़, न दूसरी कोई छाया, खुला आसमान और ऊंची-नीची विपदा भरी धरती , बस यही आसरा था उनका । जाने कितनी बांबी और जाने कितनी खोह दिखती थी उन्हे जिनमें सांप-बिच्छू से लेकर गोहरे तक बिचरते रहते । एक दो दिन में ही अकुला उठे वे । दिन भर भूखे-प्यासे रहने, आदमजात से छिप के रहने में , आगत संकटों की कल्पना में डूब कर डरते रहने में, और किसी तरह रोटी जुटाने में ही उनकी सारी ऊर्जा नष्ट हुई जा रही थी । बीहड़ में खुले आसमान तले इधर उधर भागते रहने और अधपेटे खाना खाने के कारण वे लगातार कमजोर होते जा रहे थे । दो-चार छोटी-मोटी लूट करके उनने जो थोड़ा बहुत रूपया कमाया , वो तो रोटी-पानी के इंतजाम में ही पानी की तरह खर्च हो चुका था। उन्हे ताज्जुब था कि जो रोटी गांव में इतनी सहज है, बीहड़ में इतनी मंहगी और दुर्लभ क्यों हो जाती है ।

उन्ही दिनों की बात है । एक रात वे लोग अमराई में सोये पड़े थे कि अनायास उन्हे एक डाकू गिरोह ने घेर लिया था । जागे तो उनकी घिग्घी बंध उठी थी । यह देख कर डाकू ने उन्हे आश्वस्त किया ।

वह डाकू उन्हे मारने नहीं, संरक्षण देने आया था।

वह था डाकू समरथ रावत -आदिवासियों का नया मसीहा !

उसने कृपाराम को आशीष दिया-‘‘ डरो मती हमसे , हमको अपना बड़ा भैया मानो ! जब हमे पता लगा कि तुम इते तकलीफ में हो तो हमसे सहन न भई , हम तुम्हे लेनेआये हैं।........चलो कछू दिन के लाने जि इलाके से बाहर निकरि चलो । ....हम बताहें तुम्हे कै, कौन-कौन अपयें दोस्त हैं और कौन-कौन दुश्मन !..... अपयें दुश्मन को अकेला मति जानो-जे मनुवादियों को पूरो समाज है अपओं दुश्मन ।......इन सबने मिलिके हमे गांव-खेड़े में खूब पदाओ , अबि अपनो जमानो आ रहो है । चलो निस्फिकर होकर हमाये संग चले चलो !‘‘

वे विमुग्ध से होते उसके पीछे चल दिये ।

समरथ ने अपने सिर पर रखी पोटली में से रोटी निकाल कर उन्हे खिलाईं फिर ढोर की तरह तलैया में मुंह डाल के पानी पीना बताया ।

इस तरह समरथ ने उन्हे बागी जीवन के पाठ पढ़ाना शुरू किया ।

मुखबिर लायक आदमी पहचानना, उस पर नजर रखना और फिर उसे मुखबिर बनाना । उससे सूचनायें लेना ,उसके मार्फत दूसरे मुखबिर बनाना जैसे कई गुर बड़े धीरज से सिखाये समरथ ने उन्हे । समरथ कहता था- ‘‘बागी का जीवन क्षण भंगुर है ! पता नहीं कौन दगा कर दे और बागी लाश बनके धूल चाटता दिखे ! इसलिये बागी के लिये सबसे ज्यादा जरूरी है विश्वस्त मुख़बिर रखना । जिसके जितने ज्यादा मुख़बिर होंगे , वो उतना ज्यादा ताकतवर होगा और उतनी ही ज्यादा लम्बी उमर होगी उसकी । बागी तो वैसे भी एक चलती-फिरती लाश है । बस

जितने दिन का भोगमान है, उतने दिन ऐश कर लो , चल फिर लो ,बाद में तो पुलिस वाले इस शरीर की ऐसी दुर्गत करेंगे कि खटिया से बधा गांव गांव घूमेगा । वे कहेंगे- लो देखो फलां बागी को । कितना दहाड़ता था, अब लाश धूल खाती फिर रही है ।‘‘

कृपाराम ने तभी निश्चय कर लिया था कि जितने दिन जियेंगे , शान से जियेंगे । भरपूर खायेंगे-पियेंगे और ऐसी ऐसी वारदातें करेगे कि नाम जहार हो जाये , अखबारों में रोज-रोज कारनामे छपे ।

सचमुच अखबारों की खबरों से बड़ा प्रेम था उन सबको । एक पोटली में गुड़ी-मुड़ी करे ढेर सारे अखबार लादे फिरते थे वे सब ।

समरथ उन दिनों   चम्बल में एक तूफान की तरह आतंक मचाता घूम रहा था ।

पहली डकैती दिन-दहाड़े वीर पुर गांव में डाली थी समरथ ने कृपाराम के साथ । समरथ ने योजना बनाते वक्त समझाया था-‘‘मुखबिर ने खबर करी है कि हरिराम के यहां कोई हथियार नहीं है और गांव-मोहल्ले में उसका कोई शुभचिंतक भी नहीं है , सो उसके यहां डकैती डालने पर कोई आदमी उसकी मदद को हथियार लेकर नहीं आने वाला । इन दिनों उसकी एक बेटी अपनी ससुराल से मायके आई है, जिसके पास आधा किलो पीला और पंसेरी भर चांदी है । बस हरिराम के घर पहुंच कर अपने को उसी लड़की को ढूढ़ निकालना है और उसका जेवर छुड़ा लेना है , हो गया काम फतह।‘‘

ठीक दस बजे वे लोग अपने ठांव से चले और बारह बजते-बजते वीरपुर में दाखिल हो गये । मुखबिर ने बताया था कि गांव में घुसते ही बांये हाथ की पहली गली में हरिराम का मकान है । आगे-आगे हाथ में पचफैरा लिए समरथ चल रहा था ,उसके पीछे था कृपाराम । वे लोग वेधड़क हरिराम के घर में जा घुसे । समरथ के चार साथी बाहर पहरा देते रहे और बाकी उसके साथ भीतर पिड़ गये । पुलिस जैसी पुरानी सी वरदी ,हाथों में हथियार और बाबा-महात्माओं से लहराते जटाजूट देखकर घर की औरते समझ गई कि आज आफत आ गयी सोे वे बुक्का फाड़ के रो उठी । रोने-धोने की आवाजें सुनीं तो समरथ ने सबसे पहले हरिराम को ढूढ़ा-उसके सीने पर बंदूक रखके निर्देश दिया कि यह रोना-धोना बंद कराओ और अपनी सिमरदा वाली बेटी को बुलाओ , उसके जेवर ले जायेंगे ।

हरिराम को काटो तो खून नहीं । देर होती देखी तो श्यामबाबू ने आगे वढ़ कर हरिराम में चार-छह रहपट रसीद कर दिये । हरिराम सिसकी लेकर रो उठा लेकिन अपनी जगह से हिला तक नहीं । कृपाराम ने मौके की नजाकत को समझा और आंगन में जाकर उसने औरतों को सामूहिक रूप से संबोधित करते हुए आवाज में कड़की लाके कहा-‘‘ देखो बाइयो , हमे तुम सबसे कोई मतलब नही है । हरिराम की सिमरदा वाली लड़की के जेवर चहियें हमे , वो आके खुदई चुपचाप अपने जेवर दे जाये , तो ठीक रहेगा ! नहीं तो तुम सबको बेइज्जत होना पड़ेगा ।‘‘

औरतों की आंखे उस नव ब्याहता लड़की तरफ उठ गईं तो वह चीख मारके रो उठी । कृपाराम के इशारे पर श्यामबाबू आगे बढ़ा और उसने उस लड़की के झोेंटरा (चोटी के बाल) पकड़ लिए-‘‘चल ससुरी अपने बाप-मताई को बचाना चाहती है तो सीधे से अपने गहने-गुरिया उतार दे।‘‘

रोती-कलपती लड़की ने अपने तमाम जेवर उन्हे सोंप दिये ,जिन्हे पाकर समरथ बड़ा खुश हुआ और हरिराम और उसके सारे रिश्तेदारों कोे चुप रहने की धमकी देता वापस चल पड़ा था। लौटते में उस रात वे

लोग बीस किलामीटर से ज्यादा चले होंगे तब डेरा जमाये थे उनने । इस पहली लूट ने कृपाराम और उसके भाइयों को बिना रक्तपात के डकैती करने का नया हुनर सिखाया था , उन्हे इस पूरी डकैती के पीछे मौजूद मुख़बिर की भूमिका का भी महत्व पता चला था । फिर तो कई डकैतियां और कई अपहरण किये उन चारों ने समरथ के साथ ।

साल भर के भीतर ही उन चारों के हाथ में हथियार थे और कृपाराम की गांठ मेंें थे, चारों के हिस्सा के रूपये एक लाख । हालांकि पुलिस रिकॉर्ड में उनके नाम की मिसल खुल गईं थी और उनके सिर पर बाकायदा ईनाम भी घोषित हो गया था ।

कृपाराम को तो अब भी अपने जीवन के बदलने की चाह थी, लेकिन उसके तीनों लंपट और उचक्के भाइयों को खूब आनंद आने लगा था इस जिंदगी में ।

अब न उनकी किसी हरकत पर घर मं कोई कहलान आना थी न पिता की मार झेलना थी । अब वे अपनी मरजी के मालिक थे ।

समरथ और कृपाराम हमेषा चिंतित दिखाई देते उन्हे । वे पूछते तो पता लगता कि मुखबिर लगातार खबर भेज रहे हैं कि पुलिस उनकी गैंग के पीछे मुखबिर छोड़ रही है, हिकमतसिंह भी अपने गुण्डे भेज रहा हैे। वे हंसते-वे का हमारो बाल उखाड़ लेंगे ! तुम दादा जबरई डरपत रहतु हो ।

कृपाराम को आज भी याद है वे डरपाती काली गहरी रातें, मुखबिरों के मार्फत आने वाली झूठी-सच्ची खबरें और अपने मताई-बाप को पुलिस द्वारा दी जा रही पुलिस प्रताड़ना के दर्दनाक किस्से ।

चिट्ठी

‘‘ रास्ता चलते तुमको खाना कहां से मिल जाता था ? ‘‘ एस ए एफ का उप कप्तान सिन्हा मुझको बीच में टोकते हुये बोला ।

‘‘ इसके लिये क्या चिंता थी साहब ? रास्ता चलते जो आदमी मिल जाता , उससे हर चीज छीन लेते थे वे लोग । अब कुछ न कुछ तो हरेक के पास मिल ही जाता है न ! कोई खाने पीने का सामान रखे जा रहा है तो कोई कपड़े या जेवर वगैरह, किसी के पास तो बन्दूक और कारतूस भी मिल जाते थे।‘‘ मैंने उन्हे समझाया ।

'' और फिर रात-दिन झकरन में उलझते-बींधते भटकने के कारण हम सबको सबसे ज्यादा चहिये होते थे जूता और कपड़ा । सो अपने शिकार से बागी तो कपड़ा तक उतरवा लेत हते साहब । ़ ़ ़ कई दफा तो हमने ही कपड़ा और जूता छीन के पहने ।''लल्ला पंडित बीच में बोल पड़ा ।

'' फिर तो तुम लोगों के खिलाफ भी मुकदमा बने होंगे ।'' रघुवंशी हमे परेशान करने की दृष्टि से मजा लेते हुये बोला ।

'' मुकदिमा को तो पतो नहीं साहब , हां इतनो पतो है कि महीना भर के भीतर हमारी हालत ऐसी हो गयी थी कि हम भी उनके संगी साथी लगने लगे थे । हम भी उन जैसे रहन लगे थे और उन जैसे ही कपड़ा पहनत हते । वैसे ही बड़े-बड़े बाल और वैसी ही गाली-गुफ्तार की भाषा । हम सबके शरीर से भी वैसी ही बदबू आने लगी थी जैसी कि बागियों के बदन से आती थी । उन दिनों अगर पुलिस इनकाउंटर करती तो गलती से हमको भी बागी समझ के मार डालती ।'' कहते कहते मैं मन ही मन बोल रहा था ' पुलिस कोे बागी समझाने के बहाने की क्या जरूरत ! वो तो जिसे चाहे बागी मान कर मौत के घाट उतार सकती है ।'

'' तुम्हे घिन नाइ आत हती का ,गिरराज इतने दिन तक बिना नहाय धोय के रहे तब !'' नाक सिकोड़ता हैड कानिस्टबिल हेतम सिंह यकायक मुझसे पूछ रहा था जैसे उसे मेरे बदन से अब भी बदबू आ रही हो ।

'' पहले पहल तो खूब घिन आई , रोटी पानी तक न खा सके कई दिन तक । बहुत कहें पै बागी मानें ही नहीं तो हम का करते । पिटत-पिटत टूट गये थे हम मन ही मन , और ॅिफर जब बागियन ने बतायो कै पकड़ को जानबूझ कर नहलाया नहीं जाता तो हम चुप रहि गये । वे लोेग न तो खुद नहाते न पकड़ को नहाने देते थे । नहाने का मतलब है असगुन होवो , सो वे लोग खुद भी अघोरी बने घूमत रहतु हैं ।''

'' उन तीन महीनो में वे अकेले तुम्हे लिये घूमत रहे कि उनने और कोई वारदात भी करी थी ?'' सिन्हा के प्रश्न अनंत थे ।

मैंने सुनाना आरंभ किया ।

हम लोग दोपहर को एक पेड़ के नीचे बैठे थे कि दूर से धोती कुर्ता पहने बड़े से पग्गड़ वाला एक आदमी आता दिखा । बागी सतर्क हो गये । वह आदमी थोड़ा और पास आया तो कृपाराम ने पहचाना -''अरे ये तो मजबूतसिह है , अपना आदमी !''

अपना आदमी ,यानि कि बागियांे का मुखबिर !

कृपाराम उठा और मजबूतसिंह से अलग से बतियाने केे लिए आगे वढ़ गया ।

वे लोग देर तक बातें करते रहे । फिर मजबूतसिंह चुपचाप वापस चला गया । लौट कर कृपाराम ने उदास भाव से बताया कि गिरोह को जल्दी से जल्दी यह एरिया छोड़ देना है ,क्योंकि इधर का एस पी का तबादला हो गया है, और नया कप्तान हमारी तलाश में अपने अॅाफिस के बजाय ज्यादातर समय बीहड़ में ही घूमता रहता है। मजबूतसिंह कह रहा है कि हो सकता है कि एसपी किसी दिन हम सबको इधर बेहड़ में आकर अचानक ही घेर ले ।..........उधर इस थाने के इलाके में तोमर नाम का एक नया दरोगा आया है । उन दोनों ने   अखबार वालों के सामने कृपाराम के गिरोह को उल्टी सीधी गालियां दी हैं । तोमर ने तो सौगंध खाई है कि वह कृपाराम और श्यामबाबू का नामोनिशान मिटा देगा,तब दम लेगा। यह खबर सुनकर अचानक ही सब बागियों के मुंह उतर गये ।

श्यामबाबू बड़ा दिलेर आदमी था , यह खबर सुनकर षायद उसे किसी प्रकार की चिंता नहीं हुयी ,क्योंकि वह तुरंत बोला था- ऐरिया तो छोड़ चलो , लेकिन उसके पहले एक ऐसी वारदात कर चलो कि एस पी अपनी हेकड़ी भूल जाये ।

‘‘ तो फिर चलो आज रात ही एक जगह पकड़ कर लें, अपयें पास मुखबिर की खबर है !‘‘ कृपाराम अचानक बोला।

चारों बागी हम अपहृतों से दूर एक कोने में जाकर योजना बनाने लगे ।

उस दिन रात का खाना खूब जल्दी यानी कि सई- संझा के बखत हो गया था ।

रात का गहरा अंधेरा था । छहों पकड़ के हाथ बंधे थे , अजय राम हमे डोरियाये हुये चल रहा था । हम लोग खेतों में चलते हुयेे उस उजाले की ओर बढ़ेे जा रहे थे ,जो यहीं से काफी दूर दिख रहा था ।

कुछ निकट पहुंचे तो नजारा स्पष्ट दिखा । खेत के बीचों-बीच कुये पर जलते हुये बल्ब का प्रकाश था वह । कुंये के पास की कोठरी में से बिजली की मोटर चलने की आवाज आ रही थी । खेत में दो लोग पानी देते दीख रहे थे । खेत के चारों ओर दस-दस फिट की दूरी पर लकड़ी की थूमी गाड़ कर एक पतले तार का घेरा बना दिया गया था, जिस पर हर चार-पांच फिट की दूरी पर प्लास्टिक की खाली पन्नीयां बांाध कर लटका दी गई थीं, जो तनिक सी हवा के चलते ही ‘फर फर‘ की आवाज के साथ पक्षियों को

अजयराम की निगरानी में हम सबको एक पेड़ के पास खड़ा छोड़ कर श्यामबाबू कृपाराम और कालीचरण बिल्ली की तरह बिना आवाज पांव रखते हुये खेत में पानी देते उन लोगो तक जा पहुंचे । लेकिन सतर्कता की इतनी जरूरत नहीं थी वहां । वे दोनों तो सपने में भी आशा नहंी करते थे कि उन्हे कोई बागी इस तरह पकड़ सकते है । उन लोगों के पास न हथियार था ,न किसी तरह का कोई दूसरा बंदोबस्त ।

जमीन में पटककर दस मिनट तक पहले तो उन्हे खूब मारा-पीटा फिर कृपाराम ने उन लोगों से पूछताछ शुरू की ‘‘ अपयीं जात और नाम बताओ सारे !‘‘

उनमें से एक युवक रोते हुए बोला-‘‘ मै किसन और ये विसन रावत है । हम रावत विरादरी के है। ‘‘

यह सुन कर कृपाराम बोला था ‘‘ यह तो हमको भी पता है कि तुम दोऊ रावत हो। सारे रावत डाकू के भाई बंद हो न ! तुमने हमारी जाति वारों को बहुत रूलाया है ,वाही को नतीजा है कै तुम आज हमारे कब्जे में बंधे खड़े हो तुम ।‘‘

वे दोनांेे गिड़गिड़ाये कि हमारा रावत डाकू से कोई संबंध नहीं है । पर कृपाराम ऐसे बखत ज्यादा जल्लाद हो जाता था । उसने मां की गाली देते हुयेे उन्हे डांटा और अपने साथियों से बोला ‘‘ बांधि लेउ इन सारेन्ह को ।‘‘

किसन और विसन के बताने पर मोटर वाली कोठरी से एक आदमी पकड़ में आया तो पता लगा कि वह बूढ़ा व्यक्ति इन दोनों का पिता है ।

कृपाराम सदैव ही क्षणभर में अपनी नयी रणनीति तय कर लेता था उसने तत्काल ही मुझसे कहा- दो चिट्ठी लिखो , एक तोमर दरोगा के नाम और एक एसपी के नाम ।

मैंने डायरी में से एक पेज फाड़ा और चिट्ठी लिखने बैठ गया। कृपाराम ने बोलना शुरू किया -

एसपी मुन्नालाल को बागी सम्राट कृपाराम की जैराम जी की ।

तुम्हे इतना समझाया , पर तुम माने नहीं । तुम्हे अपने छोटेबबच्चों

और प्यारी सी लुगाई से कोई मोह ममता नहीं दिखती । इसका

फल तुम जल्दी ही भोगोगे ।

सुन ले रे हरामी तु अगर अपने बाप की असल औलाद है तो हम

चैलेज दे रहे हैं कि इस किसन और विसन को हमारी पकड़ से

छुड़ा ले । मादर ़ ़ ,बहन के लं़ ़ ़ ़ ़,तेरी मताई ़ ़ ़ ़डालेंगे हम ।

अब भी भाग सकता है तो इस इलाकेसे तबादला कराके भाग जा

नामर्द । हम आठ दिन के भीतर तेरे इलाके से दस आदमी और

पकड़ेंगे , मर्द होये तो रोक लिये ।

कृपाराम ने एस पी के बाद दरोगा के नाम भी अश्लील गालियों से भरी ऐसी ही एक और चिट्ठी लिखाईं । मुझे लिखते वक्त मन ही मन डर लगता रहा, कि खामखां मेरी हैंड राइटिंग होने से कल को मैं न फंस जाऊ ! पर इस वक्त न मना करने की स्थिति थी , न मना करने की मेरी हिम्मत थी ।

एस पी को देने के लिए वे दोनों चिट्ठी किसन-विसन रावत के पिताको सोंप दी गयी ।

बूढ़े ने चिट्ठी संभाल ली तो कृपाराम बोला ‘‘ अगर तैं अपने इन बेटन को जियत वापस चाहतु है, तो पांच लाख रूपया लै के अमाउस की रात को माता वारी पहाड़ी पै आ जइये हां पुलस को मत बतइये नही तो लाशइ मिलेगी इनकी ।‘‘

‘‘ सिरकार हम गरीब आदमी हैंं ,इतनो पैसा कहां ते आयेगो । ले दे के पांच बीघा जमीन है । इतनी गुंजाइसउ नहीं है कि बटियारे लगा सकें , नही तो आज का फसल में हम पानी देवे हम आते का, वे ही बटियारे आते , और जो दिन सामने आतो का सिरकार !‘‘ कहते हुये बूढ़ा कृपाराम के पांव पकड़ने लगा ,तो कृपाराम ने अपनी पंचफैरा बन्दूक उस पर तान दी थी और उसे डांटा-‘‘ अब तैं चुप्प रह डोकरे, जो कहो है सो मानलै, नहीं तो तेये बेटन की लाश चील कउआ खावेंगे ।‘‘

बूढ़ा हिलकी ले कर रो उठा, बोला-‘‘ मुखिया, तिहाये पांव पकड़ रहो । मेरे बच्चन को कछु मत बिगारियों ,मैं अपनी बोटी-बोटी बेच के तुम्हाओ हुकम पूरो करिंगो । इन्हे हाथ मति लगाइयो !‘‘

वह पूरी रात चलते ही बीती । सुबह होते-होते हम लोग वहां से बीस किलोमीटर से भी ज्यादा दूर पहुंच गये थे ।

हमेशा की तरह एक पहाड़ी के ऊपर ही ठहरना पंसद किया बागियों ने।

अजय राम को ऐसी थकान में प्रायः बुखार हो जाता था । उसने लेटे लेटे ही मुझे आवाज दे कर कोई गोली-वोली देनेका हुकुम दिया ,तो थका होने पर भी मैं चट से उठ कर बैठ गया ।

मैंने उसे पानी से दर्द की एक गोली खिलायी और खुद ही उसके हाथ -पांव दबाने लगा ।

सुबह अजयराम की हालत और ज्यादा खराब थी , दर्द तो बंद हुआ ही नहीं, शरीर में भारी ताप सा और दिखने लगा , उसने मुझे बताया कि ठंड के साथ जुर चढ़ आया है ,वह मुझसे बोला-‘‘लाला, बुखार की दवा दे रे सारे ।‘‘

मुझे बात बेबात गाली देने वाले इस डाकू से सख्त नफरत हो चली थी ,एकाएक मेरे मनमें एक शरारती विचार आया कि क्यों न इसे बुखार की जगह दस्त लगने की दवा दे दूं ! जब पोंक छूटेगी तो साला हंग-हंग के मर जायेगा ।

और मैंने अजयराम को कब्ज दूर करके दस्त खुल जाने की गोली दे दी । वही हुआ जो मैं चाहता था । अजय राम का बुखार जाना तो दूर रहा , दिन भर वह बार-बार पाखाने को दौड़ता रहा सो भीतर ही भीतर उसका शरीर कमजोर होता चला गया । गिरोह को बिना इच्छा के मजबूरन वहां दिन भर रूकना पड़ा ।

दूसरे दिन अजय राम सुबह सुबह बोला-‘‘काहे रे मोटा लाला, तैं सारे कौनसी दवा रे रहो है? दसत और चालू है गये मेरे लाने । सुन ले कि आज संझा तक ठीक न हुआ तो तेरी खैर नहीं !‘‘

कुछ देर बाद सचमुच ही अजयराम ने काली चरण से एक मोटी सी लकड़ी काटने को कहा तो मैं कंप गया । मुझे लगा कि अब मेरी जान की खैर नहीं !

उसकी खुशामद करते हुये मैं बोला-‘‘ हारी बीमारी होइ तो दाउ गोली दवाई से ठीक है सकतु है , और कोई देई-देवता को कोप होय तो कौन कहा कर सकतु है ! आपही सोचो हम जंगल-खेरे नाघत यहां से वहां आत-जातु रहतु है ,कहा पता कहां से कौन भूत पिशाच संग लग बैठो होय ! ‘‘

कृपाराम को भूत विद्या में बड़ा विश्वास था । यह सुना तो वह घबरा गया और मेरे बजाय अजयराम से बोला-‘‘ तू भी सारे , कोउ देइ-देवता को नहीं मानतु है , लाला सही कै रहो है।‘‘

फिर वह लल्ला पंडित से बोला-‘‘ तू कछू जानत है का रे पंडत ?‘‘

लल्ला ने विवश होकर मुझे देखा । संकेत मिला तो वह बोला

-‘‘ ज्यादा तो जान्तु नाने, पे कोशिश तो कर सकतु हैं मुखिया । अकेले , बाके लाने नहायवो-धोइबो परेगो । ‘‘

‘‘जा नहाय ले ।‘‘ कृपारामने सहर्ष अनुमति दी तो लल्लापंडित मन ही मन प्रसन्न होता हुआ , पहाड़ी से नीचे उतरता चला गया । जहां चमकीली धार वाली एक छोटी सी नदी ऊपर से ही दिख रही थी ।

लल्ला पंडत ने झूठी सच्ची पूजा की और हनुमान चालीसा से लेकर जितने पाठ जानता था , सब सुना डाले , फिर अंत में अजय राम को मुठठी भर राख खवा दी ।

मैंने बुखार की गोली निकाली और अजयराम को खाने को दे दी ।

मन ही मन मुझे विचार आया कि जब से बाजार से अंग्रेजी दवाई आयी है ,कृपाराम ने जड़ी-बूटी से किसी का इलाज नही किया, लगता है वह सब कुछ भूल गया । शायद विकल्प मिल जाने पर हरेक साधन की ऐसी ही उपेक्षा होेती होगी ।

उस दिन सचमुच ही शाम तक अजयराम का बुखार ठीक हो गया तो मुझे बड़ी राहत मिली ।

उसी दिन की बात है ,हम लोग वहां से दस किलोमीटर दूर एक पहाड़ी गुफा में आश्रय लेकर पड़ें थे कि मजबूतसिंह आता दिखा ।

मजबूतसिंह जब भी आता दीखता हम सबको अपनी रिहाई नजदीक आती लगती । हालांकि ऐसा कभी नहीं हुआ । लेकिन यही एक मात्र ऐसा मुखबिर था जिसे हम नाम और शकल से जानते थे , अन्यथा तो तीन महीने में कृपाराम के किसी खबरिये को और किसी इमदाद करने वाले आदमी को हमने करीब से नहीं देखा। लेकिन बिस्मय यह था कि उसके पास सारी सूचनाये रहती थीं पुलिस की । एक दो बार खबरियों को रूपये भेजते तो देखा हमने कृपाराम को, पर मजबूत सिंह के अलावा हमारे सामने कोई आया कभी नहीं । बस उस दिन दूर से वो बूढ़ा मुखबिर जरूर पिटते देखा था हमने जिसने किसन-विसन रावत की हैसियत पांच लाख की बताई थी,और इस मजबूतसिंह ने असलियत बतादी थी कि ये लोग तो पचास हजार रूपये से ज्यादा के देनदार नही हैं ।

.....हमे तो वे गांव वाले भी कभी नहीं दिखे थे जो कभी-कभार गिरोह को खाना बनबा कर पहुंचा जाते थे । जानने को तो........ हम न दरजियों को भी नही जानते ध्ोि जो हर महीने बागियों के लिये पुलिस जेसी वरदी सिल कर पहना जाता था और जिसके जिलये वह मुंहमांगा ईनाम पाता था ।.......हम उन लोगों को भी नहीं जान पाये थे जो बोरा भर-भर के कारतूस दे जाते थे ऐन बीहड़ में आकर ।......बहुत कोषिष करके भी हम तो उस नेता को भी नहीं जान पाये थे जिसने अपने आदमी के हाथ एक मोबाइल भेजा था जिस पर वह प्रायः कृपाराम से बाते भी किया करता था , और कृपाराम उससे मिलने ष्कस्बे तक जाया करता था ।

मुठभेड़

मजबूतसिंह उस दिन अपने कंधे झुकाये जमीन पर आंख गढ़ाये हुए आता दिखा तो हम सबको उत्सुकता हुई ।

कृपाराम लपक के मजबूतसिंह से मिलने आगे वढ़ गया।

ये क्या , मजबूतसिंह की बात सुनते ही कृपाराम ने उसे एक जोरदार धक्का दिया और मजबूतसिंह जमीन पर गिर कर धूल चाटता नजर आया । यह देख दूर खड़े बाकी डाकुओं ने अपनी बंदूकें संभाली तो कृपाराम ने वहीं से इशारे से उन सबको शांत रहने का आदेष दिया ।

फिर उसने जमीन पर गिरे मजबूतसिंह को सहारा देकर खुद ही उठाया और गुफा तक ले आया ।

कृपाराम का मुंह उतरा हुआ था और वह एकदम चुप था ।

श्यामबाबू ने मिसमिसा के पूछा-'' काहे रे मजबूता ,सारे का भयो ?''

मजबूत ने शांत और उदास रहकर एक बार कृपाराम को देखा फिर अपनी जाकेट के भीतर खोंसा हुआ एक मुड़ा-तुड़ा सा अखबार निकाल कर श्यामबाबू को दे दिया, और नीची नजर करके खड़ा हो गया ।

मैं मन ही मन हंसा ! बिना पढ़ा-लिखा श्याम बाबू अखबार का क्या करेगा ? वही हुआ उसने अखबार ले तो लिया और उसे इस तरह से अलटा-पलटा भी मानो पढ़ रहा हो ,पर अगले ही पल जैसा का तैसा मेरी तरफ वढ़ा दिया ।

मैंने तत्परता से अखबार खोला और मुखपृष्ठ की खबर पढ़ने लगा । खबर पढ़ते-पढ़ते मेरे माथे पर बल पड़ने लगे थे ।

मुझे चुप देखकर श्यामबाबू बोला था-''तू चुप कैसे हो गयो रे लाला ?''

'' दाऊ ़ ़ ़ ़ दाऊ ़ ़़ अखबार में गलत बात छप गयी है । '' कहते हुए मैं पूरी बात कहने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था ,या यूं कहूं कि उपयुक्त वाक्य नहीं मिल रहे थे मुझे।

''बोल सारे नाहीं तो जबाड़ों तोड़ देॆंगो ।''श्यामबाबू की उतसुकता चरम पर थी ।

लेकिन में चुपचाप खड़ा रहा । झुझंला कर अजयराम ने मेरे हाथ से अखबार छीना और लल्ला पंडित को दे दिया । लल्ला ने खबर पढ़ी तो वह भी सन्न रह गया और अखबार चुपचाप मेॆरी तरफ बढ़ा दिया ।

मैंने एक बार फिर अखबार पढ़ा जी कड़ा किया और कृपाराम को ताका।

'' अखबार में खबर छपी है कि पुलिस ने कल रात श्यामबाबू डकैत को इनकांउटर में मार डालो ।'' आंख मूद कर मैंने जो सच था ,वो बोल दिया ।

आँख खोल कर देखा तो पाया कि श्यामबाबू ही नहीं, सारे बागी माथे पर बल दिये मेरी तरफ ताक रहे थे। मैंने हिम्मत करके आंख खोली और अखबार खबर बांचने लगा -

दुर्दान्त डाकू श्यामबाबू मारा गया

शेरसिंह का पुरा,चम्बल़ (मंगलवार) 10 जनवरी

कल रात पुलिस बल को उस समय बड़ी सफलता मिली जबकि आंतंक का पयर्ा्रय बने कृपाराम घोसी गिरोह के आधार स्तंभ डाकू श्यामबाबू को इंसपेक्टर तोमर ने आमने-सामने की लड़ाईृ में एक एनकांउटर के दौरान मार गिराया। उल्लेखनीय है कि तोमर ने इस क्षेत्र का चार्ज्र लेते समय कसम खाईृ थी कि वे कृपाराम गिरोह का नामोनिशान मिटाकर दम लेंगे । उनने बड़े जोरदार तरीके से अपनी कसम पूरी करने की शुरूआत श्यामबाबू जैसे दुर्दान्त दस्यु को धराशायी करके कर दी है । देखना यह है कि वे अपनी कसम पूरी करने के लिये कितना खतरा उठा पाते हैं औंर कितने समय में बाकी रहे डाकुओं को समाप्त कर पाते हैं ।पता लगा है कि अपने मुखबिर से ज्यों ही पता लगा कि ष्बगल के इलाके में डाकू आने वाले है निडर तोमर ने अपने बड़े अधिकारियों को खबर से अवगत कराया और उनके निर्दषानुसार मुठभेड़ की तैयारी कर ली । वीहड़ में गिरोह को देखते ही तोमर ने उसे आत्मसमर्पण हेतु ललकारा लेकिन डाकुओं ने फायर खोल दिया । आत्मरक्षा मे ंपुलिस ने भी गोलियां चलाई और गिरोह के आधार स्तंभ को मार लेने में सफलता प्राप्त की ।

पुलिस के आला अधिकारियों , गृह मंत्री और मुख्यमंत्री ने पुलिस इंसपेक्टर तोमर को इस वीरता पूर्ण कार्य के लिये बधाई प्रेषित की है । पुलिस महानिर्देशक ने इस सफलता के लिये पुरस्कार के तौर पर इंसपेक्टर तोमर को समय से पहले प्रमोशन देने की घोषणा की है । स्मरणीय है कि पुलिस इंसपेक्टर को प्रमोशन के यह तमगे स्वयं मुख्यमंत्री अपने हाथों से अगले महीने उनके थाने में पहुंचकर पहनायेंगे ।

खबर पढ़ के मैं चुप हुआ तो चारों ओर सन्नाटा छा गया ।

श्यामबाबू से लेकर हरेक डकैत के चेहरे पर भय की छाया तैर गयी । मेरे सीने पर चढ़ आया अजयराम गुर्राया- ‘‘मादरचो़......तैने सही सही बांचों है, के अपने मन से कछू को कछू पढ़ के सुना रहो है ?

‘‘ मुखिया , मेरी का मौत आयी है कै मैं झूठ सच्च बोलूगों । जो लिखो है वही पढ़ के सुना दयो है मैंने । आप चाहो तो लल्ला पंडित से पूछ लो ।‘‘

‘‘ देखो तो जो अखबार सच्चौ है कै नही ़़़? माने जो वो ही अखबार है जो लश्कर में छप के बंटतु है ! ऐसो न होवे के पुलस ने झूठो सच्चो अखिबार छाप कै हमे डरपायवे के लाने इतें भेज दियो होवे ।‘‘ कृपाराम दुखी स्वर में मुझसे पूछ रहा था ।

‘‘ अरे मुखिया पूरे गांम में जो अखबार बंट रहे है ।‘‘ मजबूत ने अपने लाये अखबार की असलियत का समर्थन किया तो श्यामबाबू ने उसे घुड़क दिया -‘‘ तैं चुप्प बैठ सारे , तेयो का विसवास ! पुलस ने ज्यादा माल मत्ता दे दयो होय , कै गरदन में घुटनों धर दयो होय सो तैं भी वही बात बोलन लागों होय जो पुलस कहवो चाह रही है । ं‘‘

मजबूतसिंह चुप हो गया था ।

अब प्रश्नाकुल निगाहों का केन्द्र मैं था ।

ृहिम्मत करके मैं बोला-‘‘ मुखिया अखबार तो सच्चो है । हां, पुलिस को विश्वास नहीं ,कै अपनी तरक्की के लाने का का खेल कर डारे !‘‘

'' कैसे कैसे खेल ?'' शंकित नजरो ंसे श्यामबाबू ने मुझे घूरा ।

'' कोउ न मरो होय और झूठ-मूठ की कहानी बना दई होवे । हारी-बीमारी से मरे काउ आदमी को श्यामबाबू के नाम से जहार कर देवो कहा कठिन है ? कोई भी गैरकानूनी बदूक लाश के बगल में धरि दो और बनि गयी कथा !और फिर श्याम बाबू तो शहर में जाके खुद कहेंगे ना कै हम तो जे फिर रहे ।''

मेरी बात से सारे बागी सहमत दिखे ।

बाद के दिन बड़ी कशमकश के दिन थे, सारे डाकू चुप चुप रहते, तो अपहृत भी चुप्पी साधे रहते । न किसी का खाने में मन लगता, न पीने में । पकड़ के आदमी से जरा सी गलती हो जाती तो बड़ी बेदर्दी से पीटते थे बागी उन दिनों ।

अमावस्या की रात कृपाराम अैार श्यामबाबू ,दोनों रावत भाइयों को लेकर माता वारी पहाड़ी पर गये । लेकिन घंटे भर बाद ही वे लोग हांपते-हांपते उल्टे पांव लौट आये ,दोनांे पकड़ वाले लोग उनके साथ थे ।

अजय राम ने पूछा तो पता लगा कि माता वाली पहाड़ी के नीचे लाल बत्ती वाली दो तीन कारें और सैकड़ों पुलिस जवान इकट्ठा थे । यह सुना तो क्रोध से फट पड़े अजयराम ने अचानक ही बंदूक का बट उठा के उन दोनों भाइयों के मारना आरंभ कर दी-'' सारे तुम्हाओ बाप, हमे पकरवाउन चाहत है । अब तुम जिन्दे न रहोगे सारे !

मार खाते किसन और विसन रावत कान पकड़ते और इशारे से मना करते हुए चुपचाप आंसू बहाते रहे ।

श्यामबाबू ने अजय राम को रोका-'' मुखबिर ने तो पूरे विश्वास से बतायो है कि इनका बाप पुलस के पास तो बिलकुल नहीं गया ,इसलिये पता लग जाने दोे कि सही बात क्या है ? इन हरामियों को फिर देखेंगे ।''

''खैर , आठ दिन बाद फिरौती दे कर किसी तरह दोनों रावत छूटे ।'' कह कर मैंने बात समाप्त की ।

फिर यकायक याद आया तो मैं बोला-'' लेकिन उन दोनांेंं की रिहाई से ही तो अखबार वालो को यह पता लगा था कि जिसे मारने की खबर फैला कर तोमर वाहवाही लूट रहा है, वो डाकू श्यामबाबू मरा नहीं वो तो अब तक जिंदा है और जो आदमी श्यामबाबू के नाम से मारा गया बो तो बेचारा कोई निरपराध राहगीर था । फिर क्या था , धमाल मच गया । पुलिस इस प्रयास में लग गयी कि मारे गये आदमी को कोई दूसरा बता कर श्यामबाबू को जिन्दा बताने वाले किसन और विसन का मुंह बंद रखा जावे और अगर इसमें सफल न हों तो मरने वाले का नाम ऐसा कोई बताया जाये छोटा-मोटा अपराधी हो । उसे भी मुज़रिम बता के किसी तरह इस ऐनकाउंटर को सही सिद्ध करना लक्ष्य रहा उन दिनों पुलिस का ।''

बड़े दरोगा रघुवंशी को यकायक जाने क्या बुरा लगा कि वह अकड़ के बोला-'' तुम श्यामबाबू को मार देने पर बड़े नाराज दिख रहे हो ! इसमें गलत क्या था ? तुम तो तीन महीने उनके साथ रहे हो, तुम तो जानते हो , वे लोग कितने हत्यारे हैं । ऐसे लोगांेे को तो जिंदा रखना बेकार है ! ज्यों ही दिखें सालों को गोली मार के फेंक देना चाहिये । नहींे तो पता नहीं किस अदालत से छूट जायें और फिर से जनता को परेशान करने लगें ।''

“ लेकिन दरोगा जी ,असली आदमी मरना चाहिये न, वो आदमी असली श्यामबाबू नहीं था न ! दरोगा तोमर की यह गलती तो.......़ ़! ़“मैंने जानबूझ कर अपनी बात अधूरी छोड़ दी थी ।

“ उसने गलती करी इसी कारण तो उसकी तरक्की छिन गयी न ! बेचारा वो क्या जाने कि जंगल में बंदूक लेकर घूमनेे वाला बागी श्यामबाबू है या किसनबाबू !“ रघुवंशी के स्वर में कड़वाहट भरी थी ।

मुझे लगा कि अब दरोगा का मूड खराब हो चुका है, इससे इस वक्त ज्यादा बात करना ठीक न होगा, सो मैं चुप हो गया ।

लेकिन मेरा मन अब भी अशांत था ।

अगले दिन मैनेे किस्सा सुनाना शुरू किया कि एक बार मैने अजयराम के साथ जाकर कृपाराम का पुश्तैनी गांव देखना चाहा था ।

हुआ ये था कि एक दिन कृपाराम ने मुझसे सिलक गिनवाई तो पता चला था कि उनके पास तीन लाख से ज्यादा रूपये नगदी रखे हैं । अपनी सुरक्षा के साथ-साथ इतने सारे रूपये भी लादे रखने और रखाते फिरने के झंझट से बचने के लिए उसने अजयराम से कहा कि वह गांव जाकर सिलक लाला को संभलवा आये । तो मैंने इच्छा प्रकट की थी कि मैं भी अजयराम के साथ जाना चाहता है।

यह सुनकर कृपाराम विंहसा “ सारे मौका ढूढ़ रहो हैं कै अकेले में बीहड़ में समय देख के अजै के ऊपर चढ़ बैठे ।“

मैंने चिरौरी की-“ मुखिया, आप तो जानतु हो, कै अजै दाऊ के हम खास सेवक हैं वे हमते ही सेवा करावतु हैं । इनके हाथ-पांव हमही दबाबतु हैं, सो हमने कही के इत्ते बड़े बागी के संग एक सेवक भी जानो चहिये न !“

“ अब अजै लौटि आवे, तुम मनचाही सेवा कर लियो “ कह कर मुझको चुप रहने का इशारा कर कृपाराम ने अजयराम को सम्बोधित किया -“ अजै संभल के जइयो ! आजकल पुलस बड़ी छटपटाइ रही होगी, सो घरे मत जइयो । लाला को सिलिक संभरवाइ अइयो और तनिक जल्दी लौटियो । मैंऊ घर न गयो बहुत दिनोते । मैं भी घर जावो चाहि रहो हों ।“

कालीचरण और अजयराम ने कंधे पर बंदूकें टांगी और कृपाराम से गले मिले ,फिर ‘जय कारसदेव‘ कहके तेज गति से चल पड़े । मैंने देखा कि कृपाराम की आँखें भर आईं उस क्षण । बीहड़ में मड़राती मौत से लुका छिपी के खेल में एक-दूसरे की कुशलता को लेकर बागी किस तरह चिंतित होते हैं, और अपने विछुड़ने के वक्त वे किस तरह विह्वल होते है , यह एक नया अनुभव था मेरे लिए । दूसरों को बिना देर करेे, मौत के घाट उतार देने को सदा तत्पर रहने वाले इन लोगों को मौत से बड़ा डर लगता है, यह तो उसी दिन पता चल गया था मुझे, जिस दिन मजबूतसिंह ने आकर बताया था कि नये एसपी और दरोगा ने उनके गिरोह को मिटा देने की कसम खाई है । चारो बागी विकट रूप से डर गये थे उस दिन भीतर ही भीतर, जो कि उनकी आँखों से प्रकट होता था ।

उसी दिन कृपाराम ने भावुक होते हुए अपने अधूरे छूटे किस्से को आगे बढ़ाया था ।

जब वे लोग फ़रार होके जंगल-दर-जंगल भागते फिर रहे थे, एक दिन अचानक ही डाकू समरथसिंह के गिरोह ने उन्हे घेर लिया था । वे चारों निहत्थे थे।

समरथ ने डरते-कांपते उन चारों भाइयों को अभयदान देकर अपने गिरोह में शामिल होने का निमंत्रण दिया था , तो वे खुशी-खुशी गिरोह में शामिल हो गये थे । समरथ उन्हे अपने साथ लेकर अपने ठिकाने पर लौट गया था । ठिकाना क्या था नदी किनारे का पतारा नाम का वह जंगल और उसमें बना वनरक्षक का खाली क्वार्टर , जो तीन-चार गांवों से सिर्फ दो-दो किलोमीटर दूर था ।

समरथ के साथ रहके उनने सीखा था कि यहां जीने के लिये जरूरी है रोजाना बीस-पच्चीस किलोमीटर पैदल चलने की आदत बनाये रखना और ऊंट की तरह एक साथ कई वक्त का खाना भकोस लेना ।

समरथ में एक ऐब था कि वो लंगोट का बड़ा कच्चा था । गिरोह में खुले आम लुगाइयें आती रहती थीं, और समरथ बिना लिहाज सबके सामने उन्हे अपने साथ लेकर बस तनिक सी ओट पकड़ के चला जाता था । वह खुद भी अपने एक-दो आदमी लेकर इसी काम के वास्ते आदिवासियों के टपरांेे पर जाता रहता था ,और धोंस-दपट देकर उनकी चाहे जिस लुगाई को बेधड़क पकड़ लेता था । इसी आदत की वजह से भीतर-ही-भीतर आदिवासियों के मन में उसके प्रति नफरत पैदा होने लगी थी । बाद में इसी नफरत की आग मेंेे समरथ को अपनी जान होम करना पड़ी थी । लेकिन यह तो बाद की बात है ।

उसके पहले यह हादसा हुआ कि औरत के लिए व्याकुल समरथ को जाने क्या सूझी कि जिस दिन वह कृपाराम वगैरह के साथ उनके गांव गया हुआ था , वहां कृपाराम की बीबी का ही हाथ पकड़ बैठा । अजयराम ने देखा तो वह अकड़ गया , फिर तो समरथ उसे पोटने-पुचकारने लगा । लेकिन अजयराम भढ़क गया ,? उसने वहां से उठके सीधे कृपाराम से समरथ की शिकायत कर डाली । कृपाराम किंकर्तव्यविमूढ़ था । श्यामबाबू और कालीचरण ने सुना तो पहले अपनी भाभी से इसका सत्यापन किया और जब यह वाकया सच साबित हुआ तो उन दोनों की भुजाऐं फड़क उठीं ।

समरथ सकपकाया । उसने झिझकते हुए कृपाराम और उसकी घरवाली से पांव छू केे माफी मांगी । मौका भांपकर कृपाराम ने उसे माफ कर दिया, लेकिन गिरोह में एक ऐसी गांठ पड़ गई कि जिसका परिणाम जल्दी ही गिरोह के दो फांक हो जाने के रूप में सामने आया । हालांकि गिरोह का यह बंटवारा बिना तकरार के शांति से हुआ ,और इस बंटवारे के पीछे एक बहुत बड़ा कारण कृपाराम की समझ में यह बात आ जाना था कि अब समरथ उसे और उसके भाइयों को हथियार के रूप में प्रयोग करने लूगा है । कृपाराम के कंधे पर रख कर समरथ ने बंदूक चलाना ष्षुरू कर दिया था जिसे कृपाराम ने जल्दी ही भांप लिया । कहीं भी कोई वारदात करते वक्त समरथ हर जगह कृपाराम का नाम लेकर डांट-फटकार करने लगता । जहां सिर्फ चार आदमियों की जरूरत होती , समरथ कृपाराम को अपने भाइयों के साथ झोक देता । कृपाराम को समरथ के मन में छिपी वे सबर्ण भावनाएं नजर आने लगीं थी, जिनके तहत हमेषा से ये लोग पिछड़े वर्ग को लट्ठ मारने वाले के रूप में प्रयोग करते रहे हैं । कृपाराम को यकायक लगा था कि अगर उसी के दम पर समरथ का गिरोह चल रहा है तो कृपाराम अपना अलग गिरोह क्यों नही चला सकता ! कृपाराम खुषी-खुषी अलग हो गया ।

कृपाराम के गिरोह को हिस्से में चार बन्दूकें और एक लाख रूपया नगद मिला था और दोनों गिरोह के लोग एक-दूसरे से गले लग के विदा हो गये थे ।

दोनों गिरोहों ने अपना-अपना इलाका चुन लिया था । ऐसे विपरीत समय में बीहड़ में भटकते कृपाराम को अपना एक विरादरी भाई मिल गया था-गिरवर गड़रिया । एक लम्बे समय से छुटपुट वारदातें करने के बाद भी पुलिस से दूर बने रहे गिरवर ने छह महीने में उन्हे दर्जनों लोगों से मिलवा कर चम्बल के गांवों में भीतर ही भीतर सुलग रहे दलित जाग्रति के ऐसे दावानल से परिचत कराया था ,जिसने कृपाराम और उसके भाइयों को नया जीवन मंत्र दिया था, कि बीहड़ में छिप के सुरक्षित रहना है तो अपनी विरादरी और उसकी बराबरी के लोगों को संगठित करो और उनसे मिल के रहो । वे लोग अब तक मन में दबाये रखे अपने उत्पीड़न और दमन का बदला खुल के लेने लगे थे , रस्ता चलते कोई सुबरन कहलाने वाले वर्ग का आदमी उन्हे दिख जाता तो वे उसकी खूब कुटम्मस करते , फिर नंगा-उघारा करके भगा देते । नंग-धड़ंग आदमी को भागते देख कर उन्हे बड़ा मजा आता था ।

बाद में एक दिन पता लगा था कि आदिवासियों के टपरे पर पुलिस ने छापा मारा और समरथ को दो साथियों के साथ एनकाउण्टर में मार गिराया था । पता नहीं चला कि आखिरकार पुलिस को आदिवासियों के यहां समरथ के उस दिन आने की पक्की खबर कैसे मिली , अलबत्ता लुगाई के चक्कर में गिरोह ने अपने मुखिया और दो आदमियों को खो दिया था ।

जिस दिन कृपाराम वगैरह को यह खबर मिली उन सबने उपास रखा और समरथ को खूब याद किया । समरथ सचमुच समरथ था-समर्थ भी और सक्षक भी । दिन भर वे लोग समरथ के साथ बिताये खूब अच्छेे दिन, लमहे और वारदातें याद करते रहे ।

समरथ के जाने के बाद से उनने अपनी विरादरी कीे संगाती जातियों यानीकि गड़रिया, मारवाड़ी-चारवाहे आदि के मुअज्जिज आदिमियों के साथ और ज्यादा घने प्रेम संबंध बनाने शुरू कर दिये थे ।

श्यामबाबू उनके गिरोह का कोतवाल था । उसने सबके चेतावनी दी थी कि अगर जिंदा रहना है तो उन सबको कुछ नियम मानना होंगे । समरथ के विनाश की वजह लुगाई थी , इसलिये वे सब औरतो से दूर रहेंगे, न उन्हे गलत नजर से देखेंगे न उन्हे लूटंेेगे, खास तौर पर आदिवासियों और दूसरे मुख़बिरों के घर की औरतों के बारे में यह बात ध्यान रखेंगे । दूसरा नियम यह बनाया उन सबने कि इस इलाके में रहना है तो आदिवासियों को ही वे अपना मुखबिर बनाऐंगे, क्योंकि इस इलाके के जंगलों और बीहड़ों में इन आदिवासियो के तमाम कबीले फैले पड़े हैं, इसलिए मुखबिरी के मामले में उनसे अच्छा कोई दूसरा हो ही नही सकता । मुखबिरी के बदले में आदिवासी जो मांगे वो उन्हे देंगे, पर उन्हे असंतुष्ट नही रखेंगे ।

समरथ के गिरोह का नया मुखिया बना था सिंगराम रावत ! बंटवारे के समय की जाने कौन सी बात उसे अखरी थी कि उसने कृपाराम गिरोह को अपना दुश्मन मानना शुरू कर दिया । कृपाराम को यह अच्छा नहीं लगता था, अगर बागी आपस में लड़ेंेगे तो फायदा तो पुलिस का ही होगा । इस वजह से उसने खुद सुलहनामे की खबर भेजी । लेकिन सिंगराम व्यवहार का बड़ा खराब था-वह उस संदेश वाहक को ही मार बैठा ,जिसके मार्फत सुलह-सफाई का संदेशा भेजा गया ।

सिंगराम ने कृपाराम को ही नहीं , पूरी घोसी-गड़रिया विरादरी को अपना दुश्मन मानना शुरू कर दिया था । वह डाके डालता तो केवल घोसी-गड़रियों के यहां, पकड़ करता तो केवल घोसी-गड़रियों की । जो आदमी कृपारम का नाते-रिश्तेदार होता उसे तो वह बहुत सताता, घोसी-गड़रिया होना ही सबसे बड़ा गुनाह हो गया था सिंगराम की नजर में ।

इसकी प्रतिक्रिया कृपाराम ने भी लगभग उसी तरह की । वह यूं तो खास तौर पर सवर्णों का दुश्मन था , लेकिन अब रावत विरादरी उसकी पहली दुश्मन बन गई थी ।

एक आदमी की गलती की वजह से घाटी में जातीय-लड़ाइयों की नई शुरूआत हो गई थी ।

कृपाराम बातूनी और गुस्सैल तो था, पर स्वभाव से कपटी नहीं था, इस वजह से वह वे बातें भी बताता चला गया था, जो बागी लोग हमेशा गुप्त रखते हैं ।

गिरोह किस प्रकार महीने के महीने इलाके के थानेदार को चंदी भेजता था । किस प्रकार वह इलाके के विधायक से बात बना कर रखता था और किस प्रकार वह चुनावों के समय अपनी विरादरी की पारटी का प्रचार करता था , इसका सूक्ष्म विवरण वह उस दिन हमको बड़ी देर तक सुनाता रहा था ।

हत्या

अगले दिन

दिन भर की थकान मिटाने पुलिस पार्टी के लोग एक पहाड़ी के शिखर पर टांगे फैलाए लेटे थे कि दूर पेड़ों की ओट में कुछ साये से चलते-फिरते दिखें तो पायलट सैनिक सतर्क हो गये । पुलिस दल ने पोजीशन ले ली और फायर खोलने वाले थे कि सेकंड-लेफ्टीनेंट सिन्हा ने रघुवंशी को याद दिलाया-'' अपना वायरलेस सेट चालू करके तो देखलो साहब, कहींं ये लोग अपनी ही किसी टीम के सदस्य न हों , और गलतफहमी में हम अपने किसी भाई पर ही न गोली चल बैठे ।''

और यही सच निकला ।

वे लोग एडी टीम नम्बर पंद्रह के सदस्य थे । एक हादसा होते-होते रह गया । इस सतर्कता के लिए सबने सिन्हा साहब को धन्यवाद दिया ।

रात को सब लोगों ने सिन्हा साहब को घेर लिया-'' आपको यह सतर्कता कहां से मिली साहब ? ''

सिन्हा देर तक फौज से रिटायर्ड अपने पिता और कश्मीर में तैनात अपने फौजी भाई के संस्मरण सुनाता रहा ।

उसनेे बताया कि उसके पिता फौज में कैप्टन थे । वे एक बार मिजोरम में तैनात थे कि एक रात जब उनके मेजर भोजन के बाद अपने कैंपस में टहल रहे थे उनने दूर पेड़ों के तले एक छाया सी खड़ी देखी तो उन्हे शक हुआ । उनने अपनी टॉर्च से उस छाया पर प्रकाश फेंका तो सचमुच उन्हे एक आदमी भागता हुआ सा दिखा । उन्हे लगा कि उनके कैम्प को मिजो विद्रोहियों ने घेर लिया है और वे छुप कर उन पर हमला करने जा रहे हैं। आनन-फानन में उनने सिन्हा साहब को बुलाया तो सिन्हा साहब ने अपने सैनिकों को तैयार होने का हुक्म दे दिया । वे सब तैयार हो कर हमला करने के लिए मोर्चाबंदी ही कर रहे थे कि एकाएक उन्हे याद आया कि अंधेरे में खड़ा आदमी फौज का मुख़बिर 'मणि' तो नही है ! उनने तुरंत ही अपने डिप्टी को याद दिलाई तो वह चौंकता सा बोला-'' हां आज मणि को आना तो था , लेकिन वो तो रात को आने वाला है !''

'' ये लोग सबसे छुपते-छुपाते आते हैंैंंं , इसलिए जिस वक्त मौका मिला तभी चल देना ठीक मानते है । इसलिए हो सकता है कि रात की बजाय वह शाम को ही आ गया हो !''

हमले के लिए तत्पर खड़े लोग अब संशय में थे ।

डिप्टी ने अपने सैनिको को चारों ओर फैल कर कैम्प की रखवाली का कमांड दिया और वे खुद मणि का इंतजार करने लगे।

वो रात सुरक्षित बीत गई । सुबह आसपास की जमीन की सूक्ष्म जांच करने पर पता चला था कि रात को सिर्फ एक आदमी के आने के संकेत हैं । इसका मतलब यह था कि रात को मिजो विद्रोहियों के आने का खतरा नही था, अपना ही आदमी आया था । एक हादसा होते होते बच गया सबने ईश्वर का लाख-लाख शुक्र अदा किया कि कैप्टन साहब को ठीक समय पर याद आ गया , वरना एक कीमती मुख़बिर से हाथ धोना पड़ता ।

सिन्हा साहब के अनुसार ऐसी ही एक घटना उसके भाई के साथ कश्मीर में तैनाती के दौरान घटी थी ं। हुआ ये था कि वे लोग अपने कैम्प में थे कि खबर मिली-एक मिलिटैंट पास के गांव में आया है और एक दुंमंजिला मकान में जबरन घुस कर घरवालोे को धमका कर शायद उस घर की अस्मत लूट रहा हैै ।

सेना के दस्ते ने तुरंत ही उस दुमंजिला मकान को घेर लिया । कमांडोज ने अपनी पोजीशन ले ली तो एक जांबाज सिपाही ने किवाड़ खटकाना शुरू किया । दरवाजा खुलने में देर होती दिखी तो सिन्हा साहब ने ऊंची आवाज में किवाड़ तोड़ देने की धमकी दी ।

इस धमकी का जल्दी ही असर हुआ-आहिस्ता से किवाड़ खुल गये ।

दरवाजे के बीचोंबीच एक बूढ़ा अपनी पत्नी के साथ खड़ा था-'' क्या बात है कैप्टन ?''

'' आप लोग सुरक्षित हो न ! वो मिलिटेंट कहां है ?'' सिन्हा साहब ने बुजुर्ग दम्पत्ति को आश्वस्त किया था ।

डरते सहमते उन दोनों के मंुंह से बोल ही नहीं निकल पा रहे थे ,तो कमांडोज ने समझा कि मिलिटेंट के डर से वे कुछ भी बताने में हिचक रहे हैं । सिन्हा साहब का संकेत पाकर वे सब उस मकान में बेहद सतर्कता के साथ दाखिल हो गये और उस मिलिटेंट को खोजने लगे थे । सतर्क सिन्हा साहब की नजरे उस वक्त भी उस बूढ़े कश्मीरी दम्पत्ति पर थी , उनने अनुभव किया कि कमांडोज के घर में दाखिल होते ही वे दोनों कातर हो उठे है। सहसा सिन्हा साहब को लगा कि गलतफहमी में कुछ अघट न घट जावे ! उनने अपने कमांडोज को आदेश दिया कि यदि कोई आदमी मिले तो उसे जिन्दा पकड़ लिया जावे। आधा घंटे की जद्दोजहद के बाद ऊपर के कमरे में एक युवती के साथ छिपा ए के 56 धारी एक युवक पकड़ा गया तो कमांडो उसे पकड़ के सिन्हा साहब के सामने ले आये ।

सिन्हा साहब ने बूढ़े कश्मीरी को बुलाया-‘‘बाबा, ये लड़का कौन है? सच बोलना !‘‘

बूढ़ा व्यक्ति वैसे ही कातर भाव से उन्हे ताकता रहा , जैसे कि उसने कमांडोज के घर में दाखिल होते वक्त उन्हे देखा था ।

सिन्हा साहब आगे वढ़े और उनने बूढ़े आदमी का कंधा थपथपाया

-‘‘ बाबा सच बोलोगे , तो हो सकता है यह लड़का बच जाये । बताइये न कौन है यह?‘‘

बूढ़े आदमी की निगाह नीचे झुक गईं ,जमीन को ताकता वह बोला

-‘‘ जनाब , यह मेरा बच्चा है ।‘‘

सिन्हा साहब और उनकी टीम दंग रह गई-अरे बाप रे ! अपने घर आये इस युवक मिलिटेंट को उन सबने किसी दूसरे के घर में जबरन घुसा मिलिटेंट समझा था और उसे मारने में कसर ही क्या बची थी ? यहां तो मामला ही दूसरा निकला , लड़का अपने मां-बाप से मिलने आया था और जिस वक्त उनने घेरा वह अपनी पत्नी के पास था । सिन्हा साहब किंकर्तव्य विमूढ़ से रह गये थे उस वक्त ।

बाद में सिन्हा साहब की समझायस और बूढ़े की होशियारी ही थी कि उस नवयुवक ने आत्मसमर्पण कर दिया था और उसने अपने आतंकवादी दल के बारे में तमाम नये सुराग दिये थे । इस तरह सिन्हा साहब की सतर्कता की वजह से एक नहीं कई जानें बच गई थी ।

उनके पिता तो अपनी तेज याददाश्त के कारण अनेक बार युद्ध के दौरान इसी तरह से अपनी कंपनी को खतरनाक हादसों से बचा चुके थे । सन इकहत्तर के भारत-पाक युद्ध में उनने अखनूर और छम्ब के क्षेत्र में दुश्मन से लोहा लिया था । इस तरह की गलतफहमी के कारण द्वितीय विश्व युद्ध में मित्र देशों की सेनाओं में हुयी तमाम ऐसी झड़पों की घटनायें भी सिन्हासाहब रात भर सारे दल को सुनाते रहे थे ।

गलतफहमी से मुझे याद आया , कि कैसे जरा सी गहतफहमी पैदा होने से श्यामबाबू ने रामकरण की जान ले ली थी । उस रात मैंने उन सबको रोज की तरह अपना किस्सा सुनाना आरंभ कर दिया-

.........उस दिन गिरोह में से कृपाराम और अजयराम कहीं चले गये थे और अपनी जगह हमेशा की तरह उन दो निहत्थे बदमाशों को पहरेदार बना के छोड़ गये थे, जिन्हे लल्ला पंडित लगुन के बुलौआ में आये

मेहमान कहा करते थे, क्योंकि जब भी वे दोनों आते थे, दिन भर चुप बैठेे रहते थे और टुकुर-टुकुर इधर-उधर देखते रहते थे ।

तो रोज की तरह उस सांझ भी श्यामबाबू ने अगरबत्ती जलाकर ‘‘ ओम जय जगदीश हरे ‘‘ एवं ‘‘ जय अम्बे गौरी, मैया जय अम्बे गौरी ‘‘ की आरतियां गाई थीं फिर सब लोग शांति से बैठे तो ष्यामबाबू को कुछ याद आया और अचानक ही उसने रामकरन को विरहा सुनाने का निर्देश झाड़ दिया था ।

अपहृत लोगों में सब ही कुछ न कुछ सुना ही लेते थे । दोनों ठाकुर आल्हखंड गाते थे,तो मै फिल्मी गाने गा लेता था । लल्ला पंडित भजन-रामायन सुना लेते थे और शिवकरण ब्याह-बुलौआ में गाये जाने वाले महिला गीत अच्छी तरह से गा लेता था ,लेकिन रामकरन सबसे उम्दा गाता था । वह इस उम्दा तरीके से विरहा गाता, कि लगता था, वह बैंक का चपरासी नहीं, कोई ढोर चराने वाला चरवाहा है जो अपनी भैस की पीठ पर बैठ कर सुर साध कर विरहा गा रहा है ।

उस दिन रामकरन के कपार में भारी दर्द था, सो विरहा गाने का हुकुम सुनकर पहले तो एक मिनट तक वह सोचता रहा, फिर हाथ-जोड़ के क्षमा सी मांगता बोला-‘‘ दाऊ आज मेयो मूड़ दूख रहो है, आजि छुट्टी दे देउ । कलि सुनाइ देंगे ।‘‘

श्यामबाबू अनुशासन और आतंक के लिए तो पूरा जल्लाद था, उसे गलतफहमी हो गई कि रामकरन का यह इन्कार किसी मजबूरी की वजह से नही बल्कि गायकों का सहज सा नखरा है, सो वह गरज उठा-‘‘ सारे बनिया वारे , तेये दिमाग भौत बढ़ि गये । मूड़ न दूख रहो, तू जूता मांगि रहो है ! चलि.........गा सारे !‘‘

रामकरन ने जी कड़ा किया, अपने तेज दुखते कपार में दो तीन मुक्का मारे और आँख मूंद के मन-ही-मन वह उपयुक्त विरहा याद करने लगा , जिसे इस वक्त विरहा सुनाया जावे ! और इतनी देर में तो गुस्से से लाल-पीला होता कालीचरण अपने हाथ में जूता लिए उसके सिर पर जा पहुंचा था ।

‘धड़ाक‘ एक जूता रामकरन के सिर पर ठोकता वह चिल्लाया

-‘‘ मादरचो..........तुम सबके नखरे मुखिया ने बहुत बढ़ा दये है। लातन के माजने हैं तुम सब के, बातन से काम न चलिवे बारो ।‘‘

रामकरन कातर हो उठा और आंखों में याचना के भाव लाते हुए उसने कालीचरन का जूता पकड़ लिया, तो बागी का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा था । उसने रामकरन को एक धक्का मारके नीचे गिराया और उसकी छाती पर चढ़ बैठा था, फिर दे पे दे रामकरन के मुंह में जूता मारता चला गया था । रामकरन के माथे, आँखं और होंठों पर खून छलछला उठा था ।

श्यामबाबू ने रोका तो कालीचरण ठहर गया । मैंने देखा कि कराहता रामकरन कुछ पल तो लेटा रहा , फिर दर्द सहने की कोषिष करता जैसे-तैसे उठा तो उसका चेहरा बड़ा विकराल हो चुका था । खून से रंग के लाल होगये चेहरे पर खून की लकीरों के बीच उसकी लाल-लाल खौफनाक आँखें चमक रही थीं, जिन्हे देख के मन में हहरन सी हो आई थी मुझे भी।

मैंने लम्बू ठाकुर को इशारा किया तो भूल-चूक की क्षमा मांगते हुए ठाकुर ने श्यामबाबू से आल्हखण्ड सुनाने की अनुमति मांगी और उसका जवाब सुने बिना ही शुरू हो गया-

सुमिरन करके नारायन को , ले बजरंग वली को नाम ।

कहूं कथा कीरतसागर की , यारो सुनियो कान लगाय ।।

नगर महोबा है दुनिया में, जहं पर बसें रजा परमाल ।

करके चुगली माहुलमामा , आल्हा-ऊदल दये निकाल ।।

ठाकुर की आवाज में उस दिन रोज जैसी हुंकार नहीं थी, इस कारण आल्ह ख्ंाड में रोज जैसा मजा नही आ रहा था । श्यामबाबू ने इशारे से गाने से मना किया तो ठाकुर चुप हो गया ।

गिरोह का माहौल भारी हो गया था और इस कारण रात को सब लोग चुप-चुप ही रहे थे । खाने के बाद अपहृतों की टांगे एक जंजीर से बांध के बागी पक्का बंदोबस्त करके सो गये ।

तब सुबह के चार बजे थे, जब अचानक कई लोगों के चिल्लाहट सुनकर हम सबकी आँख खुली । सामने बड़ा अजीब द्दश्य था । कालीचरण और रामकरन आपस मे गुत्थमगुत्था होते हुए जमीन पर गुलांटे खा रहे थे । श्यामबाबू हाथ में बन्दूक लिये दम साधे निशाना लगाये तैयार खड़ा था । रामकरन ने कालीचरण को इस कदर चपेट रखा था कि लाख जतन करने पर भी वो अलग नहीं हो पा रहा था ।

लुढ़कते हुूए यकायक कालीचरण जब रामकरन के ऊपर आया तो उसने रामकरन के दोनों हाथ जकड़े और पूरी ताकत लगा के उनसे मुक्त हो गया और एक छलांग लगाके दूर जा गिरा था । बस इतना ही काफी था । श्याम बाबू ने मौका देखा और ‘‘ धांय‘‘ से एक फायर कर डाला । गोली सीधे ही रामकरन के सीने में जा घुसी थी और वहां से खून का फौबारा छूट निकला था । उठने का प्रयास करते आहत रामकरन को दूसरा मौका ही नहीं मिला , कालीचरण ने अपनी बन्दूक उठाकर खुद भी एक गोली रामकरन के तड़प रहे बदन में सीधे माथेे पर दाग दी थी । खून का फौबारा छोड़ता रामकरन का शरीर लगभग उछलते हुए नीचे गिरा और थोड़ी देर तड़प् कर एक झटके से ठण्डा पड़ गया । अपहृतों ने घबरा के अपना मुंह फेर लिया ।

जब रामकरन का बदन शांत हो गया तो कालीचरण की खौफनाक आवाज गूंजी-‘‘ चलो सबि लोग जा हरामी के मोंह में पेशाब करो !‘‘

अपहृतों को काटो तो खून नहीं ! आदमी ऐसा पिशाच भी हो सकता है, इसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी ।

श्यामबाबू, कालीचरण और बाकी दोनों बदमाश ‘ तुल्ल तुल्ल ‘ करके रामकरन के मुंह में पेशाब करने लगे थे तो लल्ला पंडित का उबकाई सी आने लगी थी ।

श्यामबाबू के पूछने पर कालीचरण सुना रहा था -‘‘ पता नहीं काली भमानी की का किरपा भई कै तनिक सी आवाज से मेरी नींद टूट गई और मै तो डरप ही गयो । सारो जि रामकरन हाथ जै बड़ो पत्थर उठाके मेरो मूड़ कुचलिवों चाह रहो थो । मैं फुर्ती से करवट बदलके झट से उठके खड़ा हो गयो और वा दुश्मन को काबू में करि पायो । तब तक तो तुम सब जगि गये थे ।‘‘

श्यामबाबू ताज्जुब में था-" रामकरन के पांव की जंजीर कैसे खुल गई? लग रहो है कै सारे ने रात की बात को बुरो मान लियो । सारे के मूड़ में मौत मड़रा रही थी कल से । हम तो कल ही माड़ारते सारे खों !"

कालीचरण के इशारे पर अब तक सुस्त रहे उनके वे दोनों साथी बदमाश हरकत में आ गये थे और हम अपहृतों की जंजीर की पड़ताल करने लगे थे ।

उस दिन अपहृतों को दिशा मैदान की भी अनुमति नहीं मिली थी , हमे बंधे हुये ही रामकरन की लाश के पास बैठाये रखा गया ।

दस बजते-बजते कृपाराम और अजय राम लौट आये थे - उन्हे देख कर हम लोग अज्ञात भय से भर उठे थे-इस घटना के प्रतिकार में हम लोग न पिट जावें । रामकरन का वृत्तांत सुनकर अजयराम के चेहरे पर घृणा तैर आयी थी, वह बोला " अच्छो रहो, अभागो मरि गयो ! नपूते के घर बारे भी जा के मरिवे को इंतजार करि रहे थे, तब हीं तो तुम सबि के घर ते रूपया-धेला आइवे की खबर-वतर आगई, और जा सारे के घरि से अब तक कछछू संदेसो न आयो। सारो अपने आप छूटि गयो पकड़ से ।"

एकाएक कालीचरण ने अपहृतों को हड़काया-" तुममें से कौन जलिदी छूटिबो चाहि रहो है ?"

हम सब स्तब्ध थे। पांचों लोगों ने तुरन्त ही इन्कार में सिर हिला दिया ।

श्यामबाबू ने नया हुकुम दागा-" तुम लोग रोटी-पानी को इंतजाम करो इतई !"

लल्ला चौंका-" दाऊ इते ? हिंया तो लासि डरी है !"

" हां ! लासि के ढिंग खानों बनेगो आज ।" कहते श्यामबाबू का चेहरा किसी हिंस्र पशु सा कठोर दिखने लगा था ।

रोज की तरह खाना तो बना , पर जाने कैसे कृपाराम को समझ आ गई सो बना-बनाया खाना लेकर उसने सबको वहां से दूर चले जाने की मुहलत दे दी ।

अगले दिन शाम सात बजे के समाचारों में रेडियो पर रामकरन की लाश मिलने का जिक्र सुनते चारों बागी गर्व से गर्दन फुलाये बैठे थे, और इशारे से अपहृतों पर अपना रौब गालिब कर रहे थे ।

रघुवंशी ने उत्सुकता से पूछा-"जिस दिन गिरोह को पता लगा कि दरोगा तोमर की तरक्की उससे छिन गई , उस दिन भी तो रेडियो पर यह खबर सुनी होगी उन लोगों ने ।"

" हां, खबरें तो रोज सुनत हते वे सब । उस दिन तो मिठाई बंटी थी वहां ।...........लेकिन तोमर साहब को एक निरपराध आदमी को ऐसे मार देवो ....! टाप तो जानते होंगे तोमर को !."

" जानता क्या था, हम लोग साथ-साथ थे ।" रघुवंशी ने मेरी बात काटी , फिर मुझे डांटने लगा-" तुम सारे क्या जानो कि हम लोग कैसे काम करते है। अब तुम अपनी कथा-कहानी बंद करो आज, और सो जाओ !"

मै सकते में आ गया अचानक उनकी यह बात सुनकर और फिर चुपचाप सोने में ही भलाई समझी मैंने अपनी । लेकिन ऐसे में भला नींद कहां आनी थी ,सो पूरी रात जागता रहा मैं उस दिन ।

तब रात के तीन बजे होंगे जब रघुवंशी की धीमी सी आवाज सुनी मैने । शायद सिन्हा ने उन दिनों की कोई बात छेड़ दी थी सो रघुवंशी धीरे धीरे कुछ सुना रहा था-‘‘ उन दिनों मै उसी थाने का इंचार्ज था और वहीं तोमर डकैती उन्मूलन टीम का इंचार्ज था । उसका डेरा उन दिनों मेरे थाने में ही था । मुझे तो पूरी घटना पता है । हुआ ये कि ़ ़ ़ ़़ ़‘‘ इसके साथ रघुवंशी ने उन दिनों का वाकया सुनाना शुरू कर दिया।

तोमर जिला मुकाम से लौटा तो बेहद परेशान था उस दिन ।

डकैती उन्मूलन की बैठक में उस दिन उसको कुछ ज्यादा ही डांट पड़ गई थी । इलाके में डाकुओं की हरकतें हद से ज्यादा बढ़ गईं थीं उन दिनों, और जनता आये दिन आन्दोलन करने लगी थी, सो डकैती-उन्मूलन यानी कि एडी की व्यवस्था देखने आई0 जी 0साहब खुद उस जिले में आये थे । बैठक में पेश किये गये रिकॉर्ड में उनने देखा कि इंसपेक्टर तोमर पिछले छै महीने में डकैत तो दूर रहे, डकैतों को मदद करने वाले किसी आदमी तक को नहीं पकड़ पाया है ! तो उनने तोमर को लम्बी डांट पिला दी । उसे डाकुओं से मिला हुआ गद्दार अफसर कहा, यहां तक कि उसे डरपोक और हिजड़ा तक कहा गया ।

पुलिस की नौकरी में इस तरह की घटनायें अकेले में तो चाहे जब घटती रहती थीं लेकिन भरी सभा में ऐसी बेइज्जती असह्य थी । तोमर बड़ा खुद्दार इंसपेक्टर था , उसे अपना अपमान बहुत बुरा लगा । वह थाने में लौटा तो पूरी रात तनावग्रस्त रहा ।

सुबह मैंने उसके तनाव का कारण पूछा तो वह फट पड़ा-‘‘ यार , ये नहीं समझ पाता मैं कि सारा पुलिस विभाग हम इंसपेक्टरों पर ही क्यों चड्डी गांठता है ? जो देखो हमारे ही सिर पर सवार होने को फिरता है ! इलाके की शांति व्यवस्था बनाए रखना अकेले हम लोगों की जवाबदारी है क्या ? क्या इन बड़े अफसरों का का कोई उत्तरदायित्व नही है ! अब अगर पूरी कोशिश के बाद भी मुझे डाकू नही मिले तो मै क्या कर डालूं !‘‘

मैंने पूछा तो उसने डकैती उन्मूलन की बैठक का सारा किस्सा सुनाया ।

मैंने उसे समझाया कि अफसरों की बात का क्या बुरा मानना , पु़लिस की नौकरी तो है ही चाकरी । कहावत है कि ‘ उत्तम खेती मध्यम बान, अधम चाकरी भीख निदान ‘तो वह नहीं माना । बात भीतर तक बैठ गई थी उसके ।

अगले दिन से वह अकेला गश्त पर निकलने लगा । दिन भर इलाके में घूमता मुख़बिरों से बतियाता और नये मुख़बिर तलाश करने मंे भिढ़ा रहता । मैं यह समझने में असमर्थ था कि क्या करने जा रहा है वो ! सात दिन में उसने वो सारा बजट खर्च कर डाला था जो पिछले छै महीने से मुखबिरों पर खर्च करने के लिये आया था और अब तक जिसमें से एक पाई भी खर्च नहीं की थी तोमर ने ।

फिर वो खतरनाक रात आई , जिस दिन वह मुझसे यह कह कर गया था कि जब भी मैसेज करूं फोर्स लेकर सीधे बीहड़ मंे आ जाना । मैं अचंभे में था कि अकेला किस घपले में जान फंसा रहा है यह ? मेरे पूछने पर मुस्करा के बोला था , खतरे की कोई बात नहीं ,हमेशा की तरह मुखबिर ही पुलिस का काम कर देगा । मुझे तो नशे में गाफिल निहत्था डाकू मिल जायेगा ,जिसे अपने कब्जे में लेते ही मै तुमको खबर कर दूंगा । अपने को तो बस उसे जिन्दा गिरफ्तार भर करना है ।

मैंने सिपाहियों को तैयार रहने का हुकुम दिया और तोमर के संदेश का इंतजार करने लगा ।

रात एक बजे तोमर के वाकी-टॉकी से संदेश आया कि मुझे तुरंत ही शेरसिंह के पुरा के पास पहुंचना है । मैंने फटाफट जीप तैयार करवाई और सिपाहियों को लाद के वहां के लिए चल पड़ा ।

घाटी की मेनरोड पर अपनी मोटर साइकिल लिये तोमर खड़ा था । हम लोग पहुंचे तो वह बड़ा खुश दिखा मुझे । हम लोग जीप वहीं छोड़कर भीतर डांग में उतर गये । एक किलोमीटर के करीब चले होंगे कि तोमर ने इशारा किया । एक पेड़ के पास उल्टा पड़ा एक आदमी चांदनी रात में दूर से ही दिखाई दे रहा था । हम लोग रूके । तोमर के चेहरे पर इस वक्त दु‘ख झलक रहा था-‘‘यार , एक गलती हो गयी । डाकू शराब में मिले जहर की वजह से पहले ही मर गया !‘‘

‘‘ अब ? ‘‘ मैं उससे अगली स्ट्रेटजी जानना चाहता था ।।

‘‘ चलो , मुठभेड़ बता देते हैं ।‘‘ कहते हुये उसके चेहरे पर दर्द स्पष्ट दिखाई दे रहा था । फिर हमने बैठ कर कहानी की सिचुयेसन बनाई और उस लाश को पेड़ से टिकाकर गोलीबारी शुरू कर दी ।

जैसा कि मुखबिर ने कहा था हमने सबको यही बताया कि मारा गया आदमी डाकू श्यामबाबू घोसी है ।

श्यामबाबू घोसी ! चम्बल का दुर्दान्त डाकू !! जिसने सुना वह चकित रह गया ।

उन दिनों चम्बल में सिर्फ श्यामबाबू का ही नाम गूंज रहा था सो हरेक के मुंह से इतनी बड़ी उपलब्धि के लिए एक ही शब्द निकला-वाह !

अगले कई दिन तोमर के नाम थे । जाने कहां-कहां की टीवी चेनल और अखबारों के संवाददाता उससे इंटरव्यू लेने आते रहे थे । तमाम अफसर और नेता फोन करके सीधे बधाई दे रहे थे उसे । यह देख देख कर हम मन ही मन हंसते रहते थे ।

बाद में श्यामबाबू गिरोह को फिरौती देकर किसन और बिशन नाम के दो लड़के लौटे तो मीडिया को पता लगा था कि जिस आदमी को हम सब श्यामबाबू बता रहे थे वह तो कोई दूसरा आदमी था, असली श्यामबाबू तो अब भी अपने गिरोह के साथ बीहड़ में स्वस्थ और सुरक्षित घूम रहा है । तोमर को पता लगा तो वह सीधा उस मुखबिर को खोजने निकल पड़ा जिसने हमे श्यामबाबू की लाश सोंपी थी , ताज्जुब कि वह आदमी गांव छोड़कर जाने कहां चला गया था । वह क्या चला गया, तोमर से उसकी किस्मत रूठ गयी थी । उसकी तरक्की छिनी, बदनामी हुई और झूठ तथा मक्कारी के लिये उसका नाम पुलिस में एक मुहाविरा बन कर रह गया था । बेचारा त्यागपत्र देकर नौकरी छोड़ गया तभी ।

सिन्हा चौंका-‘‘ तो क्या उस आदमी को तोमर साहब ने नही, मुखबिर ने मारा था ?‘‘

‘‘ हां !‘‘ मुस्कराते रघुवंशी साहब कह रहे थे और सिन्हा आंखे फाड़ें उन्हे बिस्मय से देर तक ताकता रह गया था ।

मुखबिर की कारगुजारीयों में एक यह काम भी शामिल है, यह तथ्य मुझे चौका भी रहा था और मैं सोने का बहाना किये उन दोनों की आगे की बात सुनना चाहता था , लेकिन बाद में उन दोनों में आपस में कोई बात नही हुई ।

शायद सो गये थे वे दोनों ।

फिर तो मुझे भी पूरी रात नींद नहीं आई , आंखों ही आंखों में रात कटी मेरी ।

कारसदेव

मैने अनुभव किया था कि बीहड़ में हम जिस भी गांव के पास से निकलते हरेक ज्यादातर गांवों के बाहर एक चतूबतरा जरूर बना होता । कृपाराम पूरी श्रद्धा से उस चतूतरे पर सिर जमीन पर रखकर प्रणाम करता ।

मुझ लगातार यह उत्सुकता रहने लगी कि इस जैसा हिंसक आदमी कौन से देवता को इतना मानता है, किसी दिन पूछेंगे ।

एक दिन मौका देख कर मैंने पूछा तो कृपाराम ने बताया-ये हम ग्वाल बालों के देवता हीरामन कारसदेव है ।

'इनकी कथा हमने कहीं सुनी नहीं, दाऊ किसी दिन सुनाओ न !'मेरी सहज उत्सुकता थी ।

कृपाराम ने आष्वसन दिया कि जिस दिन कोई गोटिया मिल गये, संग में ले आयेंगे और सब लोगों को कारसदेव का किस्सा सुनायेंगे । बहुत दिनों से कारसदेव की गोट नही सुनी , हम सब भी सुन लेंगे ।

उस दिन राशन लेकर लौटे अजयराम के साथ पीले से साफे, घुटन्ना धोती और मटमैली हो चुकी कमीज वाले चरवाहे जैसे तीन-चार आदमी भी जाने कहां से चले आये थे । लल्ला धीमे से बुदबुदाया-' लो जे चारि पेट और वढ़ि गये । अब जाने कितने दिन तक अब इन चार संड- मुसंड आदमियों को भी रोटी बनाना पड़ेगी !'

रात को जब खाना बनने लगा अजयराम ने लल्ला पडित को दूध की केन दिखाई-' सुनि ले रे पंडत ! केन मे ंसे दूध निकारि ले , आज खीर बनेगी अपने यहां, ख्ीर को ही भोग लगतु कारसदेव को ....और आज तनिक धो-मांजि के रोटी बनइये ,जूठ-बिठारो मति कर देइये । ''

जब भोजन बन गया, कृपाराम ने कहा-'' अबे रोटी मति परसिये रे पंडत! जे गोटिया पधारे है अपने हिंया ! जे कारसदेव की कथा सुनावेंगे, फिर भोजन-पानी होयगो अपुन सबको ।''

........और उन चारों में से एक दुबले पतले से आदमी ने अपने भारी भरकम झोले में से सामान निकलाना शुरू किया- डमरू जैसे स्वरूप का फिट-डेढ़ फिट लम्बा पीतल का एक ढोल और पूजाका सामान (यानीकि रोरी-चावल-कलावा-खोवा की मिठाई के अलावा अगरबत्ती का एक छोटा सा पैकेट भी)उसने निकाला । आखिरी में उसने एक नया कम्बल निकाला ।

डंेरों के पास की एक ऊंची सी जगह को साफ करके कम्बल बिछाया गया, जिस पर गोटिया लोग बैठे । गोटियों के आसपास बागी भी बैठ गये और तिरपाल सरका के अपहृत लोग भी खिसक आये ।

गोटियों के सिर हिलने लगे। बुजुर्ग सज्जन ने कान पर हाथ धरा और लम्बा सुर साधा- ये ये.......

ये वरदानी कहिए , ये रजबोला नाम

एलादी करी तपस्या , भोला रे.........

वरदान ले आई भोला से , निरभैया रे.......

वे लोग दो घंटे तक मिल जुल कर गीत गाते रहे । बाद में सियावर रामचंद्र की जय के साथ उनने जय बोली, गाना बंद किया और पसीना पोंछने लगे ।

लल्ला पंडित ऐसे समय में ज्यादा निकटता दर्शाता है, उसने बड़े श्रद्धा भाव से उन बुजुर्ग सज्जनसे पूछा-'' दाऊ, जि कथा बोलि के नहीं सुनाइ जा सकत्तु ! गायवे में तनिक समझु नही पड़ रही ।''

'' खूब सुना सकतु । तुम सबमें धीरज है ?'' बुजुर्ग सज्जन बड़े उत्साहित थे ।

'' बोलिके सुननो है तो पहले रोटी-पानी है जान देउ, फिर सुन लेइयो ।''कृपाराम ने बीच में दखल दिया तो लल्ला पंडित सहम कर उठ गया और खाना परसने की मिसल लगाने लगा ।

खा-पी कर वे लोग आराम से बैठे थे कि वे बुजुर्ग सज्जन कथा सुनाने को उत्सुक हो उठे, ''हां तिममे से पंडित कौनु है जो कथा सुनिवो चाह रहो हतो ?''

'' हम हैं दाऊ'' लल्ला पंडित उछाह में भर उठे ।

........और वे बुंजुर्ग सज्जन कथा सुनाने लगे ।

गड़राजोन एक नगर था, वहां राजू नाम के एक गूजर महाराज रहते थे । गूजर भी ऐसे समृद्ध कि घर में ईश्वर का दिया सब कुछ । डांग में उनका करियल (भैंसों) का समूह चरने का छूटता तो काला समुंदर हिलोरे लेता दीखता । सार में से गायों का समूह छूटता तो धरती सुफेद हो जाती । दूध दुहने के लिए मईदार जुूटते तो छोटा-मोटा तला भर जाता । बड़े-बड़ेे कडाह दूध से भर जाते, ओंटने के लिए भटटी पर रखे जाते तो कोसन दूर तक दूध के औटने की सोधी सी खुशबू छा जाती । घर में अल्ले-पल्ले दूध-घी होता, भीतर बिण्डा में नाज का भण्डार और घरवाली की कुठरिया में हीरा-मोती की डलियें भरी धरी रहतीं ।

राजूका एक छोटा भाई गोरे था, जो अपने बड़े भाई के प्रति अपार श्रद्धा रखता और उनकी आज्ञा का अक्षरसः पालन करता था । घर में सोडा नाम की सुलक्षिणी-सर्वगुण सम्पन्न पत्नी थी , सन्तानों में एक लड़का सूरपाल और बेटी एलादी । एलादी ऐसी सुन्दर ,ऐसी खपसूरत,ऐसी सलोनी कि राजा इन्दर के दरबार की अप्सरा उसके सामने पानी भरे । अंग अंग में सुंदरता दीपती, बदन से कमल की गंध छूटती , रूप की ऐसी छटा कि मनुज की बात

कौन कहे, जड़-चेतन माने पशु-पक्षी, देवता-दानव, सिद्ध-जिन्न-भूत प्रेत जो भी उसे एक बार देख ले मोहित हो जावे । गांव में निकलती तो रोशनी सी हो जाती । गांव में एक अकेला घर गूजरों का, बाकी सब जाट, जिनकी आंखों मंे सदा से राजू गूजर की तरक्की अखरती थी और हमेशा मौका की तलाश मे ंरहते, जब कि राजू को नीचा दिखायें ।

ऐलादी बारह बरस की हुई ,जवानी आने को थी कि राजू को उसके ब्याह की चिन्ता हुई । कुंवर ढूढ़े जाने लगे । गुजर समाज में जहां -जहां कुंवर होनेकी खबर होती राजू अपनी लड़की के लिए लड़का देखने पहुंच जाते ।

उधर जाटों ने मिल बैठ कर विचार किया कि राजू अकेला है, कमजोर है, इसकी लड़की इतनी खपसूरत कि साक्षात लछमी , जहां जायेगी उजाला कर देगी । गांव का धन गांव से बाहर काहे जाये, राजू से कह दो कि गांव में लड़को की कमी नहीं है, जाट विरादरी में से किसी भी लड़के को पसंद कर लो, लड़की का ब्याह आन गांव के लड़के सेस काहे करते हो, यही ंकर डालो । और कोई न जमता हो तो राजा जनवेद के कुंवर से पक्की कर दो । राजू तक बात पहुंची तो राजू को जैसे झटका लगा, अपनी विरादरी छोड़ के काहे को आन विरादरी में बिटिया ब्याहें ! सोचा मना कर देंगे सीधे-सीधे !

फिर बुद्धि ने चेताया कि अगर सीधे मनाही कर देंगे तो जाटों की हुकूमत है, सब मिलके हाल ही चढ़ बैठेंेंगे ओर मरजी-बेमरजी बेटी ब्याह ले जायेंगे ।

फिर क्या रस्ता बचा है ?

गांव मे ंरहेंगे तो राजा की ‘हांजू हांजू‘ कहना पड़ेगी । बैटी जाटो में ब्याहना पड़ेगी । इससे बचना है तो गांव से बाहर जाना पड़ेगा । बाहर कहां ? चौरासी कोस तक के फेरा में जाटों के घोड़े रोज पहरा लगाते बिचरण करते है.....कहीं भी जाओ,उनके घेरे में ही रहोगे । दो दिन तक घर द्वारे बंद रहे, पति-पत्नी बैैठे-बैठे घोकते रहे, क्या करें.....कहां जावें..? कैसे बचें जाति डूबने से !

सहसा राजू महाराज ने निर्णय लिया , जे देश छोड़ चलो । आन देश चलो, जहं इन जाटों का राज न हो ।

राजू महाराज का निर्णय पत्नी ने हां कह के माना, भाई गोरे ने पांव छू के माना, बच्चे तो निराट छोटे थे वे बेचारे कहां से तरक करते ।

रतोंरत तैयारी हुई । और कुछ तो ले नहीं जा सकते थे अकेली करियल ही गूजर की दौलत होती है सो दुधारू करियल छांटी और हांक के रात को ही गोरे को चले जाने का इशारा किया। कहा रास्ते में र्कोई मिले तो कहना हरी घास की तलाश में दुधारू भैंसें चराने ले जा रहे हैं । चरागाह की तलाश में दूर-दूर तक भटकना पशु पालको ंकी सदा से आदत रही है, सो कोई काहे का शक करता । छोटा भाई गोरे भैंसे-पड़ेरू लेकर चल पड़ा, और चलता ही रहा, रात दिन की मंजिल करके तीन दिन मे ंवह जाटों की सीमा पार कर गया और राजपूताने में पहुंच गया । इधर गोरे के राजपूताने में पहुंचने का आंदाज लगाके राजू ने तनिक सी रात होते ही पत्नी और बच्चो ंको लिया और बिना सामान के घर छोड़के चल दिया । पत्नी सोडा को दुख था कि घर छोड़ा , बाखर छोड़ी, खेत छोड़ेे खलिहान छोड़े, उड़ना-कपड़ा छोड़े, बासन भांड़े छोड़े और गहना गुनिया छोड़े ; यहां तक कहे कि घर में हीरे रखे हीरा-मोती भी छोड़ के जाना पड़ रहा है । सोडा की आंखों में आंसू आये तो राजू ने डांटा-चलते समय रोते नही हैं भागमान, असमुन होता है ।

आंसू पोछ के सोडा तेज कदमों से चल दी । आगे राजू , बीच मे दोनों फोहा भर के बच्चे और पीछे पीछे सोडा ऊंची-नीची धरती पर ,पगडण्डी-रास्ता छोड़ के दूर-दूर चले जिससे पांव के निशान तक न रहें । रात पूरी बीती , सूरज उग आया । काहे का नहाना काहे का धोना, जब विधाता की विडमना होती है तो सब बातें भूल जाना चहिये । आंत से निकले बच्चे थकान से बेहाल थे, उन्हे पुटरिया में बंधी रोटी निकाल के खवाईं और चलत चलते ही खाने को दे दीं ।

संझा होते होते वे लोग गोरे से जा मिले और सबने एक नदी किनारे रात बिताई । चोंपे भी थक चुके थे वे भी बैठे , तो आंख मूंद के गहरी नींद मे ंसो गये ।

विहान हुआ । नदी मंे नहा धोके राजू ने सगुन बिचारा और फिर से नाक की सीध में चलती धरदी । रास्ते में बगरैत भूरे जाट का राज पड़ा, और उसने इतने करियल देखे तो उसकी नीयत बिगड़ गई । उसने अपने आदमियों के साथ राजू पर हमला कर दिया । बेचारे राज ूऔर गोरे दो जने क्या करते ! अच्छी अच्छी करियल भूरे न छुड़ा लीं । बची खुची लेकर राजू और गोरे आगे बढ़े ।

किसने कोस गिने, किसने रास्ते के गांव देखे, जाने कितनी दूर पहुंच गये थे कि दूर से एक बड़ा सा नगर दिखा । एक राह चलते राहगीर से उस शहर का नाम पूछा तो पता लगा कि वह झांझ शहर है ।

दूर से दिखा कि चारों ओर खूब हरियाली है, रेत के बीच में स्वर्ग सा दिख रहा था वो शहर । राजू का मन खुश हो गया । उन सबने जल्दी से कदम बढ़ाये और बात की बात में शहर के कोट के सामने जा खड़े हूुए । बड़े दरवाजे से नगर में दाखिल हुए, दरवाजे पर बैठे पहरेदारो ंने नाम-पता पूछा तो लिखाया: नाम-राजू, निवासी-गड़रा जोन, यहां आने का कारण- गांव मे ंविपता पड़ी सो जनमभूमि छोड़के काम-धंधे की तलाष में आये हैं।

झांझ में खूब हरियाली थी, खूब पानी था, कमी थी तो दुधारू ढोरों की , सो बात की बात में राजू गूजर की भैंसों का दूध झांझ के हाट-बजार में नामी हो कर छा गया । चार-छह दिन मे लगने लगा कि सही ठौर-ठिकाने पर आ गये हैं, अब विपदा के दिन आराम से कट जायेंगे । लेकिन बुरे दिन कब आयेंगे..... विधना के ऐसे लेख किसने देखे हैं......? विपदा ने अभी पीछा नहीं छोड़ा था,

हरियल घास उपजाने वाले उपजाऊ जमीन से चली भैंसे यहां पीली जमीन में सूख्ेा मोसम में आई तो उनकी देह मौसम का ताप न झेल सकी और सब की सब बीमार हो गई , एक को देखा तो दूसरी , और दूसरी को देखा तो तीसरी ।एक एक कर भैंसे जमीन पर पसरने लगीं, जिसे देख पहले गोरे घबराया फिर सोडा और बच्चे डरे , फिर राजू ने उन्हे देखना भालना शुरू किया । लेकिन न बीमारी समझ में आये न बेजुबान जानवरो की पीड़ा, सो बस महादेव शंकर ही एक मात्र भरोसा थे, उन्हे मन ही मन सिमरते हुए घर में जो तेल-गुड़ था वही दवा मान कर भैसों को पिलाना लगे । लेकिन बीमारी तो ऐसी आई थी कि महामारी बन गई । सांझ तक एक एक कर भैंसे लेटने लगी और जो भी लेटती आंखे टेड़ी कर लेती ।

वो रात कालरात्रि बन कर आई, सारी भैंसे एक ही रात में पसर गईं । सारा घर रो पड़ा । अब क्या होगा ?

भैंसों की मृत देह ठिकाने लगा कर लौटे राजू का मन भविष्य की चिंताओं में उलझ गया था ।

...........और काल की गति किसने देखी है ! गड़राजोन में हल्के-पतरे राजा की तरह जीवन जी रहे राजू की करम क ेलेख से आज क्या गति हो गई थी ।

जब परिवार की गति देखी नहीं गई तो एक दिन सोते में अपना घर छोड़ कर राजू और गोरे जाने कहां को चले े गये । सुबह मां और बच्चे उठे तो परेशान हो गये कि पिता और काका कहां गये ?

एक दो दिन इंतजार किया फिर मां ने बच्चों के खाली पेट में कुछ डालने के लिए खुद कुछ करने का फैसला किया, वे भटकती हुई झांझ के राजा के यहां पहुंची ओर पहरेदार से पूछा कि कोई काम हो तो वे मजदूरी करने तैयार है । पता लगा कि रसोई में गेहूं पीसने के लिए एक मजदूर की जरूरत है, बेचारी सोडा तैयार हो गई । सांझ तक उसने गेंहू पीसे और रात को घर जाने लगी तो घर भर के लिए भोजन की पत्तल और आटा मिल गया ।

एलादी को मां का यह मजदूरी करना उचित नहीं लगा, उसने मना किया कि मां ऐसे किसी के यहां मजदूरी करना ठीक नहीं है, कुछ और कर लो ।...लेकिन अड़साठ साल की बूढ़ी मां करती भी तो क्या ? उसने कह दिया कि तुम्हे बुरा मानना है मान लो, मुझे तो यही करना पड़ेगा , मेरी मजबूरी है ।

नाराज एलादी का मन बुझ गया । अगले दिन वह सुबह सबेरे उठी और बिना किसी को बताये चुपचाप घर छोड़ के बाहर निकल गई ।

मां सोडा बडी परेशान हुई और थक-हार के अपने काम पर चली गई । मां का रोज का यही क्रम चलने लगा, सुबह उठ कर राजा के यहां काम पर जाती , रात को मजदूरी में भोजन और आटा लेकर लौटती । मां बेटे खाते और सो जाते ।

उधर एलादी का मन बड़ा दुखी था सो वह भटकती हुई जंगलो की तरफ चली गई , और वैरागिन बनके यहां-वहां भटकने लगी । जंगलों में उसे एक मंदर का सूना खण्डहर दीखा, तो वह उस खण्डहर में जा पहुंची । बियाबान जंगल में अकेले उसी खंडहर मंदिर में रह कर एलादी गीली मिटटी से बहुत सारे शिवलिंग बनाती और बड़े भक्ति भाव से उनकी पूजा करती । इस तरह एलादी शिव भाक्ति करने लगी । उसे सुबह शाम जब भूख लगती तो वह यहां-वहां पड़े वृक्षों के पत्ते उठा कर खा लेती ।

उधर एलादी के पिता और काका भटकते हुए लुहार राजा के यहां जा पहुंचे थे ,जहां राजा ने अपने यहां एलादी के पिता राजू के लिए भट्टी में कोयला झोंकने और काका गोरे को ढोर चराने के काम पर रख लिया ।

इस तरह बारह वरस बीत गये ।

बारह वरस की तपस्या से भोले बाबा शंकर भागवान एलादी की भक्ति से प्रसन्न हो गये और एक दिन ग्वाले का वेष बना कर एलादी के पास पहुंचे । वे एलादी से बोले -बहन, तुम रोज-रोज मिट्टी के शिवलिंग काहे बनाती हो, सासक्षात शिवजी की पूजा काहे नहीं करतीं!

एलादी बोली-साचात शिवजी कहां मिलेंगे ?

ग्वाला वेष धारी शंकरजी बोले -ऊपर पहाड़ पर शंकर जी की मूर्ति है वहां जाओ । एलादी पहाड़ के ऊपर पहुंची और चारों ओर शिवजी की पिंडी ढूढ़ने लगी । लेकिन पहाड़ी पर शिवजी की कोई पिंडी नहीं थी । पहाड़ी षिखरपर गोल-मटोल आकार की एक बड़ी सी चट्टान रखी हुई थी,,एलादी ने उसी चटटान को शिवलिंग मान कर जल का लोटा उसके ऊपर ढार लिया । ये क्या, जल ढारते ही बड़े े जोर की गर्जना हुई ओर पहाड़ी एकाएक दो भागों में फट गई । पहाड़ी के भीतर साषात भोले बाब तपस्या कर रहे थे, पहाड़ी फटी तो उसमें से भोले बाबा प्रकट हुऐ और एलादी से पूछा -बोल बहन तू क्या चाहती है !

एलादी बोली-आपने मुझे बहन कहा तो मैं यही मांगती हं कि आप मेरे भाई बनकर मेरी मां की गोदी में जनमें ।

शंकरजी बोले बहन तूने ये क्या मांग लिया, ये कैसे संभव है कि तेरी मां के पेट से मैं जनम लूं ।

एलादी ने बहुत पूछा लेकिन बहन के रिश्ते का लिहाज करके भोले बाबा ने यह नही बताया कि एलादी की मां अस्सी साल की बूढ़ी डोकरी हो गयी है, अब उनसे कैसे संतान पैदा होना संभव नहीं ! बड़े सोच विचार के बात भोले बाबा ने एलादी कहा- जा बहन तेरा कहा पूरा करूंगा, लेकिन मेरी कहां याद रखना ।

एलादी बोली आप जो कहें वह पूरा करूंगी !

शंकर भगवान बोले अगले महीने सोमवती अमावस्या है, उसी महीने मलमास यानी कि अधिक मास (पुरूषोत्तम मास) है, आनी मां से कहना अगर पूरे महीने नहीं नहा पाये तो कम से कम पांच दिन नहा ले । वो सोमवती अमावस्या के दिन जब नदी में नहाने जायेगी, उसकी गोदी में एक कमल का फूल आयेगा, मां से कहना, उस फूल को अपनी गोदी में अरोग ले ।

एलादी खुशी-खुशी घर लौटी, और उसने अपनी मां को अपना सपना कह सुनाया ।

मां बोली- भैया काहे मांगा, सुख और समृद्धि मांगती ।

एलादी बोली जिस दिन भोला खुद मेरे भैया बनके आयेंगे, सुख और समृद्धि तो अपने आप ही आ जायेगी ।

अस्सी साल की मां से अधिकमास मे न सुबह से जगा जाये न नदी तक नहाने जाने की दम थी । एलादी अपनी मां को जगाती और पीठ पर लाद के नदी में ले जाती । नदी में और भी दूसरी सखियां नहां रहीं होतीं, वे एलादी की मां को देख कर हंसती । एलादी चुप ही रहती । सोमवती अमावस्या आई। मां नहा रही थी कि देखा नदी के स्रोते की तरफ से तीन-चार कमल के फूल बहते चले आ रहे हैं । वह गोदी खोल कर फूल लेने के लिए पानी में ही बैठ गई । उसके आगे पानी की धारा में जो सखियां नहा रहीं थीं ,उनने भी फूल देखे तो वे भी गोदी खोल के आषीर्वाद का फूल लेने को लपकीं । लेकिन ईश्वर की कृपा थी कि वे फूल किसी की गोदी में न आये सीधे एलादी की मां सोडा के आंचल में आ कर रूके ।

यह देखा तो रोज-रोज नहाने आने वाली वे सखियां गुस्सा हो उठीं-हम एक महीना से रोज नहा रहीं है, हमे फूल नहीं मिले, और यह बुढ़िया एक दिन में ही कमल का फूल ले जा रही है ।

उन सबने मिल कर सोड से कहा -ये डोकरी हमारे हिस्ससे के फूल कहां ले जा रही है? हम रोज की नहाने वाली हैं फूल भोले बाबा ने हमे भेजा है ।

एलादी कुछ कहाने वालीथी कि मां गने रोक दिया, बोली- बहन तुम्हारे भाग्य मे ंहोगा तो तुम्हे मिल जायेगा । मैं दुबारा से स्रोते में कमल सिरा देती हूं ।

कमल दुबारा स्रोते में सिरा दिये गये और सब सखियां आचल फैला कर पूरी नदी घेर कर बैठ गयीं । लेकिन जहां सखियां थीं वहां कमल अलोप हो गये और उनके पीछे जहां एलादी की मां सोडा बैठी थीं वहां कमल प्रकट हुये और सीधे सोडा की गोदी में आकर समा गये । अब सखियों की आंख खुलीं ओर वे सोडा के भाग्य सराहने

लगी और अपनी गलती के लिये उनसे क्षमा मांगने लगीं । वे सखियां घरको चलीं तो गली-गली सोडा की बात सुनाते चलीं गई।

फूल लेकर सोडा बाहर निकलीं और अपनी बेटी से बोली- बेटी मुझे जल्दी से घर ले चल , मेरी गोदी भारी होने लगी है ।

मां को पीठ पर लाद कर एलादी घर की ओर चली । टूटी सी मढ़ैया में टूटी सी खटिया विछा कर उसने मां को लिटाया । मां ने कहा बेटी सूप ले आ ।

एलादी ने सूप लाकर रखा तो सोडा ने सूप में कमल के वे फूल धीरे से रख दिये, और ये क्या ! सूप में धरते ही वे कमल के फूल पांच बरस के सुंदर बच्चा के रूप में बदल गये । उनहे देख एलादी भारी खुश हुई ं उधर जनमते ही बच्चा बोला-बहन तेरा कहना पूरा कर दिया मैंने । अब तू जा और पिताजी को बुला ला । वे आयेंगे तो मेरे जनम के सारे संस्कार होंगे।

एलादी ने कहा-उन्हे जाये बारह बरस हो गये पिता और काका का तो कोई पता नहीं है हमको । जाने कहां है वे दोनों ।

भैया बोला-जा लुहार राजा के यहां चली जा । उसके यहां पिताजी कोयला झाोेंक रहे हैं और काका उसी के ढोर चरा रहे है।

एलादी दौड़ी और लुहार राजा के दरवाजे पर जाकर बोली -दादा किवार खोल देउ तुम्हारी बिटिया एलादी तुम्हे पुकार रही है ।

भीतर पशुशाला में सो रहे गोरे ने बड़े भैया से कहा -भैया ,हो न हो , एलादी की आवाज लग रही है ।

राजू बोले-अपन को उनहे छोड़ कर आये बारह वरस हो गये । जाने वे जीते भी हैं या मर- ख्ुार गये कहीं । उनहे कैसे पता कि अपन लोग यहां हैं ।

लेकिन एलादी ने फिर पुकारा- दादा, मै एलादी आपको बुला रही हू्ं ,जल्दी से घर चलो । मुझे पता है कि आप और काका यही रहते हों ।

राज तुरत ही बाहर निकले और पूछा -तू ऐसी काहे चिल्लाती है ।

एलादी बोली-दादा ,जल्दी चलो । घर मे ंभैया ने जनम लिया है ।

पिता बोले-तू सिर्रन तो नही हो गयी बिटियारानी, हम बारह बरस से घर से बाहर हैं, तेरी मताई की उम्मर अस्सी साल की हो गई होगी , ऐसी झंख डोमकरी के कहा से बच्चा हुआ होगा । लोग कहेंगे -पति बाहर था, औरत जाने कहां कुकर्म कर आई । बेटी वैसे ही बुरा बखत चल रहा है , तू धीरे से बोल ! काहे बदनामी कराती है ।

एलादी बोली -दादा आप डरो जिन, मेरी तपस्या से खुश होकर अपने महादेव शंकर खुद भैया का रूप धर के प्रकट भये हैं । वे अवतारी है, उनने तो कूख से जनम नहींे लिया, वेंे बिना भव के जनम लेने वाले देवता

है । आपको विश्वास न हो तो देख लो आपके लुहार राजा का बुरज झुक गया है । उधर देखो राजा की सिहांसन पलट गई है ।

राजा ने देखा तो सचमुच लुहार राजा के किले के पांच बुर्ज झुक गये थे, और दूर राजा के आंगन में उनकी सिंहासन उलटी पड़ी थी । उनहे कुछ कूुछ विश्वास हुआ ।

डरता-सहमता राजू घर पहुंचा तो देखा, सूप मे पांच बरस के राजकुंवर जैसे लला खेल रहे है ।

वे बाहर लौटे और छोटे भाईग् से बोले-गोरेे जा भैया, नाइन ओर वरारहिन को बुला ला, बच्चे के जनम के संस्कार करा लें ।

गोरे दौड़ा और बात की बात में दोनों औरतों को बुला लाया ।

बच्चे के असनान और नरा काटने के संस्कार हुए । दोनों औरतें अपनी दक्षिणा के लिए खड़ी हो गई। एलादी बड़ी शर्मिन्दा सी हुई कि इनहे अब दक्षिणा कहां से दें, घर में तो फूटी कौड़ी भी नही ंहै ।

भैया समझ गये बोले-बहन लाज में मति मर, काका के पुराने घड़ा में जवा धरे हैं उनसे इन दोउअन की ओली भर दे ।

एलादी ने दौड़ कर घड़ा खोजा और पुराने घुने जवा निकार के दोनों की ओली भर दी । वरहारिरन ते बच्चा को आशीषती हुई अपने घर चली गई, लेकिन नाइन ने अपनी ओली वही झटक दी और बोली- जे घुने जवा को हम कहा करेगे,सम्हालो अपने जवा ।

जब वह घर पहुंची और अपनी धोती निकाल रही थी कि देखा एक दो जवा अभी भी धोती में उलझे रह गये हैं, उसने झटकने के लिए हाथ चलाया तो लगा कि ये तो भारी वजन के जवा है । उसने ध्यानसे देखा तो चकित रह गयी , वे जवा सोने के हो गये थे । उसके अगल-बगल के जवा मोती बन गये थे । अपनी गलती से उसे बड़ा दुख हुआ वह दौड़ती हुई बरहारिन के घर पहुंची तो देखा कि वह अपने घड़े में जवा रख कर अपने घर का काम कर रही है । नाइन ने उसे जवा के सोने के हो जाने का का चमत्कार बताया तो वह बोली कि बेचारी परदेसिन गरीब का काहे मजाक उड़ाती हो ।

नाइन के कहने से उसने अपन घड़ा देखा तो चकित रह गयी -उसका घड़ा सोने और मोतियों से भर गया था ।

नाइन ने उससे कहा कि मुझे आधा-आधा दे, तो वह तुनक कर बोली तुझे तो नखरे आ रहे थे, अब जा अपनी अपनी किस्मत है और अपने अपने करम का फल है ।

कहने वाले कहते हैंकि वह बाद में नाइन दुबारा से राजू गूजर के घर गयी और आशीरवाद मान के उसके आंगन की राख गोदी मे भर लाई और घर में एक तरफ डाल दी तो घर के चारो ओर राख के पहाड़ हो गये । वह फावड़ा उठा के राख हटाने में जुट गई लेकिन रात तक वह तनिक सी भी राख न हटा पाई ।

उधर वरहारिन ने पूरे गांव में राजू गूजर के घर अवतारी पुरूष के जनम लेने की खबर फैला दी । घर-घर में राजू के भाग्य की चर्चा होने लगी । नाइन का पति अपनी घरवाली को यह खबर सुनाने लौटा तो देखा वहां

राख के पहाड़ हैं, वह अपनी घरवाली के लड़ंके स्वभाव को जानता था ,बोला - तू जरूर बेचारे राजू के घर कुछ उल्टा-सीधा बोल के आई है । जा उनके यहां छिमा मांग के आ, जिससे ये दालिद्दर दूर हो जाये ।

नाइन राजू के घर जाकर बच्चे से माफी मांगने लगी ओर एलादी की मातां की सेवा मे जुट गई, उसने देखा कि पंडित जी आये हैं और बंच्चे की नाम धरई हो रही है ।

पंडित बोल रहे थे-ये बच्चा पुष्य नक्षत्र में जनमा है , असका पुण्य प्रताप पूरे जग मे फैलेगा , तुम्हारा बेटा अवतारी पुरूष है । इसका नाम कारसदेव प्रसिद्ध होगा । इसे हीरामन भी कहा जायेगा । ढोर-बछेरू के रोग बीमारी इसका नाम लेते ही दूर भाग जायेगी । राजू भैया, समझ लो तुम्हारे बुरे दिन बहुर गये, ये बेटा तुम्हारे सारे बैर बहोरेगा । जाओ खूब खुशी मनाओ ।

फिरक्या था, राजू के घर अल्ले पल्ले धर बरसा । वे फिर सेराजा हो गये । लुइहार राजा उनकी शरण मे ंआये ओर अपना राज पाट उन्हे सोंप दिया । कुंवर दिन दूने और रात चौगुने हो गये ।

इतना कह उन बुजुर्ग ने बताया कि कारसदेव की अनेक चढ़ई हैं किसी दिन फिर आकर सुनायेंगे अभी तो कथा को यहीं विसराम देते है। बोलो कारसदेव की जय....!

गिरोह के सब लोगों ने जय जय कार की तो पकड़ के लोग भी जय जयकार करने लगे ।

फिरौती

अगले दिन में किस्सा सुनाने का मन बना रहा था कि यकायक रघुवंशी ने पूछा -'' तुम कितनी फिरौती दे आये थे -गिरराज !''

'' कतई नहीं साहब , एकऊ रूपया ना दियो हमने !'' मैंने मजबूत आवाज में हमेशा की तरह जवाब दिया।

'' मैं बताता हूं दरोगा जी , इसका तो पूरा किस्सा मुझे मालूम है।'' दीवान हेतमसिंह ने बीच में दखल दिया और मेरी हंसी सी उड़ाता बोला-''गिरराज के बाप ने अपनी तीन बीघा जमीन बेच के एक लाख दये औैर लल्ला पंडित की घर वाली ने अपने जेवर गिरवी रख के पिचत्तर हजार पहुंचाय हते । इन दोउअन की फिरौती वाही मास्टर केे हाथन से गयी थी साहब ,जिसके यहां ये लोग पंद्रह दिन पड़े रहे ।''

''वो साला मास्टर रहता कहां है ? अपन लोग सीधा उसे ही पकड़ लें न ! काहे को यहां दर-दर की ठोकर खाते भटक रहे है ?'' सहसा रघुवंशी ने मुझसे पूछा था ,तो मैं अचकचा गया और सिर्फ इतना कह पाया था-'' हम तो इतनो जानि सके कै वो राजस्थान में कहीं रहतु है ।''

'' लेकिन मजेदार बात ये रही साहब, कै घर लौटि के इन हरामियों ने वही बात कही जो इनके बाप बागियो नें इन्हे सिखा दइ हती । पतो है साहब! ....जब आई जी साहब ने इनते पूछी कि तुम कैसे भाग आये , क्या कुछ फिरौती दी ? तो दोनांे साफ नट गये, कहने लगे कि एकऊ रूपया ना दियो साहब । डाकू सो रहे हते , हमने मौका देखो और भजि आये।''

मै मन ही मन सोच रहा था कि हम तो अपनी जान की कीमत दे के छूटे ,लेकिन डाकुओं के इलाके में तैनात तुम्हारे पुलिस के लोग तो सिर्फ शांति से अपनी नौकरी कर लेने के बदले में इन बागियों की ऐसी-ऐसी मदद करते है, कि कहना भी बुरा लगता है । क्या कभी उनसे किसी ने इसका हिसाब किया ?

उस दिन हैडकानिस्टिबिल हेतम मेरे बगल में चल रहा था । बस मैंने उसे जरा सा छेड़ दिया कि ' इन बागियों को पनपाने में पुलिस वालों की मिली भगत तो होती है दीवानजी ', तो वह भीतर से फट सा पड़ा था । बोला-'' तुम तो खुद बागियों के इलाके के रहने वाले हो सब जानते हो । हम कहा करें , ससुरे हम अपनी जान थोड़ी गंवाइ दें । हमे तो इनही बीहड़न में नौकरी करनो है , हमारे लरिका-बच्चा अकेले कौन के भरोसे छोड़ देगे हम । सरकार ससुरी कहां हथेली लगा लेगी । बागी कहा नहीं करि सकत्त ? उन्हे का रोक है? वे तो खुले सांड़ हैं, जिसे चाहंे , जहां चाहें जाकर निपिटा सकतु हैं ।''

दुखी हेतमसिंह मुझे सुनाता रहा था ....कि पुलिस की तरफ से जाने-अनजाने इन डाकुओं की मदद तो होती ही रहती है । वायरलेस वाला मिश्रा अपने विभाग की आगे की योजनायें तनिक से रूपयों के लालच में बागियों तक पहुंचा देते हैै। .....हां , कई कर्मचारी जैसे नरवरिया जी लालच तो नहीं करते , लेकिन .उनमें से बहुत से ऐसे हैं जो जाति-विरादरी के दबाब में सूचनायें देने का काम करते हैं,.......दरअसल बागीयों की विरादरी के तमाम कर्मचारी पुलिस में ऊपरसे नीचे तक भरे पड़े हैं सो बागी उनपे अपने रिश्तेदारों से दबाब डलवाते हैं और मन मारके

विभाग की खबरें बागियों को सोंप देते हैं । और भैया......................कई बार ये भी होता है कि खबर मिलने के चार-छह घंटे बाद जानबूझ कर पुलिस कर्मचारी वारदात वाली जगह देर से पहुंचते है, जिससे बागी अपना काम करके सुरक्षित जगह पहुंच जाते है, ...इस लेट-लतीफी की वजह यह है कि एक तो पुलिस को तैयारी में कुछ समय भी लगता है ,क्यों कि बंदूक लेना, एम्यूनेषन लेना, गाड़ी में डीजल डलवाना वगैरह की खाना पूरी करने में देर लगती है और दूसरी यह कि अपनी सुरक्षा की चिन्ता में भी पुलिस जान बूझ कर देर करती है ताकि बागीर उस जगह से दूर निकल जावें और खतरा टल जाये । क्योंकि बागी तो जंगल के कोने-कोने से बाकिफ होते हैं , और पुलिस वाले ऐसी जगहो से अंजान रहते हैं सो वे नई जगह बिना तैयारी और जानकारी के घुसने में अपनी जान जोखिम में डाल देना मानते हैं।..........पुलिस के पुराने वायरलेस सेट भी बागियों के पास सारी सूचनायें पहुंचा देते है ,क्योंकि किसी भी टाजिस्टर सेट का एफ एम बैण्ड लगा लो पुलिस वायरलेस पर होने वाली बातचीत का एकएक शब्द आसानी से सुनाई आ जायेगा ।

हेतम ने यह भी बताया था कि बागियों के सुरक्षित रहने का सबसे बड़ा कारण उनके विश्वस्त मुखबिर होना है ,वे लोग बड़े पक्के जासूस रखते हैं अपने। उनकी तुलना में पुलिस अपने मुखबिरों को न उतनी सहायता दे पाती , न वे इतने गुप्त रह पाते है , कि डाकुओं की उन पर नजर ही न पड़े , सो पुलिस को ज्यादा सही सूचनायें ही नही मिल पातीं। जबकि डाकुओं के मुखबिर एकदम गुप्त रहते है। इसके लिये वे प्रायः उन्हे पकड़ के लोगों के सामने कभी नहीं बुलाते ,खुद जाकर उनसे मिल आते है। फिर डाकू लोग मुखबिरों के लिए इतना पैसा देते हैं कि पुलिस कल्पाना भी न कर सकेगी ।

हेतम की बातों से मुझे ऐहसास हो चला था कि डाकुओं को खोजने के इस अभियान में भी छोटा कर्मचारी उतनी रूचि क्यों नहीं दिखा रहा ,जितनी बड़े अफसर दिखा रहे है। सच है सबकी अपनी-अपनी मजबूरी है ़़....... ़लेकिन आखिर पुलिस की भी तो कुछ डयूटी है न ! मन ही मन एक तर्क उठा था मेरे सामने। अपनी मजबूरियों की वजह से डाकुओं को सहयोग देते और उन्हे पनपाते ये पुलिस वाले जाने कितने निरपराध लोगों को मरवाये दे रहे है , जाने कितने लोगों को फिरौतीयों की भारी रकम से पूरी तरह लुटाये दे रहे हैं ।

हम भी तो लुट ही गये ! घर लौट कर दद्दा ने सारी कहानी सुनाई थी मुझे । जिस दिन हमारी पकड़ हुई देर रात तक तो कोई खबर ही नहीं मिली , क्योंकि सबको पता था कि मैं चुनाव करवाने गया हंू ,पता नहीं किस गांव में क्या इंतजाम करवाते फिर रहे होंगे ।

रात बारह बजे गांव का कोटवार आया और उसने दद्दा को जगा कर बताया कि मेरा अपहरण हो गया है । दद्दा सकते में आ गये -हमाये पास का धरो है लला ! हमाये लरिका को डाकू काहे को पकरेंगे ?

लेकिन सच तो सच था, उनके इस तरह पूछने या विश्वास न करने से घट चुकी घटना वापस तो नहीं हो जाती । घर भर को जगा कर दद्दा ने इस घटना से अवगत कराया तो घर में कोहराम मच गया । आधी रात को रोहाटे पड़ गये हमारे यहां।

पुरा - परौस के लोगों ने समझा कि मेरे घर कोई मौत हो गई । हमारे बीहड़ों में पकड़ हो जाने को भी मौत से कम नही मानते । आधी रात को ही मर्द-औरतेंें हमारे घर जुटने लगे , लेकिन जिसे भी सचाई का पता लगता वह तुरंत ही वहां से खिसक जाता । चम्बल की घाटी में एक बात प्रचलित है कि जिस घर का आदमी बागियों ने पकड़ लिया हो, उस घर पर बागियों की सतत नजर रहती है, सो कोई काहे को अपना नाम ऐसे आसामी के हितुओं के रूप में लिखवाये जो डाकुओं के दुश्मन हैं ।

दद्दा बिन बुलाये ही अगले दिन पन्द्रह किलोमीटर पैदल चल कर पुलिस थाने गये और अपनी नेहरू-कट जाकेट की ऊपरी जेब में मेरा फोटो धर ले गये थे । वहां ऐसे ही फोटो इकट्ठे किये जा रहे थे । मेरा कद-काठी और हुलिया लिख कर दरोगा ने दद्दा को झूठा-सच्चा आश्वासन देकर रवाना कर दिया और निर्देश भी दिया कि ज्यों ही डाकुओं से कोई खबर मिले तो वे सबसे पहले थाने में आकर सूचित करें ।

............और दद्दा मन ही मन रोते-बिलखते घर लौट आये थे । रास्ते में वे जहां भी रूके, जी भर के रोये ,क्यों कि पुलिस के सामने रोने-गाने का तो कोई मतलब नहीं होता , और घर की औरतों के सामने रोयेंगे तो उन्हे कौन धीरज बंधायेगा ? वे और ज्यादा कमज़ोर होंगी । उनके सामने तो द्दड़ बने रहना होता है हर हाल में ।

घर लौट कर दद्दा ने घर वालों को पुलिस का झूठा-सच्चा आश्वासन कह सुनाया और अगले ही दिन से अपने स्तर पर मेरी खोजबीन शुरू कर दी ।

लेकिन वे पूरी तरह नाकामयाब रहे , उन्हे कोई सूचना नहीं मिली । मिलती भी कहां से , हम तो उन दिनों मास्टर की कोठी में पन्द्रह दिन की कैद काट रहे थे ।

दद्दा बताते हैं कि हमारी पकड़ के साठ दिन बाद उन्हे कृपाराम की चिट्ठी मिली जिसमें पूरे पांच लाख रूपये फिरौती मांगी गई थी । चिट्ठी पढ़के दद्दा काठ हो गये । अपना गुरिया-गुरिया भी बेच देंगे तो भी पांच लाख नहीं जुटा पायेंगे वे । जाने क्या सोच कर घर के दूसरे लोगों से चिट्ठी की बात छिपा गये । बताया कि दो लाख रूपये भेजने की खबर आयी है, सो जुटा रहे हैं । घर वाले परेशान हो उठे कि दो लाख भी कहां से आयेंगे ? खेती की जमीन भी पूरी की पूरी बेच दें तो भी दो लाख न जुट पायेंगे । फिर ़ ़ ़ ़़ ़ ़़फिर कैसे छूट पायेगा इस घर का चिराग ! उस रात घर में कोई सो न सका ।

दद्दा पगलाये से सारे नाते-रिश्तेदारों में फिरते रहे । कृपाराम घोसी के डर से कोई आदमी उनकी मदद के लिए तैयार ही नही होता था । दद्दा ने जमीन का मोल करवाया तो तीन बीघा के तीन लाख रूपये लगे , उनने फिलहाल गिरवी रखने की बात कही तो गांव का साहूकार झट से आधे पर यानी कि डेढ़ लाख पर उतर आया वो भी दो रूपया सैकड़ा हर महीना ब्याज चुकाने की शर्त पर । दद्दा मान गये लेकिन उनने भी खूब सौदेबाजी करी और दो लाख लाकर घर में धर लिए, पता नही कब खबर आये और जाना पड़े ।

फिर मेरी ससुराल से मेरे साले का बेटा आया , उसके हाथ साले ने एक लाख रूपये भिजवाये थे । दद्दा सनक उठे- मैं बूढ़ा डोकरा कहां बीहड़ों में फिरूंगा? अपने बाप से कहना कि अपनी बहन के सुहाग का खयाल है तो रूपया भी लावें और खुद चले आवें । जि रकम उनके पास पहुंचाइने पड़ेगी न !

लिहाज करते हुए मेरे साले हमारे घर आये तब तक मेरे बड़े भैया भी गांव आ चुके थे ,लेकिन दद्दा ने जाने क्या सोच कर उन्हे हार में नही आने दिया ,साले को लेकर खुद चले आये । घोसी गिरोह की तलाश में वे कई-कई दिन बीहड़ों में भटकते रहे लेकिन गिरोह तक न पहुंच पाये । एक दिन बीहड़ में ही उन्हे मेरे साथ अपहृत हुए ठाकुरों के परिजन मिले तो दो के चार साथी हुए फिर एक दिन लल्ला पंडित का साला भी मिल गया, इस तरह पांच आदमी भेले हुए और पांच के पांच जंगल में भटकने लगे ।

इस बीच कई बार पुलिस के लोग उन्हे मिले और हर बार ऐंठ कर यही सवाल करते-तुम पांच लोग इस जंगल मे काहे को फिर रहे हो साले !

दद्दा इस बीच खूब कर्रे हो चुके थे ,वे अकड़ कर सचाई बताते ,तो पुलिस वाले उन्हे अपने रास्ते जाने देते ।

एक दिन तो पुलिस के डीआईजी वगैरह मिल गये । पुलिस सिपाहीयों का वही रवैया -क्यों बे कौन हो तुम ? कहां घूम रहे हो इस जंगल में ?

अब तो दद्दा रो ही पड़े- साहब करमों की गति का कहं ? हमारे बेटा को उठा ले गया है कृपाराम घोसी । तुम लोग तो नहीं छुड़ा पाये , अब हमही इंतजाम करि रहे है, जौ भी न करें का हुजूर !

डीआईजी साहब एक बाप का दर्द जानते थे , उनने दद्दा से क्षमा मांग ली और अपना प्रयास करते रहने को कहा ।

दद्दा बताते हैं कि जंगल में उन्हे जो भी चरवाहा या आदिवासी मिलता एक ही सवाल पूछता-क्या ढूढ़ रहे हो दाऊ!

दद्दा कहते- हमारी छै भैंसे हिरा गई है वे ही ढूढ़ रहे हैं !

और ऐसे ही संवाद से कृपाराम घोसी से मिलने के सूत्र मिले ।

एक मारवाड़ी चरवाहे के प्रश्न के जवाब में जब दद्दा ने भैंसे खो जाने की बात कही तो वह हंस कर बोला था-तुम्हारी भैंसे नही हिराईं , तुम्हारे छै आदमी हिरा गये हैं । कृपाराम घोसी ने पकड़ेे हैं तुम्हारे छै आदमी , सच्ची है न !

दद्दा बोले-हां सच्ची बात है, तिम बताओ भैया कै उन से कहां मुलाकात हुइये !

उसी चरवाहे ने बंदोबस्त किया और दद्दा की कृपाराम और श्यामबाबू से मुलाकात हुई । पांच पकड़ के बदले बीस लाख मांगे श्यामबाबू ने तो दद्दा साफ नट गये , बोले -हम सब अपने बाल-बच्चों तक को बेच देवें तोे भी बीस लाख न दे पायेंगे दाऊ ! तुम लोग बनिया-व्यापारी थोड़ी हो ,कै मुनाफा-नुक्सान जोड़ते फिरो । हम अपनी बिसात से जो करि पाये वो दे रहे है। अब ले लेउ , और पहले हमे अपने लरिका-बच्चा दिखा देउ ।

श्यामबाबू चौका-तो क्या तुम रूपया पहले नहीं देउगे !

दद्दा साफ झूठ बोले- नहीं , भग थोड़ी रहे,देखो जे धरे रूपैया ?

कृपाराम नर्म पड़ा- ठीक है चलो हम पकड़ दिखा देते हैं ।

मुझे याद है कि उस दिन कृपाराम के साथ मेरे दद्दा और दूसरे लोग आये थे अैेर हम लोगों को देख कर कितने खुश हुए थे । हमारे मैले -चीकट कपड़ा और बड़ी बड़ी जटायें देख कर भारी अफसोेस हुआ था उन्हे ।

फिर दद्दा ने सबको इशारा किया था तो सबने रूपये निकाल कर धर दिये थे । कुल मिला कर पन्द्रह लाख रूपये जुट पाये थे । गिरोह ने देर तक मशविरा किया , और ताज्जुब हुआ कि हाथ आये रूपये वापस कर उनने दद्दा सहित सब को लौटा दिया था-इस निर्देश के साथ कि जिस दिन बीस लाख जुड़ जायें, मास्टर के पास जाकर जमा करा देइयो ।

वे लोग निराश होकर लौट गये ।

इस बीच रामकरन की हत्या हो गई थी ,कहीं न कहीं बागियों को इस हत्या का अफसोस था । हम लोगों को संग लटकाये-लटकाये कृपाराम को तीन महीना बीत गये थे और इन तीन महीनों में बागी हमसे ऊब भी गये थे शायद, सो उनने मास्टर को खबर करी कि पन्द्रह लाख ही ले ले और गिरोह को खबर भेज दे । मास्टर की खबर मिली तो दद्दा तुरंत ही बाकी आदमियों को संग लेकर मास्टर से जाकर मिले ।

वे लोग तीन दिन वही पड़े रहे , मास्टर की जीप जंगलों में हमे खोजती फिरती रही । फिर जब हम मिले तो तुरंतई चल पड़े ।

मै अंदाज लगा रहा था कि मास्टर के यहां हम सबका मुण्डन करने के लिए नाई मौजूद होगा । मास्टर ने हम सबको नये कपड़ा मंगाये होंगे । पकड़ को आजाद करते वक्त ऐसा ही करने का रिवाज है हमारे बीहड़ों में । बताते हैं पहले तो आजाद करते वक्त बागी लोग पकड़ के गले मंे सोने की एक गंज (ताबीज) डाल देते थे,जिस पर उस डाकू का नाम लिखा होता था, जिसे देखकर उस आदमी को कोई दूसरा डाकू जिंदगी में कभी न पकड़ सके ।

लेकिन मुझे ताज्जुब हुआ कि ऐसा कुछ नहीं था , ये नये जमाने के डाकू थे । इन्हे न पुराने नियम कायदे याद थे न कोई रिवाज । हम सब को वैसे ही बड़े बड़ेे बालों में गंदे और बदबूदार कपड़ा लत्ता पहनाये विदा कर दिया उनने ।

हां , चलने के पहले डाकुओं ने हमे बार-बार यह जरूर सिखाया कि पुलिस को हमे सिर्फ इतना बताना है कि डाकुओं को सोता पाकर मौका देखा तो हम सब भाग आये । हमे किसी भी हालत में फिरौती की रकम और डाकुओं छुपने की जगह नहीं बताना है । अगर उनके मिलने जुलने वालों के नाम और जगहों का पता बता दिया तो वे हमे कहीं का न छोड़ेगे ।

़ ़़ ़़़ ़ ़ और हमने यही किया , पुलिस को कभी भी फिरौती की रकम , मध्यस्थ का नाम, डाकुओंके दोस्तों के नाम और छुपने की जगह नही बतायीं ं।

अब इसे हेतम हम सबकी गलती माने तो मानता रहे, हमे अपनी जान बचानी है । उस तीन महीने के नरक में दुबारा नहीं जाना चाहते हम ,जिसमें एक-एक मिनट एक-एक बरस की तरह काटा था हमने ।

बागी खुद उस नरक को नरक ही मानते थे। कृपाराम कहता था-हम तो चलती फिरती लाश हैं लाला ! जा नरक में जी रहे हैं ! का पतो कब मौत आ जाये ! सो हम सब ने तय करी है कै जब लो जियेंगे शान से जियेगे । अखबारन में चरचा तो होवे हमारी , नही तो काहे के बागी चुइंया-मुइया से!

अब नरक को तो हर आदकी नरक ही कहेगा न !

हर पल मौत से डरते रहना, जरा सी आहट पर चौंक पड़ना , अपने सगे संबंधियों पर भी षक करना और सबसे बड़ी बात महीनों तक न नहाना न धोना, ऐसे ही अघोरी बनके भटकते रहना ,नरक में ही तो रहना कहलायेगा ।

मैने फिल्मों में वे डाकू देखे थे जो उम्दा कद्दावर घोड़ों पर बैठे घूमते थेे, जिनके डेरों पर सुरा और सुंदरियों के ऐसे दौर चलते थे कि उनकी जिंदगी से हर बेरोजगार को रष्क हाता था , लेकिन कृपाराम के साथ के नब्बे दिन हमारी जिंदगी के ऐसे दिन थे जब हमने जीते जी नरक के दरषन कर लिये । जब भी किसी मंदिर-मस्जिद के सामने से निकलते हम यही प्रार्थना करते -हे ईष्वर, किसी दुष्मन को भी कभी फरार न होना पड़े, हमारे षत्तुर बैरी भी कभी किसी डाकू की पकड़ में न रहें । दूसरी दुख तकलीफ दे देना लेकिन ऐसी जलालत भरी जिंदगी से बचाना ।

हमे ताज्जुब तो यह होता था कि ऐसी जिंदगी के बाद भी बागियों की हार्दिक इच्छा थी कि किसी तरह वे समर्पण कर दें और षान से चुनाव लड़ें । जिस तरह का परिदृष्य हमारे देष की राजनीति में आज हमें दिखाई देता है, उसमंे उनकी यह इच्छा और उसका पूरा होना असंभव भी नहीं लगता था मुझे ।

शिनाख़्त

छोटा दरोगा बोला -‘‘ चलो तुम्हारा किस्सा निपट गया !‘‘

मैंने मन ही मन सोचा कि किस्सा कहां निपटा था, असली किस्सा तो फिर शुरू हुआ था ।

जब बिस्तर पर पहुंचा ,तो मेरी आंखों में नींद न थी । मेरी आंखों के आगे वह वास्तविक किस्सा घूम रहा था जो फिर षुरू हुआ था ।

उस दिन हमे घर लौटे हुये एक महीना हुआ था , कि अखबारों में खबर छपी ‘डाकू कृपाराम अपने साथियों के साथ समर्पण कर रहा है । ‘ लल्ला पंडित दौड़ते-दौ़ड़ते मेरे पास आये-‘‘ काहे गिरराज ,किरपाराम कौ समर्पण देख आयें का ?‘‘

मैं अब बागियों से दूर ही रहना चाहता था । हालांकि श्यामबाबू ने हमे छोड़ते वक्त कहा था ‘‘ वैसे तो कुत्ता पालते हैं , तो उससे भी प्रेम हो जाता है, तुम तो मानुस के जाये हो ! तुम दोउअन से हमे बड़ो प्यार है गयो है । अब जब मौका मिलेगो, हम तुम्हारे गांव आके मिला करेंगे । मिलोगे न !‘‘

तब तो मजबूरी मैने हामी भर ली थी ।

पर अब मेरी कतई इच्छा न थी कि मैं बागियों से दूर से भी राम-राम करूं । मेरे पिता कहते हैं कि डाकू और पुलिस वालों से दूर की राम राम भी ठीक नहीं ।

लेकिन लल्ला पंडित माने नही थे , समर्पण का उत्सव देखने जबरन ही मुझे लिवा ले गये थे ।

हजारों के भीड़ जुटी थी हाई स्कूल के मैदान में । समर्पण का समय सुबह दस बजे का तय किया गया था, और वहां साड़े दस बज जाने के बाद भी कार्यवाही में बिलम्ब दिख रहा था । माईक से बार-बार कहा जा रहा था कि बस कुछ मिनिट धीरज धरें, जल्दी ही हेलीकॉप्टर से मुख्यमंत्री पधारेंगे, और उनके सामने दस्यु-सम्राट कृपाराम अपने साथियों के साथ सरेंडर करेंगे । धीरज के ये कुछ मिनिट, घण्टों में तब्दील हो चले थे, पर न मुख्यमंत्री का पता था, न बागियो ंका । किसी को पता भी न था कि इस वक्त बागी कहां होंगे ! मैं और लल्ला पूछते फिरे, पर किसी ने हमारी उत्सुकता का शमन नहीं किया , हैरान होकर हम दोनों एक तरफ बैठ कर इंतजार करने लगे ।

शाम चार बजे कलेक्टर और एसपी साहब की कारें मैदान में आकर रूकीं । वहां मौजूद अधिकारी उनकी ओर लपके । एक सज्जन माईक पर आये और घोषणा करने लगे-‘‘ सुनिये ! सुनिये ! एक जरूरी काम से हमारे सूबे के मुख्यमंत्री आज दिल्ली चले गये हैं , सो आज कृपाराम का गिरोह अब कलेक्टर साहब के सामने सरेडर करेगा ।‘‘

एकाएक मैदान में धूल से लथपथ एक मिनी बस ने प्रवेश किया, भीढ़ उधर ही लपकी । डाकू उसी में सवार थे ।

वही पुलिस जैसी खाकी वरदी, कमर का बेल्ट, पांव के भारी जूते और माथे की जटाओं को बांाधते वे ही कमांडो सैनिकों जैसे काले पटुका के साथ अभिमान से गरदन अकड़ाये चारों बागी मिनी बस से उतरकर मंच की ओर वढ़ गये । उनको चारों ओर से घेर कर उन्हे देखते पुलकित होते लोगों की भीढ़ गाढ़रों के झुण्ड की तरह ् मंच तरफ चली आ रही थी ।

और मंच पर जनता के सामने जब अपने हथियार हाथेंा मे उठाये कृपाराम और बाकी डाकू सामने आये, तो मैंने अनुभव किया था कि श्यामबाबू हमारी तरफ घूर के देख रहा ह,ै वह षायद भीढ़ में से मुझे अपने पास बुला कर अभी हाल गालियां बकने लगेगा । मैंने ध्यान किया कि सारे-के-सारे बागी इस वक्त जोे हथियार हाथों में लिये हुए हैं, ये तो वे हथियार नही हैं ,जो बीहड़ में वे लोग अपने कांधे पर लिये रहते थे । ऐसा लग रहा है, ये तो कोई दूसरे पुराने हथियार हैं । असली हथियार तो शायद , ये लोग कही और छिपा आये है। ऐसा काहे करेंगे ये........? मेरा मस्तिष्क देर तक इस सवाल को सुलझाता रहा, लेकिन सुलझााने में पूरी तरह असफल रहा और शांत हो गया । अब कोई भी कारण हो हमे क्या !

पास जाने का मौका मिला तो लल्ला पंडित तुरन्त ही मेरी अंगुली पकड़ के बागियों के पास तक जा पहुंचे थे और अपना महत्व प्रदर्शित करते हुए दूसरों को सुनाकर जोर से बोले थे -‘‘ मुखिया राम राम !‘‘

कृपाराम हमे पहचान गया । बोला-‘‘ राम राम लल्ला पंडित ! कहो कैसे हो ! ....काहे रे लाला, तैं नाही बोल रहो सारे ! भूल गयो का ?‘‘

‘‘ मुखिया आपको को न भूल सकतु हम !‘‘

‘‘ हां , को भूल सकतु है ‘‘कहते हुये कृपाराम खूब जोर से हंस उठा था ।

‘‘ चलो दूर हटो ,कौन हो तुम लोग !‘‘ एक दरोगा हम दोनों को डांटकर वहां से भगाने लगा था , तो श्यामबाबू ने उसे डांटा था-‘‘ ये दरोगा जी , जरा ठीक से बोलो ! ये दोनों हमारे पुराने यार है , पूरे नब्बे दिन मेहमानी कराई हमने इन्हे !‘‘

यह सुनकर उस दरोगा ने एक बार फिर मुझे और लल्ला पंिडत को घूर के देखा था । फिर उसने हम दोनों का नाम और गांव का नाम पूछा था, फिर जाने क्या याद आया कि बाकायदा जेब से डायरी निकाल के लिख भ्ाी लिया था ।

उसे अपना नाम पता लिखते हुए देखा तो मुझे कुछ अचरज सा लगा लेकिन भय के कारण मैं वहां बोला नहीं । यह तो तब पता चला था जब कि दो तीन-महीने बाद एक दिन एक सिपाही हमारे नाम का सम्मन लेकर गांव में आ पहुंचा था, जिसमें हम दोनों को हुकुम दिया गया था कि हम लोग जेल में आकर डाकुओं की शिनाख्त करें !

अब बड़ी मुसीबत थी । यदि शिनाख्त को न जायें, तो पुलिस परेशान करेगी और जायें तो डाकू मार डालेगे । हर तरफ मुसीबत-ही-मुसीबत है। वहां जाकर सचमुच पहचान लेंगे तो डाकू हमारेे दुश्मन बन जायेंगे ।

सम्मन मिले तो मैं आगबबूला होके, लल्ला पंडित पर चढ़ बैठा-‘‘ तुम्हे बच्चों जैसा जोश चढ़ता है लल्ला, जिद्द कर रहे थे-बागी देखने चलो, बागी देखने चलो ! अरे यार वे कोई अनजानी अजीब चीजें थीं क्या ? और फिर दूर से देख के घर लौट आते चुपचाप ! क्या जरूरत थी कि उनके पास जाके राम-राम करते। अब देख लिया अपने बचपने का नतीजा ! इधर कुंआ-उधर खाई ! बोलो अब कहां जाओ्रगे क्या करोगे ?‘‘

लल्ला पंडित की घिग्घी बंधी थी , वे क्या बोलते !

खैर , हम दोनों एस डी ओ पी के पास पहुंचे । एस डी ओ पी ने हमसे पूछा-“ तुम उनको पहचान तो लोगे न !“

“ पहचान तो लेंगे , लेकिन हमारी इच्छा है कि हम इस झमेले से दूर रहें साहब!“

डिप्टी साहब की त्यौरियां चढ़ीं-“ पहचानते हुए भी अगर पुलिस की मदद नहीं करोगे तो समझ लेना सरकारी मेहमान बनने में देर नहीं लगेगी । तुम दोनों तो सरकारी कर्मचारी हो न ! सरकारी नौकरी मिनटों में चले जायेगी । तुम्हे तो वैसे भी सरकार की मदद करना चाहिए !“

“ मदद तो हम खूब करिवो चाहि रहे साहब , कहीं उनने हमे पहचान लियो तो हमारी खैर नही रहेगी ।“

“ उन हरामियों से तो डरते हो, और पुलिस की परवाह नही तुम्हे ?“ पुलिस अफसर के स्वर में पुलिसिया अकड़ प्रवेश कर चुकी थी उस क्षण ।

हम दोनों चुप रह गये थे । कुछ देर बाद उसी अफसर की जीप में लद के हम लोग जेल ले जाये गये थे । वहां जेल में बन्द चालीस कैदी खड़े थे- सब के सब गर्दन तक कम्बल लपेटे थे और सबकी आँखों में भरी थी हिंसक पशुओं जैसी चमक ।

कैदीयों की शिनाख़्त परेड में मेरी और लल्ला की गवाही नोट करने एक जज साहब भी पधारे थे । अंदर जेल में चारों ओर पुलिस ही पुलिस थी ।

एक पंक्ति में खड़े उन कैदियों को दूर से देखते मुझे अचानक ही जाने क्यों रामकरन की निर्मम हत्या याद हो आई थी । कालीचरण और श्यामबाबू ने एक जानवर की तरह बेहिचक उस मेहनती आदमी को बिना कसूर ही मार डाला था, और इस अमानुसिक काम पर उन दोनों को कुछ कहने के बजाय कृपाराम ने अजयराम के स्वर में स्वर मिला कर इस काम को अच्छा ही करार दिया था।

नब्बै दिन का संग-साथ था, सो ज्यों ही हम बागीयों के सामने पहुंचे , हम दोनों ने बिना हिचक उन्हे पहचान लिया । नाम से पूछने पर हम दोनों ने स्पष्ट कहा कि ये कृपाराम है........ये श्यामबाबू.......ये अजयराम......और ये कालीचरण ।

हमारी बात सुनके पुलिस हिरासत में होने के बाद भी श्यामबाबू गुर्राया-“ लाला मादरचो़ ़ देख लेंऊगों तोखों ! अगर बाहर निकलने का मौका मिला तो सबसे पहले तुम दोनों को खतम करूंगो !“

हम दोनों सहमे हुए वहां से चल पड़े थे ।

अदालत में मुकदमा चला था । तब तक छह महीने बीत चले थे, आरंभ में बीहड़ में सिंह के समान बेधड़क भटकते बागी अब चूहों से लगने लगे थे । सो हमारी हिम्मत भी वढ़ गयी थी और हम दोनों ने बेझिझक अदालत में भी बागियों की पहचान कर ली थी । रामकरन की हत्या के केस में हमारी ही गवाही के आधार पर सब बागियों को सजाये-मौत मिली थी। तो सबसे ज्यादा हम दोनों प्रसन्न हुये थे । हमको लगा था कि उनके दिल पर कई दिनों से रखा पर्वत अब जाकर उनके सीने से उतर पाया है । रामकरण की हत्या का प्रतिकार अब कर पायें है हम ।

अब इंतजार था कि बागीयों की अपील हाईकोर्ट से निरस्त हो जाये , तो छाती ठण्डी हो । उस दिन हमे बड़ी शान्ति मिलेगी जिस दिन उन चारों को फांसी होगी ।

हमारा यह इंतजार जल्दी ही खत्म हो गया था । उस दिन संभाग से आने वाले एक मा्त्र अखबार की एक प्रति लेकर लल्ला पंडित हांफते-कांपते मेरे पास आये । उन्हें देख कर मैं चौंका-‘‘ काहे लला पंडित , क्या हुआ ?‘‘

‘‘ जो....ज्जो....आज को अखबार देखो तुमने!‘‘पंडित बोलने में हकला रहे थे ।

मुझे कौतुहल हआ । लल्ला के हाथ से अखबार लेकर मैंने एक तरफ रख दिया, और लल्ला पंडित के कंधे पर सांत्वना भरा हाथ रखकर उन्हे अपने पास बिठाया । फिर भीतर से पानी लाकर उन्हे पिलाया -‘‘ तुम बहुत जल्दी घबरा जाते हो लल्ला !‘‘

‘‘ बात घबरायवे की ही है गिरराज,तुम अखबार तो पढ़ो ध्यान से!‘‘ उसका इतना ज्यादा आग्रह देख कर मैंने अखबार उठा लिया । खबर पढ़ते ही मैं चौंका ।

पुलिस हिरासत से डाकू गिरोह फरार: मिली भगत का संदेह

मुड़कट्टा का हार , चम्बल (निप्र) 27 जनवरी

एक अरसे तक पुलिस को छकाने के बाद आत्म समर्पण करने वाला डाकू कृपाराम अंततः अपने गिरोह के साथ पुलिस हिरासत से फरार हो कर फिर से बीहड़ में कूद गया है । जानकार सूत्रों का कहना है कि इस फरारी के पीछे किसी बड़े षड़यंत्र का सन्देह है ।

एक समय में चम्बल में आतंक और वर्णगत हिंसा का पर्याय बने डाकू कृपाराम घोसी ने मुख्यमंत्री के सामने हथियार डालने का विचार किया था लेकिन ऐन वक्त पर मुख्यमंत्री के दिल्ली चले जाने की वजह से कलेक्टर के सामने घोसी गिरोह ने आत्म समर्पण किया । गिरोह के सदस्यों के खिलाफ अदालत में कई मुकदमे चलाये गये जिनमें से एक में तो उनके द्वारा अपहृत किये गये लोगों की शिनाख्ती की वजह से पूरे गिरोह को मौत की सजा सुनाई गई थी । आज एक अन्य प्रकरण में पेशी से लौटते वक्त ज्यों ही मौका मिला कृपाराम गिरोह मुड़कटटा की घाटी में चलती बस में पुलिस सिपाहीयों की आंखों में लाल मिर्च का पावडर झोंक कर डाइवर को धमका कर जंगल में भाग गया है, जाते जाते गिरोह उन सिपाहियों की रायफल भी छुड़ा कर ले गया है,जो उसे धमकाने के लिये तैनात किये गये थे ।

इस घटना के पीछे तमाम तरह की बातें जन मानस मे व्याप्त हैं । कुछ लोग कहते हैं कि मुख्यमंत्री को दिल्ली में कोई काम नहीं था , दरअसल उनके बजाय जानबूझ कर कलेक्टर के सामने आत्मसमर्पण कराना प्रशासन की एक चाल थी, ताकि घोसी गिरोह के खिलाफ लंबित मामले समाप्त न करके बाकायदा अदालत में ट्रायल कियेे जायें । यही हुआ एक मामले में मौत की सजा पा कर हैरान रह गये घोसी गिरोह के सामने दुबारा बीहड़ में कूद जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था । बागियों के इस तरह भागने के पीछे भी लोग किसी बड़े षड़यंत्र का कयास लगा रहे हैे, क्यों कि इतने दुर्धर्ष डाकू को पेशी पर लाने ले जाने के लिये किसी पुलिस वेन के बजाय सामान्य रोडवेज की बस का प्रयोग करना और चार डाकुंओं के लिये केवल तीन सिपाही भेजने की घटना को इस षड़यंत्र का हिस्सा मान कर इलाके के लोग इस घटना की न्यायिक जांच की मांग कर रहे हैंेे।

कृपाराम के दुबारा बीहड़ों में पहुंच जाने के बाद सबसे ज्यादा डर उन गवाहों , पुलिस सिपाहियों और अदालती कर्मचारियों को लगने लगा है जिनके सक्रिय प्रयासों से इस गिरोह को उपयुक्त सजा दिलाई गई थी । हालांकि फिलहाल पुलिस के आला अधिकारियों ने उन सब लोगों को कड़ी सुरक्षा देने का वादा किया है जो इस मामले से किसी भी तरह जुड़े रहे थे ।

मैं ऊंची आवाज में यह समाचार पढ़ रहा था । समाचार पूरा होते होते , हम दोनों स्तब्ध हो उठे । अब तो मेरा भी नीचे का दम नीचे और, ऊपर का ऊपर रह गया था - अब मरे ! बागी सबसे पहले हमे ही ढूढ़ेंगे बाद मे दूसरा काम देखेंगे ।

लल्ला पंडित तो भोंकारा मार के रो ही पड़ा था ।

लेकिन रोने-गाने से क्या होता है !

उस समय तो हम दोनों को ही धीरज की जरूरत थी । सो एक-दूसरे को झूठे सच्चे दिलासा देकर हम दोनों समय काटने लगे । अब हमे एक और जरूरी काम मिल गया कि जब भी मौका मिलता , जिला मुकाम जाकर एसपी और कलेक्टर के सामने जाकर खड़े हो जाते , और अपनी जान की सुरक्षा की गुहार लगाने लगते ।

लेकिन इस तरह की प्रार्थनाये करते और अपना तबादला उस गांव से अन्यत्र किसी जगह कर देने के लिये गिड़गिड़ाते हमे महीनों बीत गये थे ,पर कुछ न हो पाया था ।

हां , ये जरूर हुआ था कि नये जोश के साथ बीहड़ों में लौटे कृपाराम गिरोह ने अपनी हिंसक गतिविधियों में तेजी ला दी थी । मैं और लल्ला पंडित रोज के रोज बैठ जाते और प्रायः कृपाराम गिरोह से जुड़ी खबरों पर बातें किया करते थे, हमे हर दिन यही आशंका होती कि कृपाराम का अगला निशाना कहीं हम दोनों न हों ! लेकिन हम किस्मत वाले थे कि कृपाराम शायद हमे भूल चुका था , या उसने हमे निपटाने का काम दूसरे नम्बर पर रख लिया था । जबकि उसने पहले ही हमले में अपने गांव के पुराने दुश्मन हिककतसिंह का पूरा खानदान खत्म कर दिया था । रावत विरादरी के एक गांवमें छापा मारके उसने एक साथ दस आदमियों का अपहरण कर डाला था फिर उनमें से एक आदमी को इस संदेश के साथ रिहा किया था कि यदि चालीस लाख रूपये मिलेंगे तोही नौ आदमी छोड़े जायेंगे नहीं तो पूरे नौ आदमीयों की लाश संभालने के लिए पुलिस तैयार रहे ।

गांव-गांव में इस आशय की अफवाह फैल रहीं थी कि कृपारम गिरोह पूरे अंचल से नाराज है सो पता नहीं किस गांव में कब हमला कर बैठे । गांव के गांव रात रात भर जागते रहते , और जरा सी आहट पर उनकी हालत खराब हो जाती । जनता इतनी डर रही थी तो पुलिस भला कहां से हिम्मत रख पाती , पुलिस में भी भगदड़ मच गई -जो देखो चम्बल से बाहर तबादला कराके भागा जा रहा था । अखबारों में रोज के रोज घोसी गिरोह की गतिविधियां छप रही थीं । यह जानकर सबको बिस्मय हुआ कि इस बार कृपाराम के मन में कुछ राजनैतिक महत्वाकंाक्षायें भी जनम ले गईं थीं , उसने एक नई मांग रखी थी कि उसकी बहन को उसके गांव से निर्विरोध सरपंच चुनवा दिया जाये तो नौ के नौ अपहृत बिना किसी फिरौती के छोड़े जा सकते है ।

पुलिस चैतन्य हुई , लेकिन गिरोह को पाना इतना सरल नहीं था ,पुलिस डाल-डाल तो वह पात-पात । उसे न जिले की सीमा रोकती थी न प्रदेश की कोई परिधि । उसकी जहां मरजी होती वह वहां चल पड़ता । धीरेधीरे समय बीता तो गिरोह को चटकाने फिर रही पुलिस को यह चिन्ता लग गई कि ऐसा न हो कि गुस्सा हो के कृपारमा निरपराध अपहृतों को मार डाले उसने अपहृतों के परिजनों को चेताया कि वे तो हाथ पर हाथ धरके बैठ गये खुद भी

तो अपने अपादमियों को छुड़ाने के लिए कुछ करें । गांव का बच्चा-बच्चा सक्रिय हुआ और बाद मे पता लगा कि घर-घर से चंदा हुआ तब जाकर पच्चीस लाख रूपया इकट्ठा हुआ ,जिसे चुकाकर अपने आदमियों को किसी तरह गांव में वापस लाया गया ।

अपहृतों के फोटो अखबारों में इसी बयान के साथ छपे कि वे बाकायदा पच्चीस लाख रूपये देकर आये हैं तो जनता भड़क उठी ।

अब मजबूरी हो गई थी कि डाकुओं के खिलाफ कोई न कोई कार्यवाही की जावे, सो इसके लिये सरकार की ओर से पुलिस के एक तालीमयाफ्ता अफसर की तलाष की जाने लगी ।

हेतमसिंह बताता है कि इगलैंड से ख़ास तरह की तालीम लेकर आये पुलिस के एक आई जी को इस अंचल में डाकू समस्या को निपटाने का काम सोंपा गया तो उनने पुलिस विभाग की एक आम सभा आयोजित की थी ,जिसमें दीवान से लेकर डीआईजी तक की रैंक के पुलिसिया लोग सम्मिलित हुए थे । हर आदमी से सुझााव मांगे गये-आप लोग अपनी अपनी अकल से बताओ कि कृपारम गिरोह को कैसे खत्म किया जा सकता है?

हेतम बताता है कि हर आदमी ने अपने अपने सुझााव दिये , लेकिन यह तो दिखावा था, किसी को छोटे कर्मचारियों की बात भला कब मानना थी ! योजना वही अमल में आई जो विदेश से लौटे आईजी ने पहले से बना रखी थी-कृपाराम गिरोह को जड़ से मिटाने के लिए ये बहुत जरूरी है कि उसके किसी साथी को संग लेकर उन सब जगह पर धावा बोल दिया जाये जहां उसके होने की संभावना हो सकती है ।

महीना भर का समय दिया गया कि दरोगा लोग ऐसा कोई आदमी पकड़ के लायेंगे जो पहले कभी डाकू रहा हो ! लेकिन सब असफल रहे ,अगले महीने की बैठक में ऐलान किया गया था कि डाकू नही मिल रहे तो अब उन आदमियों को तलाश करना है जो कभी खुद इसी इलाके में डाकू रहे है और जिनने आत्मसमर्पण कर दिया है या ऐसे लोग जो कृपाराम गिरोह की पकड़ में लम्बे समय तक रहे हों और जिनने उसके छिपने की हर जगह देख रखी हो, कृपाराम के हर मुखबिर से जो कभी न कभी मिल चुके हों ।

हेतम ने फुसफुसाते हुए बताया था कि सबसे ल्यादा लम्बे समय तक यानी कि तीन महीना तक सिर्फ हम लोग कृपाराम गिरोह के साथ रहे थे सो करम के मारे हम ही इस उलझन में बींध गये थे कि पुलिस के संग-संग बीहड़ों की खाक छानते फिरें ।

मुझको लगता है कि काश हम दोनों बागियों का समर्पण देखने न जाते! काश हम लोग बागियों की शिनाख्त न करते । काश , हम अदालत में जाकर भी अपनी शिनाख़्ती से मुकर जाते । कितने सारे काश हैं हमारे सामने ।

लगातार भय ही भय लगता रहता है हमको इन दिनों ।

कई बार तो ये लगता है कि जिस क्षण डाकू सामने आयेंगे, तब इसके पहले कि वे गोली चलायें ,शायद भय के कारण हार्ट अटैक से ही मर जायेंगे मैं और लल्ला पंडित !

एस ए एफ का लेफ्टीनेंट सिन्हा कहता है -‘‘ वे लोग तो किसी न किसी दिन मारे ही जायेंगे ,यानी कि जिस दिन हमारे हाथ लग गये , उसी दिन या फिर किसी दुष्मन के हाथों से मर जायेंगे ,बकरे की मां कब तक खैर मनायेंगी । तुम काहे को हलकान होते हो! निश्चिंत रहो ,अगले दो चार दिन में हम किसी भी क्षण उन सबको मार गिरायेंगे ।‘‘

लल्ला पंडित मन ही मन प्रार्थना करता है कि सिन्हा की बात सच हो ।

मेरे मन में तमाम शंकायें हैं - एरिया के तमाम गांवों के लोगों से गिरोह के संबंधों को लेकर !

हम दोनों यह मानते है कि अब तो हम लोग सिर पर कफन बांध कर घूम रहे हैं, केवल इस खुशफहमी में कि कहीं न कहीं हम बुराई को मिटाने वाली सेना के साथ निकले है -जो भी परिणाम आयेगा देखा जायेगा । हमारे चम्बल में खटिया गोढ़ने से ज्यादा अच्छी मौत आमने-सामने की भिड़ंत में हई मौत को माना जाता है, आल्हखंड में लिखा है-

खटिया पड़िके जो मर जैहो कोई नाम ना लेवनहार ।

रण चढ़के जो मरे सूरमा , होवे जनम-जनम जैकार ।।

लल्ला पंडित इन दिनों गीता का एक श्लोक प्रायः गुनगुनाते रहते हैं, जैसे हम संसारी नर पुराना कपड़ा त्याग कर नया कपड़ा धारण कर लेते है, वैसे ही आत्मा पुराना शरीर त्याग कर नया शरीर धारण करती है-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय

नवानि गृह्णाति नरोपराणि

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-

न्यन्यानि संयाति नवानि देही

(उप) संहार

पुलिस दल में से प्रायः लोग छुटटी लेकर घर जाया करते थे , लेकिन हमको वे लोग जाने क्यों वहां से लौटने नहीं दे रहे थे ।

घर से खबर आई कि अम्मां की तबियत खराब है, सो बड़ी हाथा-जोड़ी करके मुझे सात दिन को घर आने की मुहलत मिली । मै चला तो लल्ला पंडित रूआंसे हो उठे । मैंने रघुवंशी से उन्हे भी मेरे साथ भेजने का निहोरा किया लेकिन वो न माना । मजबूरन मैं अकेला चला आया ।

संग साथ रहने की आदत पड़ गई है सो मुझे लल्ला पंडित के बिना यहां गांव में अच्छा नहीं लग रहा , रह-रह के उनकी याद आ रही थी । गांव में आये दो ही दिन हुए थे कि एक रात सपने में वे गंदे-फटे कपड़ों में रोते-भटकते नजर आये मुझे । सुबह उठा तो दिन भर बुरा-बुरा लगता रहा ।

आज सुबह की बात है , मुझे अखबार में एक सनसनीखेज खबर पढ़ने को मिली, और तब से मैं स्तब्ध हूं। खबर पढ़ते ही मुझे लगा था कि पेट में जाड़ा घुस रहा है , वो जाड़ा बरफ बन कर पेट में जम गया है । मन में तमाम तरह के विचार आ रहे हैं, बहुत सी शंकायें हैं । मूल समाचार इस प्रकार छपा है-

डाकुओं से मुठभेड़: चार मरे एक घायल

मुड़कट्टा का हार चम्बल (रविवार) 14 मार्च

पुलिस कार्यालय से मिली जानकारी मुताबिक गत रात पुलिस के खोजी दल और डाकू कृपाराम घोसी गिरोह की आमने-सामने हुई भिढ़न्त में चार आदमी मारे गये और एक जवान घायल हुआ। पुलिस के बड़े अधिकारी एनकाउंटर वाली जगह के लिए रवाना हो गये हैं । विस्तृत जानकारी उनके लौटने के बाद ही पता चलेगी ।

बताया जाता है कि कृपाराम की खोज में चलाये जा रहे पुलिस के विषेष अभियान ‘ऑपरेषन सर्च‘ की टीम नम्बर सोलह का सामना कल रात एकाएक कृपाराम गिरोह से हो गया । जब तक पुलिस दल सचेत होता ,डाकुओं ने अंधा ुधंध गोली बरसाना शुरू कर दिया । लगभग दो घण्टे तक चली इस गोली बारी में पुलिस का एक जवान शहीद हुआ है, तथा दो डाकू मारे गये हैं । इन तीनों के अलावा एक अज्ञात सिविलियन भी इस गोलीबारी में मारा गया है। यह पता नहीं चला कि यह सिविलियन डाकुओं के साथ था , या पुलिस दल के साथ ! सवाल उठता है कि यह आदमी यदि पुलिसदल के साथ था तो जंगल गश्त के वक्त वहां क्या कर रहा था ? और डाकुओं के साथ था , तो यह उनका साथी था या कोई्र अपहृत, या अभागा सामान्य राहगीर था ,जो दो पाटों के बीच में फंस गया और वहां से भाग नहीं सका । ऐसे तमाम उलझे हुए से सवाल अभी सुलझना बाकी हैं जिनके जवाब आते ही कई बातें दूध की दूध और पानी के पानी की तरह साफ-साफ सामने आयेगी, क्योंकि कहने वाले लोग मृतक व्यक्ति के बारे मं े बहुत कुछ बातें कह रहे है।

अभी तो पुलिस अधिकारियों का केवल इतना कहना है कि जंगल में गश्त कर रही एडी टीम नम्बर सोलह ने अंधेरे में अचानक ही अपने ऊपर गोलीबारी होती देखी तो उन्हे भी आत्मरक्षार्थ गोली चलाना पड़ी । अपने को घिरा देखकर अंधेरे में डाकुओं ने ज्यों ही मौका पाया वे अपने एक साथी की लाश छोड़कर बीहड़ में भाग गये । सुबह होने पर जब पुलिस ने तलाशी ली तो उसे दो पुलिसमैन, एक डाकू और एक अज्ञात सिविलियन की लाश पड़ी हुई मिली । सिविलियन की लाश पाकर पुलिस हैरान है। छोटे स्तर के अधिकारियों ने मृतक नगरिक की पहचान से साफ इन्कार किया है , इस मामले में बड़े अधिकारियों के घटनास्थल से लौटने के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पायेगी।

लल्ला पंडित की घरवाली कल रात ही हमारे घर आई थी और मुझसे पूछ रही थी कि जैसे मैं छुट्टी पर आ गया , लल्ला पंडित कब आयेंगे ?

मैंने उसे पूरा आश्वस्त किया था कि मेरे पहुंचते ही लल्ला वहंा से चल देंगे ।

अखबार पढ़के मैं डर रहा हूं कि यदि वह आज फिर मेरे पास आ कर इस खबर का मतलब पूछने लगी तो मैं उसे क्या बताऊंगा ?

मैं मन ही मन प्रार्थनाऐं कर रहा हूं कि वह हमारे घर न आये ! अखबार में छपी खबर झूठी हो ! मरने वाला लल्ला पंडित न हो , कोई और मुख़बिर हो ! मुख़बिर का क्या है, उसकी तो मौत निश्चित होती है , अगर पोल खुल गई तो सामने वाला पक्ष तुरंत ही निपटा देता है, और डाकू चटकवा दिया , फिर पोल खुली तो डाकू के उत्तराधिकारी । कभी-कभार संयोग ऐसा हो कि रहस्य कभी न खुल पाये तो फिर वो अमर-अजर, लेकिन पुलिस के रिकॉर्ड में सदा मौजूद , जब तक कि कंडा न डल जायें मरघटा में, इलाके में कोई भी वारदात हो मुखबिर सबसे पहले तलब। मुझे यकायक लगा कि मै और लल्ला पंडित क्या है ? मुखबिर ही न ! या कोई दूसरे खबरची ,जिनके लिए अभी चम्बल घाटी में कोई नाम नहीं तलाशा गया । चम्बल घाटी क्या पुलिस शब्दावली में भी शायद हम जैसों के लिए कोई शीर्षक मुकर्रिर नहीं हुआ है अब तक ।

मै लल्ला पंडित की लम्बी उम्र के लिए प्रार्थना कर रहा हूं इन दिनों-हर पल, हर छिन । मेरे होंठों पर लल्ला पंडित का प्रिय श्लोक गूंजता रहता है सदा-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय

नवानि गृहणाति नरोेपराणि

तथा शरीराणि विहाय जीर्णा

न्यन्यानि संयाति नवानि देही